लंका० १ ॥ई०॥श्रीरामचंद्रायनमः॥दोहा॥लवनिमेषपरमानजुगवरषकलपसरचंड॥भजसिनमनतिहि रामकहं कालजासुकोदंड॥श्लोक॥रामं
कामारिसेव्यंभवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं॥योगीन्द्रंज्ञानगम्यंगुणनिधिमजितंनिर्गुणंनिर्विकारं॥मायातीतंसुरेशंखलवधनिरतंब्रह्मवृंदे
कवंदं देकुंदावदातंसरसिजनयनंदेवमुर्विसरूपं॥१॥शंखेंद्वाभमतीवसुंदरतनुंशार्दूलचर्म्माबरंकालव्यालकरालभूषणधरंगंगाससांक
प्रियं॥काशीशंकलिकल्मषौघसमनंकल्याणकल्पद्रुमंनौमीड्यंगिरिजापतिंगुणनिधिंसंकरंमन्मथारिं॥२॥योददातिसंतांशंभुःकैवल्यमपि
दुर्लभं॥खलानांदंडकृद्योसौशंकरःसंतनोतुमे॥सोरठा॥सिंधुवचनसुनिरामसचिवबोलिप्रभुअसकहेउ॥अबविलंबकेहिकामकरहु
सेतुउतरैकटकु॥१॥सोरठा॥सुनहुभानुकुलकेतुजामवंतकरजोरिकह॥नाथनामतवसेतुनरचढिभवसागरतरहि॥३॥चौ॥यहलघुजल
धितरतकतिबारा॥असुनिपुनिकहपवनकुमारा॥प्रभुप्रतापवडवानलभारी॥सोषेउप्रथमपयोनिधिवारी॥तवरिपुनारिरोदनज
लधारा॥भरेउबहोरिभएतेषारा॥सुनिअसउक्तिपवनसुतकेरी॥हरषेरघुपतिकपितनहेरी॥जामवंतबोलेदोउभाई॥नलनील राम १
हिसबककथासुनाई॥रामप्रतापसुमिरिमनमाही॥करहुसेतप्रयासकछुनाही॥बोलिलिएकपिनिकरबहोरी॥सकलसुनहुविनतीए
कमोरी॥रामचरनपंकजउरधरहू॥कौतुकएकभालुकपिकरहू॥धावहुमरकटविकटवरूथा॥आनहुविटपगिरिन्हकेजूथा॥सु
निकपिभालुचलेकरिहूहा॥जैरघुवीरप्रतापसमूहा॥दो॥अतिउतंगकपिसैलगन लीलाहिलेहिउठाइ॥आनिदेहिनलनीलकहं

विरहिसेतुवनाइ ॥४॥ चौ ॥ शैलविसाल आनिकपिदेही ॥ कंदुकइवनलनीलसोलेही ॥ देषिसेतुअतिसुंदररचना ॥ विहसिक्रपानि
धिवोलेवचना ॥ परमरम्यउत्तमयहधरनी ॥ महिमाअमितजाइनहिवरनी ॥ करिहैंइहासंभुअस्थाना ॥ मोरेह्रदयपरमकल्याना ॥ सुर
निकपीशवहुदूतपठाए ॥ मुनिवरसकलवोलिलेइआए ॥ लिंगथापिविधिवतकरिपूजा ॥ शिवसमानप्रियमोहिनदूजा ॥ शिवद्रोहीमम
भक्तकहावा ॥ सोनरसपनेहुमोहिनपावा ॥ शंकरविमुखभक्तिचहमोरी ॥ सोनरकेरिमूढमतिथोरी ॥ दो ॥ शंकरप्रियममद्रोहिशिवद्रो
हिममदास ॥ तेनरकरहिकलपभरिघोरनरकमहवास ॥५॥ चौ ॥ येरामेश्वरदरसनकरही ॥ तेतनुतजिममलोकसिधरिहही ॥ जोगं
गाजलआनिचढाइही ॥ सोसाजुज्यमुक्तिनरपाइही ॥ होइअकामजोछलतजिसेइहि ॥ भक्तिमोरितेहिसंकरदेइहि ॥ ममक्रतसेतुजोदरस
चे ७
सनकरही ॥ सोविनुस्त्रमभवसागरतरही ॥ रामवचनसवकेमनभाए ॥ मुनिवरनिजआश्रमआए ॥ गिरिजारघुवरकैयहरीती ॥
संततकरहिप्रनतपरप्रीति ॥ वाधेउसेतुनीलनलनागर ॥ रामक्रपाजसभएउउजागर ॥ वूडहिआनहिवोरहिजेई ॥ भएउपलवोहीतस
मतेई ॥ महिमायहनजलधिकेवरनी ॥ पाहनगुननकपिन्हकेकरनी ॥ दो ॥ श्रीरघुवीरप्रतापतेसिंधोतरेपाषान ॥ तेमतिमंदजोराम
तजिभजहिजाइप्रभुआन ॥६॥ चौ ॥ वाधिसेतुअतिसुदिढवनावा ॥ देषिक्रपानिधिकेमनभावा ॥ चलीकटकुकछुवरनीनजाई ॥ गर्जे
हिमर्कटभटसमुदाइ ॥ सेतवंधचढिचढिरघुराई ॥ चितवक्रपालसिंधुवहुताई ॥ देषनकहंप्रभुकरुणाकेदा ॥ प्रगटभएसवजलचरवृं

लंका०
२

दा॥ नानामक्रनक्रझषव्याला॥ शतजोजनतनपरमविसाला॥ ऐसेएकतिन्हहिधरिषाही॥ एकन्हकेडरएकउराही॥ प्रभुहिविलोक
हिटरहिनटारे॥ मनहरषेसवभएसुखारे॥ तिन्हकेवोदनदेषियवारी॥ मगनभएहरिरूपनिहारी॥ चलाकटकुकछुवरनिनजा
ई॥ कोकहिसककपिदलविपुलाई॥ दो॥ सेतवंधभइभीरअतिकपिनभपंथउडाहि॥ अपरजलचरन्हउपरचढिचढिपारहिजाइ॥
४॥ चौ॥ असकौतुकविलोकिदोउभाई॥ विहसिचलेकृपालरघुराई॥ सेनसहितउतरेरघुवीरा॥ कहिनजातकपिजूथपभीरा॥ सिंधु
पारप्रभुडेराकीन्हा॥ सकलकपिन्हकहआयसुदीन्हा॥ षाहुजाइफलमूलसोहाए॥ सुनतभालुकपिजहंतहंधाए॥ सवतरुफले
रामहिततलागी॥ रितुअनरितुकालगतित्यागी॥ षाहिंमधुरफलविटपहलावहि॥ लंकासनमुखसिषरचलावहि॥ जहंकहुंफिरत
निसाचरपावहि॥ घेरिसकलवहुनाचनचाहि॥ दसननकाटिनासिकाकाना॥ कहिप्रभुसुजसदेहितवजाना॥ जिन्हकरनासा
काननिपाता॥ तिन्हरावनहिकहासववाता॥ सुनतश्रवनवारीधवधाना॥ दसमुखवोलिउठाअकुलाना॥ दो॥ वाधेवननिधिनी राम
रनिधिजलधिसिंधुवारीस॥ सत्यतोयनिधिअंवुनिधिउदधिपयोधिनदीस॥ ८॥ चौ॥ व्याकुलतानिजसमुझिवहोरी॥ विहसि २
चलागृहकरिभयघोरी॥ मदोदरीसुनाप्रभुआयो॥ कौतुकहींपाथोधिवधायो॥ करगहिपतिहिभवननिजआनी॥ वोलीपरममनो
हरवानी॥ चरननाइसिरअंचलरोपा॥ सुनहुवचनपियपरिहरिकोपा॥ नाथवयरकीजेनहितासो॥ वुधिवलजीतिसकियनहि

जासो॥ तुम्हैरघुपतिहिकं ग्रतरूकैसा॥ षलषदोतदीनकरजैसा॥ ग्रतिवलमधकैटभजिनमारे॥ महावीरदितिसुतसंघारे॥ जेइवलि
वाधिसहसभुजमारा॥ सोग्रवतरेउहरणमहिभारा॥ तासुविरोधनकिजियनाथा॥ कालकर्मगतिजाकेहाथा॥ दो॥ रामहिंसौपक्कुजान
कीनाइकमलपदमाथ॥ सुतकहिराजसमर्पिवनजाइभजियरघुनाथ॥ ९॥ चौ॥ नाथदीनदयालरघुराई॥ वाघोसनमुखगाइनषा
ई॥ चाहियकरणसोसवकरिवीते॥ तुमसुरग्रसुरचराचरजीते॥ संतकहहिग्रसिनेतिदसानन॥ चौथेपनजाहिन्टपकानन॥ तासुभजन
हो किजियेभरता॥ जोकरतापालकसंहरता॥ सोइरघुवीरप्रणतग्रनुरागी॥ भजक्कुनाथममतासवत्यागी॥ मुनिवरजतनकरहि जेहिला
गी॥ भूपराजतजिहोहिविरागी॥ सोइकोसलाधीसरघुराया॥ ग्राएकरनतुमहीपरदाया॥ जौपियमानक्कुंमोरसिषावन॥ होइसुजस
तिहुंपुरग्रतिपावन॥ दो॥ ग्रसकहिलोचनवारिभरिगहिपदकंपितगात्र॥ नाथभजक्कुरघुनाथपदममग्रहिवातनजात॥ १०॥ चौ॥ तवराव
णमैसुताउठाइ॥ कहैलागषलनिजप्रभुताइ॥ सुनुतैप्रियाम्रषाभयमाना॥ जगजोधाकोमोहिसमाना॥ वरुणकुवेरपवनजमका
ला॥ भुजवलजीतेसकलदगपाला॥ देवदनुजनरसववसमोरे॥ कवनिहेतुउपजाभयतोरे॥ नानाविधितेहिकहेसिवुझाइ॥ स
भावहोरिवैठसोजाइ॥ मदोदरीहृदयग्रसजाना॥ कालविवसउपजाग्रभिमाना॥ सभाग्राइमंत्रीनसनवूझी॥ करवकवनविधि
रिपुसनजूझी॥ कहहिसचिवसुनुनिसिचरनाहा॥ वारवारप्रभुपछ्छक्कुकाहा॥ कहक्कुकवनभयकरियविचारा॥ नरकपिभालु

लं०का० ३

अहाररहमारा॥दो॥वचनसवनिकेश्रवनसुनिकहप्रशस्तकरजोरि॥नेतिविरोधनकरियप्रभुमंत्रनमतिअतिघोरि॥११॥चौ॥
कहहिसचिवसवठकुरसोहाती॥नायनपुरआवैएहिभाती॥वारिधनाधिएककपिआवा॥तासुचरितमनमहसवगावा॥छुधानरहीतु
म्हैतवकाह्न॥जारतनगरकसनधरिषाह्न॥सुनतनीकआगेदुखपावा॥सचिवन्हअसमतप्रभुहिसुनावा॥जिन्हवारीसवधाएउहेला॥उ
तरेसेनसमेतसुवेला॥सोभामनुजषावहमभाई॥वचनकहहिसवगालफुलाई॥सुनुममवचनतातअतिआदर॥जनिमनगुनहुमोहि
करिकादर॥एयवानीजेकहहिजेसुनही॥ऐसेनरानिकाजजगअहही॥प्रथमवसीठपठवसुनुनीती॥सीतहिदेइकरहुपुनिप्रीती॥दो॥
नारिपाइफिरिजांहिंजौतेनवढाइयरारि॥नाहितसनमुखसमरमहंतातकरियहठिमारि॥१२॥चौ॥यहमतजौपिनुमानहुमोरा॥उभ
यप्रकारसुजसप्रभुतोरा॥सुतसनकहदशकंठरिसाई॥असमतसठतोहिकेइसिषाई॥अवहीतेउरसंसयहोई॥वेनुमूलसुतभएसिघ
मोई॥सुनिपितुगिरापुरुषअतिघोरा॥चलाभवनकहिवचनकठोरा॥हितमततोहिनलागतकैसे॥कालविवसकहभेषजजैसे॥संध्या
समयजानिदशसीसा॥भवनचलेउनिरषतभुजवीसा॥लंकासिषरउपरआगारा॥अतिविचित्रतहहोतअषारा॥वैठजाईतेहिमं
दिररावन॥लागेकिन्नरगंध्रपगावन॥वाजहितालपषाउजवीना॥न्रत्यकरहिअपछराप्रवीना॥दो॥सुनासीरसतसरिससमसंततकरे
विलास॥परमप्रवलरिपुसीसपरतदपिनमनकछुत्रास॥१३॥चौ॥इहासुवेलसयलरघुवीरा॥उतरेसेनसहितअतिभीरा॥सैलस्रंग

राम ३

एकसुंदरदेषी॥ अतिउतंगसमसुभ्रविशेषी॥ तहंतरुकिसलयसुमनसुहाए॥ लछिमनलैनिजहाथडसाए॥ तेहिपररुचिरमृदुलमृगछाला॥ ते
हिआसनआसीनकृपाला॥ प्रभुकृतसीसकपीसउछंगा॥ वामदहिनदिसिचापनिषंगा॥ दुहुकरकमलसुधारतवाना॥ कहलंकेसमंत्रलगि
काना॥ वडेभाग्यअंगदहनुमाना॥ चरनकमलचापतविधिनाना॥ प्रभुपाछेलछिमनवीरासन॥ कटिनिषंगकरवानसरासन॥ दो॥ एहीं
विधिकरुणसीलगुणधामरामआसीन॥ तेनरधन्यजेधन्यएहिरहतसदालैलीन॥ दो॥ पूरवदिसाविलोकिप्रभुदेषाउदितमयंक॥ कहतस
वहिदेषहुससिहिमृगपतिसरिसअसंक॥ २५॥ चौ॥ पूरवदिसागिरिगुहानिवासी॥ परमप्रतापतेजवलरासी॥ मत्तनागतमकुंभविदारी॥ स
सीकेसरीगगनवनचारी॥ विथुरेनभमुकुताहलतारा॥ निसिसुंदरइवकेरसिंगारा॥ कहप्रभुससिमहंमेचकताइ॥ कहहुकहानिजनिजमति
भाई॥ कहसुग्रीवसुनहुरघुराइ॥ ससिमहंप्रगटभुम्यकेझांई॥ मारेहुराहुससिकहंकहकोई॥ उरमहपरेउस्यामतासोई॥ कोउकहजव
विधिरतिमुखकीन्हा॥ सारभागससिकरहरलीन्हा॥ छिद्रसोप्रगटइंदुउरमाही॥ तेहिमगदेषियनभपरिछांही॥ कोउकहगरलवं
धससिकेरा॥ अतिप्रियतमउरदीन्हवसेरा॥ विषसंयुतकरनिकरपसारी॥ जारतविरहवंतनरनारी॥ दो॥ कहमारुतसुतसुनहुप्रभुससीतु
म्हारएयदास॥ तवमूरतिविधउरवसतसोईस्यामताभास॥ दो॥ पवनतनैकेवचनसुनिविहसेरामसुजान॥ दछिनदिशाविलोकिपुनिवोलेकृ
पानिधान॥ २७॥ चौ॥ देषुविभीषणदछिनआसा॥ घनघमंडदामिनीविलासा॥ मधुरमधुरगजैघनघोरा॥ होइविष्टिजनुउपलकठोरा॥ कहे

लंका
५

बिभीषणसुनहुकृपाला॥ होइनतड़ितनबारिदमाला॥ लंकासिषरउपरआगारा॥ तहदशकंधरकेरअषारा॥ छत्रमेघडंबर
सिरधारी॥ सोइजनुजलदघटाअतिकारी॥ मंदोदरीश्रवनताटंका॥ सोइप्रभुजनुदामिनीदमंका॥ बाजहितालमृदंगअनूपा॥ सोइरव
सरिससुनहुसुरभूपा॥ प्रभुमुसुकानसमुझिअभिमाना॥ चापचढ़ाइबानसंधाना॥ दो॥ छत्रमुकुटताटंकतबहतेएकहीबान॥ देषतस
बकेपरेमहिमरमनकोउजान॥१८॥ दो॥ असकौतुककरिरामसरप्रविसेउआइनिषंग॥ रावनसभाससंकसबदेषिमहारसभंग॥१९॥ चौ
कंपनभूमिनमरुतबिसेषा॥ अस्त्रशस्त्रकछुनैननदेषा॥ सोचहिसबनिजहृदयबिचारी॥ असगुणभएउभयंकरभारी॥ दशमुषदेषि
सभाभयपाई॥ बिहसिबचनकहजुक्तिबनाई॥ सिरौगिरेसंततसुभजाही॥ मुकुटगिरेकसअसगुणताही॥ सैनकरहुनिजनिजगृहजाई॥
गवनेभवनसकलसिरनाई॥ मंदोदरीसोचउरबसेऊ॥ जबश्रवनपरमहिषसेऊ॥ सजलनयनकहजुगकरजोरी॥ सुनहुप्राणपतिबिनती
मोरी॥ कंतरामबिरोधपरिहरहू॥ जानिमनुजजनिमनहठधरहू॥ दो॥ बिस्वरूपरघुबंशमणिकरहुबचनबिस्वासु॥ लोककल्पनाबेद
करअंगअंगप्रतिजासु॥२०॥ चौ॥ पदपातालसीसअजधामा॥ अपरलोकअंगअंगबिश्रामा॥ भृकुटिबिलासभयंकरकाला॥ नैनदिवा वि
करकचघनमाला॥ जासुघ्रानअस्विनीकुमारा॥ निसिअरुदिवसनिमेषअपारा॥ श्रवनदिसादससबेदवषानी॥ मारुतस्वा राम
सनिगमनिजबानी॥ अधरलोभयमदसनकराला॥ मायाहासबाहुदिगपाला॥ आननअनलअंबुपतिजिह्वा॥ उतपति ५

पालनघलैसमीहा ॥ रोमराजीवअष्टदशभाला ॥ अस्तिसयलसरितानसजाला ॥ उदरउदधिअगाधजोजाना ॥ जगमायाकाव
ऊकल्याना ॥ दो ॥ अहंकारशिववुधअजमनससिचीत्तमहान ॥ मनुजवासचरअचरमयरूपरासिभगवान ॥ १९ ॥ दो ॥ असविचा
रिसुनुप्रानपतिप्रभुसोवैरविहाय ॥ प्रतिकरहुरहुरघुवीरपदममअहिवातनजाइ ॥ २० ॥ चौ ॥ विहसानारिवचनसुनिकाना ॥ अहो
मोहमहिमावलवाना ॥ नारिसुभावसत्यकविकहही ॥ अैगुनआठसदाउररहही ॥ साहसअनितचपलतामाया ॥ भैअविवेकअसौच
कदाया ॥ रिपुकररूपसकलतैंगावा ॥ अतिविसालभैमोहिसुनावा ॥ सोसवएयासकलवसिमोरे ॥ समुझीपराप्रसादअवतोरे ॥ जानैउ
एयातोरिचतुराई ॥ एहिमिसुकहेसुमोरिप्रभुताई ॥ तववतकहीगूढमगलोचनि ॥ समुझतसुखदसुननभवमोचनि ॥ मदोदरिमनमहंअ
सठएऊं ॥ पियहिकालवसमतिभ्रमभएऊ ॥ दो ॥ वहुविधिजलपेसिसकलनिसिप्रातभएदशकंध ॥ सहजअसंकसुलंकपतिसभांगए
मदअंध ॥ २१ ॥ सो ॥ फूलैफलहिनवेतयद्यपिसुधावरषैजलद ॥ मूरषहृदयनचेतजोगुरमिलहिविरंचिशत ॥ २१ ॥ चौ ॥ इहाप्रातजागेरघु
राई ॥ पूछेमंत्रसवसचिववोलाई ॥ कहहुवेगिकाकरियउपाई ॥ जामवंतकहपदसिरनाई ॥ सुनुसरवग्यसकलगुणरासी ॥ सत्यसिंधप्र
भुसवउरवासी ॥ मंत्रकहौनिजमतिअनुसारा ॥ दूतपठाइयवालिकुमारा ॥ नीकमंत्रसवकेमनमाना ॥ अंगदसनकहकृपानिधाना ॥
वालितनैवलवुधिगुणधामा ॥ लंकाजाहुतातममकामा ॥ वहुतवुझाइतुह्लैकाकहऊं ॥ परमचतुरमैजाननअहऊं ॥ काजहमारतासुहि

लेका०
५

तहोई॥ रिपुमनकहेकुवतकहीसोई॥सो॥ प्रभुअग्याधरिसीसचरनवंदिअंगदउठेउ॥ सोइगुणसागरईसनाथकृपाजापरकर
हु॥सो॥ होइसिद्धसवकाजनाथमोहिआदरदएउ॥ असविचारजुवराजतनपुलकितहरषितहिए॥१७॥चौ॥ वंदिचरनउरधरिप्रभु
ताई॥ अंगदचलेउसवहिसिरुनाई॥ प्रभुप्रतापउरसहजअसंका॥ रणवाकुरावालिसुतवंका॥ पुरपैठतरावणकरवेटा॥ षेलतरहासो
भइगइभेटा॥ वातहीवातकरषवढिआई॥ जुगलअतुलवलपुनितरुनाई॥ तेइअंगदकहलातउठाई॥ गहिपदपटकेउभूमिभवाई
निसिचरनिकरदेषिभटभारी॥ जहंतहंचलेनसकहिपुकारी॥ एकएकसननमर्मनकहही॥ समुझितासुवलचुपकरिरहही॥ भएउको
लाहलनगरमंझारी॥ आवाकपिलंकाजेइजारी॥ अवधोकाहकरिहिकरतारा॥ अतिसभीतसवकरहिपुकारा॥ विनुपूछेमगदे
हिदिषाई॥ जेहिविलोकिसोजाइसुषाई॥दो॥ गएउसभादरवारतवसुमिरिरामपदकंज॥ सिंहठवनिइतउतचितैवीरधीरवलपुंज॥
चौ॥ तुरतनिशाचरएकपठावा॥ समाचाररावनहिसुनावा॥ सुनतविहसिवोलादशसीसा॥ आनहुवोलिकहाकरकीसा॥ आयसु राम
पाइदूतवहुधाए॥ कपिकुंजरहिवोलिलैआए॥ अंगददेषुदशाननवैसा॥ सहितप्राणकज्जलगिरिजैसा॥ भुजाविटपसिरश्रृंगसमाना॥ ५
रोमावलीलतालनाजनुजाना॥ मुखनासिकानयनअरुकाना॥ गिरिकंदराषोहअनुमाना॥ गएउसभामहनेकुनमूरा॥ वालितनैअ
तिवलवाकूरा॥ उठेसभासदकपिकहुंदेषी॥ रावणउरभाक्रोधविशेषी॥दो॥ यथामत्तगजजूथमहपंचाननचलिजाइ॥ रामप्रतापसंभा

रिउरवैदु सभासिरु नाइ॥२६॥चौ॥कहदशकंधकवनतैवंदर॥मैरघुवीरदूतदशकंधर॥ममजनकहिगोहिरहिमीताइ॥तवहितका
रनआयेभाइ॥उतमकुलपुलस्तिकरनाती॥शिवविरंचिपूजेहुवहुभाती॥वरपाएहुकिन्हेउसवकाजा॥जीतेहुलोकपालसुर
राजा॥नृपअभिमानमोहवसकिंवा॥हरिआनेहुसीताजगदंवा॥अवसुभवचनकहासुनुमोरा॥सवअपराधछमिहिप्रभुतोरा॥दशनगा
हहुतृनकंठकुठारी॥परिजनसहितसंगनिजनारी॥सादरजनकसुताकरिआगे॥एहिविधिचलहुसकलभयत्यागे॥दो॥प्रणतपालरघुवं
शमणिञाहिञाहिअवमोहि॥सुनतेहिआरतवचनप्रभुअभैकरेंहिगेतोहि॥२७॥चौ॥रेकपिपोतकवोलुसंभारी॥मूढनजानसिमोरिसुरारी
कहुनिजनामजनककरभाई॥केहिनातेमानियेमिताइ॥अंगदनामवालिकरवेटा॥तासोकवहिभइहैभेटा॥अंगदवचनसुनतसकुचा
ना॥रहावालिवांदरमैजाना॥अंगदताहिवैंलिकरवालक॥उपजेहुवंशअनलकुलघालक॥गर्भनगएउव्यथातुमजाए॥निजमुरव
तपसादूतकहाए॥अवकहुकुशलवालिकहंअहई॥विहासिवचनतवअंगदकहई॥दिनदशगएवालिपहंजाइ॥वूझेहुकुशलसरवा
उरलाई॥रामविरोधकुशलजसहोई॥सोसवतोहिसुनाइहिसोइ॥सुनुसठभेदहोइमनताके॥श्रीरघुवीरहृदयनहिजाके॥दो॥ह
मकुलघालकसत्यतुम॥कुलपालकदशसीस॥अंधोवधिरनअसेकहैनैनश्रवनतवबीस॥२८॥चौ॥शिवविरंचिसुरमुनिसमुदाई
चाहतजासुचरणसेवकाई॥तासुदूतहोयहमकुलवोरा॥अैसिउमतिउरविहरुननोरा॥सुनिकठोरवाणीकपिकेरी॥कहतदशानन

लंका० नैनतरेरी॥ रवलनवकठिनवचनमैसहेउ॥ नेतिधर्मसवजाननअहेउँ॥ कहकपिधर्मसीलतातोरी॥ हमहुंसुनाकृतपरत्रयचो
६ री॥ देषेउनैनदूतरषवारी॥ वूडिनमरेहुधर्मव्रतधारी॥ काननाकविनुभगिनिनिहारी॥ छमाकीन्हतुम्हधर्मविचारी॥ धर्मशीलतातव
जगजागी॥ पावादरसहमहुवडभागी॥ दो॥ जनिजल्पसिजडजंतुकपिसठविलोकुममवाहु॥ लोकपालवलविपुलससिग्रसनहे
तुजनुराहु॥२९॥ चौ॥ दो॥ पुनिनभसरममकरनिकरकरिकमलनपरवास॥ सोभितभएउमरालइवसंभुसहितकैलास॥३०॥ चौ॥
तुमरेकटकमोहसुनुअंगद॥ मोसनभिरिहिकवनजोधावद॥ तवप्रभुनारिविरहवलहीना॥ अनुजतासुदुषदुषितमलीना॥ तुमसु
ग्रीवकुलद्रुमदोउ॥ वंधहमारभीरुअतिसोउ॥ जामवंतमंत्रीअतिवूढा॥ सोकिहोईअवसमरअरूढा॥ सिलाकर्मजानहिनल
नीला॥ हैकपिएकमहावलसीला॥ आवाप्रथमनगरजेइजारा॥ सुनिहसिवोलेवालकुमारा॥ सत्यवचनकहुनिसिचरनाहा॥
साचेहुकीसकीन्हपुरदाहा॥ रावननगरअलपकपिदहइ॥ कोअसमूढकहैकोसुनइ॥ जोअतिसुभटसराहेहुरावण॥ सोसुग्रीव राम
केरलघुधावनु॥ चलैवहुतसोवीरनहोई॥ पठवाषवरिलेनकहसोई॥ दो॥ अवजानेउपुरदहेउकपिविनुप्रभुआयसुपाइ॥ गएउ ६
नाफिरिनिजनाथपहतेहिभयरहालुकाइ॥ दो॥ सत्यकहेसिदशकंधतैमोहिसुननकछुकोह॥ कोउनहमरेकटकअसतोसनल
रतजेसोह॥ दो॥ प्रीतिविरोधसमानसनकरियनेतिअसआहि॥ जोम्रगपतिवधमेडुकहभलनकहैकोउताहि॥ दो॥ यद्यपिल

घुतारामकहंतोहिवधेवडदोष॥तदपिकठिनदशकंठसुनुछत्रीजातिकररोष॥वक्रउक्तिधनुवचनसरहृदयदहेउरिपुकीस॥प्रतिउत्तरसंडसी
मनहुकाढतभटदससीस॥हसिवोलेदशमौलितवकपिकरवडगुनएक॥जोप्रतिपालैतासुहितकरैउपायअनेक॥२१॥चौ॥धन्यकीसजोनि
जप्रभुकाजा॥जहंजहंनाचहिपरिहरिलाजा॥नाचिकूदिकरिलोगरिझाइ॥पतिहितकरैधर्मनिपुनाई॥अंगदस्वामिभक्ततवजाती॥प्रभुगुनक
सनकहसिएहिभांती॥मैगुनगाहकपरमसुजाना॥तवकटुवचनकरोनहिकाना॥कहकपितवगुनगाहकताई॥सत्यपवनसुतमोहिसु
नाइ॥वनविध्वंसिसुतवधिपुरजारा॥तदपिनतेहिकछुकृतअपकारा॥सोइविचारितवप्रकृतिसोहाई॥दशकंधरमैकीन्हिढिठाई॥दे
षेउआइजोकछुकपिभाषा॥तुम्हरेलाजनरोषनमाषा॥जोअसिमतिपितुषाएहुकीसा॥कहिअसवचनहसादशसीसा॥पितहिषाइषा
तेउपुनितोही॥अवहीसमुझिपराकछुमोही॥वालिविमलजसभाजनजानी॥हतौनतोहिअधमअभिमानी॥सुनुरावणरावणजगकेते॥
मैनिजश्रवणसुनासुनुतेते॥वलिहिजितनएकगएउपताला॥राषेउवाधिसिसुन्हहैसाला॥षेलहिवालकमारहिजाइ॥दयालागि
वलिदीन्हछुडाइ॥एकवहोरिसहसभुजदेषा॥धाइधराजिमिजंतुविशेषा॥कौतुकलागिभवनलैआवा॥सोपुलस्तिमुनिजाइछुडावा॥दो
एककहतमोहिसकुचअतिरहावालिकेकोष॥तिन्हमेहरावनकोनतैसत्यकहहितजिमाष॥२२॥चौ॥सुनुसठसोइरावणवलसीला॥
हरगिरिजानजासुभुजलीला॥जानुउमापतिजासुसुराई॥पूजेउंजेहिसिरसुमनचढाई॥सिरसरोजनिजकरन्हउतारी॥अमितवारए

जेउत्रिपुरारी॥भुजविक्रमजानहिदृगपाला॥सवअजङ्गंजिन्हकेउरमाला॥जानहिदिग्गजउरकठिनाई॥जवजवभिरेउंजाइ
वरिआई॥जिन्हकेदसनकरालन्हफूटे॥उरलागतमूलकइवहूटे॥जासुचलतडोलतइमिधरनी॥चढतमत्तगजजिमिलघुतरनी॥सोइरा
वणजगविदितप्रतापी॥सुनेहिनस्रवणअलीकप्रलापी॥दो॥तेहिरावणकहंलघुकहसिनरकरकरासिवषान॥रेकपिवनचरषर्वं
षलअवजानातवज्ञान॥२३॥चौ॥सुनिअंगदसकोपिकहवाणी॥वोलुसंभारिअधमअभिमानी॥सहसवाहुभुजगहनअपारा॥दहनअ
नलसमजासुकुठारा॥जासुपरससागरषरधारा॥हूडेनृपअगनितवहुवारा॥तासुगर्वजेहिदेषतभागा॥सोनरहोदशसीसअभागा॥राममनु
जकससरेसठअंगा॥धन्वीकामनदीपुनिगंगा॥पसुसुरधेनुकल्पतरुरूषा॥अन्नदानअरुरसापियूषा॥वैनतेयषगअहिसहसानन॥चिंताम
निपुनिउपलदशानन॥सुनुमतिमंदलोकवैकुंठा॥लाभकिरघुपतिभक्तिअकुंठा॥दो॥सेनसहिततवमानमथिवनउजारिपुरजारि
कसरेसठहनुमानकपिगयोजोतवसुतमारि॥२४॥चौ॥सुनुरावनपरिहरिकुटिलाई॥भजसिनकृपासिंधुरघुराई॥जौषलभएसि
रामकरद्रोही॥ब्रह्मरुद्रसकराषिनतोही॥मूढमिथ्याजनिमारासिगाला॥रामवयरहोइहिअसहाला॥तवसिरनिकरकपिनके
आगे॥परिहहिधरणीरामसरलागे॥तिनवसिरकंदुकइवनाना॥षेलिहहिभालुकीसचौगाना॥जवहिसमरकोपिहिरघुनायक॥छू
टिहहिअतिकरालवहुसायक॥तवकिचलिहिअसगालतुमारा॥असविचारिभजुरामउदारा॥सुनतवचनरावनपरजरा॥जरतम

हानलजनुघ्रितपरा॥दो॥कुंभकरनअसवंधममसुतप्रसिद्धशक्रारि॥मोरप्राक्रमनहिसुनेजितेउंचराचरझारि॥२५॥चौ॥सठसा
रवामृगजोरिसहाई॥वाधासिंधुइहैप्रभुताई॥नाघहिषगअनेकवारीसा॥सूरनहोहितेसुनुसठकीसा॥ममभुजवलसागरजलपूरा॥जेहिबूडे
अगनितवहुसूरा॥वीसपयोधिअगाधिअपारा॥कोअसवीरजोपावैपारा॥दिगपालनमैंनीरभरावा॥भूपसुजसरवलमोहिसुनावा॥जो
पैसमरसुभटतवनाना॥पुनिपुनिकहसिजासुगुणगाथा॥तववसीठपठवाकेहिकाजा॥रिपुसनप्रीतिकरतनहिलाजा॥हरगिरिम
थनिनिरषुममवाहू॥पुनिपुनिसठनिजप्रभुहिसराहू॥दो॥सूरकवनरावनसरिसस्वकरकाटिनिजसीस॥हुनेउअनलमहवा
रवहुहरषितसाधिगिरी॥२६॥चौ॥जरतविलोकेउंजवहिकपाला॥विधिकेलिषाअंकनिजभाला॥नरकेकरआपनवधवाची॥
हसेउंजानिविधिगिराअसाची॥सोमनसमुझित्रासनहिमोरे॥लिषाविरंचिजरठमतिभोरे॥आनवीरवलसठममआगे॥पुनि
पुनिकहसिलाजभैत्यागे॥कहअंगदसलज्जजगमाही॥रावणतोहिसमानकोउनाही॥लाजवंततवसहजसुभाउ॥निजमुखनि
जगुणकहैनकाउ॥सिरअरुसैलकथाचितरही॥तातेवारवीसतैकही॥सोभुजवलराषेउरघाली॥जीतेहुसहसवाहुवलिसाली
सुनुमतिमंददेहअभिपूरा॥काटेसिसाकिहोइयसूरा॥वाजीगरकहंकहिअनुसूरा॥काटेनिजकरसकलसरीरा॥दो॥जरहिपतंगवि
मोहवसभारवहहिखरवृंद॥तेनहिसूरसराहियैसमुझिदेषुमतिमंद॥२७॥चौ॥अवजनिवतवढावरवलकरसी॥सुनुममवचनमानप

लंका०
८

रिहरसी ॥ दशमुखमैनवसीठ आएउँ ॥ असविचाररघुवीरपठाएउँ ॥ वारवारइमिकहैकृपाला ॥ नहिगजारिजसवधेश्रीकाला ॥
मनमहसमुझिवचनप्रभुकेरी ॥ सहेउँकठोरवचनसठतेरी ॥ नाहितकरिमुखभंजनतोरा ॥ लेइजातेउँसीतहिवरजोरा ॥ जानेउँतव
वलअधमसुरारी ॥ सूनेहरिआनेपरनारी ॥ तैंनिसिचरपतिगर्ववहूता ॥ मैंरघुपतिसेवककरदूता ॥ जौंनरामअपमानहिडरउँ ॥ तोहि
देषतअसकौतुककरउँ ॥ दो० ॥ तोहिपटकिमहिसेनहतिचौपटकरितवगाव ॥ मदोदरीसमेतसठजनकसुतालेजाव ॥ ३८ ॥ दो० ॥ जौंअ
सकरौतदपिनवडाई ॥ मुएँवधेकछुनहिमनुसाई ॥ अकौलकामवसकृपिनिविमूढा ॥ अतिदरिद्रअजसीअतिवृढा ॥ सदारोगवसि(
संततक्रोधी ॥ विस्नविमुखश्रुतिसंतविरोधी ॥ तनपोषकनिंदकअघखानी ॥ जियतमृतकसमचौदहप्रानी ॥ असविचारिखलव(
धौंनतोही ॥ अवजिनिरिसिउपजावसिमोही ॥ सुनिसकोपकहनिसिचरनाथा ॥ अधरदसनदशमीजतहाथा ॥ रेकपिपोतमरन
अवचहसी ॥ छोटेवदनवातवडिकहसी ॥ कटुजलपसिजडकपिवलजाके ॥ वुधिवलतेजप्रतापनताके ॥ दो० ॥ अगुनअमानविचा
रितेहिदीन्हपितावनवास ॥ सोदुखअरुजुवतीविरहपुनिनिसिदिनममत्रास ॥ ३९ ॥ चौ० ॥ दो० ॥ जिन्हकेवलकेगर्वतोहिअै(
सेमनुजअनेक ॥ षांहिनिसाचरदेवसनिसिमूढसमुझुतजिटेक ॥ ४० ॥ चौ० ॥ जवतेंकीन्हरामकेनिंदा ॥ क्रोधवंतअतिभएउ
कपिंदा ॥ हरिहरनिंदासुनैजोकाना ॥ होइपापगोघातसमाना ॥ कटकटाइकपिकुंजरभारी ॥ दोउभुजदंडतमकिमहिमारी ॥ डो

राम
८

लतधरणीसभासदषसेउ॥चलेभाजिभैमारुतग्रसेउ॥गिरतदशाननउठेउसभारी॥भूतलपरेउमकुटषटचारी॥कछुवहुकर
निजकरनसभारे॥कछुअंगदप्रभुपासपवारे॥आवतमकुटदेषिकपिभागे॥दीनहीलूकपरनविधिलागे॥किरावनकीरकोपचला
ए॥कुलिसचारिआवतअतिधाए॥प्रभुकहहासिजनिहृदयडेराहू॥लूकनअसनिनकेतुनराहू॥यहकिरीटदशकंधरकेरे॥आवत
वालिततनैकेप्रेरे॥दो॥कूदिगहेकरपवनसुतआनिधरेप्रभुपास॥कौतुकदेषहिभालुकपिदिनकरसरिसप्रकास॥४१॥चौ॥इहाकह
तदशकंधरिसाई॥धरिमारहुकपिभागिनजाई॥एहिविधिवेगिसुभटसवधावहु॥षाहुभालुकपिजहंतहपावहु॥महिअकीसकरि
फेरिदोहाई॥जियतधरहुतपसादोउभाई॥सुनिसकोपिवोलेजुवराजा॥गालवजावततोहिनलाजा॥मरुगगरकाटिनिलजकुल
घाती॥वलिविलोकिविहरैनहिछाती॥रेतृयचोरकुमारगगामी॥षलमलरासिमंदमतिकामी॥सन्यपातजलपसिदुर्वादा॥भएसि
कालवसषलमनुजादा॥पाकेफलपावहुगेआगे॥वानरभालुचपेटनलागे॥राममनुजवोलसिअसवानी॥गिरहिनतवर
सनाअभिमानी॥गिरिहहिरसनासंसैनाही॥सीरनसमेतसमरमहिमाही॥सो॥सोनरहोदशकंधवालिवधेजेएकरस॥वी
सहुलोचनअंधध्रुगतवजन्मकुजातिजउ॥४२॥सो॥तवश्रोणितकीप्यासत्रिषितरामसायकनिकर॥तजौतोहितेहित्रास
कटुजलपसिनिसिचरअधम॥४३॥चौ॥मैतवदसननतोरवेलायक॥आयसुमोहिनदीन्हरघुनायक॥असरिसिहो

लंका ९

तदसौमुरवतेोरौ ॥ लंकागहिसमुद्रमहवोरौ ॥ गूलरिफलसमानतवलंका ॥ वसङुमध्यतुमजंतुअसंका ॥ मैवानरफलषातनवा
रा ॥ आयसुदीन्हनरामउदारा ॥ जुगुतिसुनतरावणमुसुकाइ ॥ मूढसिषेकहंवङुतझुठाइ ॥ वालिनकवङुंगालअसमारा ॥ मिलि
तपसिनतैभएसिलवारा ॥ सांचेङुमेलवारदशसीसा ॥ जौंनउपारौतवभुजवीसा ॥ हतोनषेतषेलाइषेलाई ॥ तौअवहीकाकरौव
डाई ॥ रामप्रतापसुमिरिकपिकोपा ॥ सभामध्यपनकरिपदरोपा ॥ जौममचरनसकसिसठटारी ॥ फिरहिरामसीतामैहारी ॥ सु
नङुंसुभटसवकहदससीसा ॥ पदगहिधरनिपछारङुकीसा ॥ इंद्रजीतआदिकवलवाना ॥ हरषिउठेजहंतहंभटनाना ॥ झपटहिकरि
वलविपुलउपाई ॥ पदनटरैवैठहिसिरनाई ॥ पुनिउठिझपटहिसुरआराती ॥ टरैनकीसचरनएहिभांती ॥ पुरुषकुजोगीसुजुउरुगारी ॥ मो
हिविटपनहिसकैउपारी ॥ दो ॥ भूमिनछाडतकपिचरनदेषतरिपुमदभाग ॥ कोटिविघ्नतेसंतकरमनजिमिनेतित्याग ॥ ५३ ॥ चौ ॥ कपि
वलदेषिसकलहियहारे । उठाआपुजुवराजप्रचारे । गहतचरनकहवालिकुमारा ॥ ममपदगहेनतोरउवारा ॥ गहसिनरामचरनसठ राम ९
जाइ ॥ सुनतफिरामनअतिसकुचाई ॥ भएउतेजहतश्रीसवगई ॥ मध्यदिवसजिमिशशिसोभई ॥ सिंहासनवैठासिरनाई ॥ मान
ङुंसंपतिसकलगवाई ॥ जगदात्माप्राणपतिरामा ॥ तासुविमुखकिमिलङुविश्रामा ॥ उमारामकीभृकुटिविलासा ॥ होइविश्वपुनि
पावैनासा ॥ तृणतेकुलिसकुलिसतृणकरइ ॥ तासुदूतपदपनकिमिटरई ॥ पुनिकपिकहीनेतिविधिनाना ॥ माननताहिकालनियर

राना॥रिपुमदमथिप्रभुसुजससुनाए॥असकहिचलेवालिन्रपजाए॥प्रथहितासुतनैकपिमारा॥सोसुनिरावणभएउदुषारा॥जातुधानअं
गदपनदेषी॥भयव्याकुलसवभएविशेषी॥दो॥रिपुवलधर्षितहरषिकपिवालितनैवलपुंज॥सजलसुलोचनपुलकतनगहेरामपद
कंज॥४३॥दो॥सांझजानिदशमौलितवभवनगएविलषाई॥मंदोदरीनीसाचरीवहुरिकहासमुझाई॥४४॥चौ॥कंतसमुझिमनतज
हुकुमतिही॥सोहनसमरतुमहिरघुपतिही॥रामअनुजलघुरेषषचाई॥सोनहीनाघेहअसिमनुसाई॥पियतुमताहिजितवसंग्रा
मा॥जाकेदूतनकरअसकामा॥कौतुकसिंधनाघितवलंका॥आएउकपिकेसरीअसंका॥रषवारेहतिविपिनिउजारा॥देषतनोहि
अछैजेइमोरा॥जारेनगरकीन्हसवछारा॥कहोरहावलगर्वतुम्हारा॥अवपतिमिथ्यागालजनिमारहु॥मोरकहाकछुहृदयविचार
हु॥पतिरघुपतिहिन्रपतिमतिमानहु॥अगजगनाथअतुलवलजानहु॥वानप्रतापजानुमारीचा॥तासुकहानहिमानेहुनीचा॥ज
नकसभाअगनितमहिपाला॥रहेहुतुमहुंवलविपुलविसाला॥भंजिधनुषजानकीविवाही॥तवसंग्रामजितेहुकसनाही॥सुरप
तिसुतजानैवलथोरा॥राषाजियतआंषिगहिफोरा॥सूर्पनषाकीगतिप्रभुदेषी॥तदपिहृदयनहिलाजविशेषी॥दो॥विधिविराध कै २
षरदूषनहिलीलाहतोकवंध॥वालिएकसरमारोतेहिजानहुदशकेध॥४५॥चौ॥जेजलनाथवधाएउहेला॥उतरेउप्रभुदलस
हितसुवेला॥कारुनीकादिनकरकुलकेतू॥दूतपठाएउतवहितहेतू॥सभामाझजेंइतववलमथा॥करिवरूथमहंम्रगपतियथा

लंका॰ अंगद हनुमत अनुचर जाके॥ रणवाकुरा वीर अति वाके॥ तेहि कहं पिय पुनि पुनि नर कहहू॥ मुगुद मान ममता मद गहहू॥ अहह कंत
१० कृत राम विरोधा॥ काल विवस मन उपजु न वोधा॥ काल दंड गहि काहू न मारा॥ हरै धर्म वल वुध्य विचारा॥ निकट काल जेहि आवत सांइ
तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नांई॥ दो॥ दुइ सुत मारे दहे पुर अजहू सीय पिय देहू॥ कृपासिंधु रघुपतिहि भजि नाथ विमल जस लेहु॥ ४६॥ चौ॥
नारि वचन सुनि विसिष समाना॥ सभा गए उठि होत विहाना॥ वैठा जाइ सिंहासन फूली॥ अति अभिमान त्रास सव भूली॥ इहा राम अंगद
हि वलावा॥ जाइ चरन पंकज सिर नावा॥ अति आदर समीम वैठारी॥ वोले विहसि कृपाल षरारी॥ वालितनै अति कौतुक मोही॥ तात स
त्य कहहु पूछौं तोही॥ रावन जातुधान कुल टीका॥ भुजवल अतुल जासु जग लीका॥ तासु मुकुट तुम चारि चलाए॥ कहहु तात कवनी वि
धि पाए॥ सुनु सरवज्ञ प्रनत हितकारी॥ मकुट न होहि भूप गुण चारी॥ साम दाम अरु दंड विभेदा॥ न्रप उर वसै नाथ कह वेदा॥ नेति धर्म के
चरण सोहाए॥ अस जिय जानि नाथ पह आए॥ दो॥ धर्महीन प्रभु पद विमुख काल विवस दशसीस॥ आए गुण तजि रावनहि सुनहु राम
कोसलाधीस॥ ४७॥ चौ॥ रिपु के समाचार जव पाए॥ राम सचिव तव निकट वोलाए॥ लंका वाके चारि दुआरा॥ केहि विधि लागिय करहु १०
विचारा॥ तव कपीस रिछेस विभीषण॥ सुमिरि हृदय दिनकर कुल भूषण॥ कर विचार तव मंत्र दिढावा॥ चारि अनीक पि कटक वनावा॥
यथाजोग सेनापति कीन्हा॥ जूथप सकल वोलि तव लीन्हा॥ प्रभु प्रताप कहि सव समुझाए॥ सुनि कपि सिंहनाद करि धाए॥ हरषित राम

चरणसिरनावहि॥गहितरुसिषरवीरसवधावहि॥गर्जहितर्जहिभालुकपीसा॥जैरघुवीरकोसलाधीसा॥जानतपरमदुर्गअतिलंका॥प्रभुप्र(
तापकपिचलेअसंका॥घटाटोपकरिचहुंदिसिघेरी॥मुखननिसानवजावहिभेरी॥दो॥जैतिरामभ्राता सहितजयकपीससुग्रीव॥गर्जहिके
हरिनादकपिभालुमहावलसीव॥४८॥चौ॥लंकाभएउकोलाहलभारी॥सुनेउँदशाननअतिहंकारी॥देषहुवंदरन्हकेरिढिठाई॥विहसि
निसाचरसेनवलाई॥आएकीसकालकेप्रेरे॥छुधावंतरजनीचरमेरे॥असकहिअट्टहाससठकीन्हा॥घरवैठेअहारविधिदीन्हा
सुभटसकलचारिहुदिसिजाहू॥धरिधरिभालुकीससवषाहू॥उमारावनहिअसअभिमाना॥जिमिटिटीहिषगसैनउताना॥चलेनिसा
चरआयसुमागी॥गहिकरभीडपालवरसांगी॥तोमरमुद्गरपरिघप्रचंडा॥सूलकृपानपरसुगिरिषंडा॥जिमिअरुणोफलनिकरनिहारी
धावहिसठषगमासुआहारी॥चोचभंगदुखतिन्हहिनसूझा॥तिमिधाएमनुजादअवूझा॥दो॥नानाआयुधचापधरजातुधानवलवीर॥(
कोटिकंगूरनचढिगएकोटिकोटिवलवीर॥४९॥चौ॥कोटिकंगूरनसोहैहिकैसे॥मेरुकेसृंगनिपरिजनुघनवैसे॥वाजहिढोलनि
सानजुझाऊ॥सुनिसुनिहोहिभटन्हउरचाऊ॥वाजहिभेरिनफिरिअपारा॥सुनिकादरउरजाहिदरारा॥देषेन्हिजाइकपिनकेठाटा॥
अतिविसालतनुभालुसुभाटा॥धावहिगनहिनऔघटघाटा॥पर्वतफोरकरहिसववाटा॥कटकटाहिकोटिन्हभटगर्जहि॥दशनवोठकाट
हिअतितर्जहि॥उतरावणइतरामदोहाई॥जैतिजैतिकरिपरिलराई॥निसिचरसिरखरसमूहढ[illegible]हावहि॥कूदिधरहिकपिफेरिचलावहि

लं॰कां॰ ११

॥छं॥ धरिकुधरषंडप्रचंडमरकटभालुगढपरडारही ॥ झपटहिचरनगहिपटकिमहिभजिचलतिबहुरिप्रचारही ॥ अतितरलतरुए
प्रतापतर्जेहितमकिगढपरचढिगए ॥ कपिभालुचढिमंदिरन्हजहंतहंरामजसगावतभए ॥ दो ॥ एकएकगहिनिसिचरपुनिकपिच
लेपराइ ॥ उपरआपुहेठभटगिरहिधरणीमहआइ ॥ प४ ॥ चौ ॥ रामप्रतापप्रबलकपिजूथा मर्दहिनिसिचरनिकरबरूथा ॥ चढेदु
र्गपुनिजहंतहंबानर ॥ जैरघुबीरप्रतापदिवाकर ॥ चलेनिसाचरनिकरपराई ॥ प्रबलपवनजिमिघनसमुदाई ॥ हाहाकारभएपुर
भारी ॥ रोवहिआरतबालकनारी ॥ सबमिलिदेहिरावनहिगारी ॥ राजकरतएहिमृतुहंकारी ॥ निजदलबिचलसुनाजबकाना ॥ फेरिसुभ
टलंकेसरिसाना ॥ जोरणबिमुखसुनामैजाना ॥ तेहिमारिहौकरालकृपाना ॥ सर्वसरवाइभोगकरिनाना ॥ समरभूमिभादुर्लभप्राना
उग्रवचनसुनिसकलसंकाने ॥ फिरेक्रोधकैबीरलजाने ॥ सनमुखमरनबीरकैसोभा ॥ तिन्हतबतजाप्रानकेलोभा ॥ दो ॥ बहुआ
युधधरिसुभटसबभिरहिप्रचारिप्रचारि ॥ कीन्हेउब्याकुलभालुकपिपरिघप्रचंडउनमारि ॥ प४ ॥ चौ ॥ भेआतुरकपिभागनलागे ॥ यद्य राम
पिउमाजीतिहहिआगे ॥ कोउकहकहंअंगदहनिवंता ॥ कहनलनीलदुबिदबलिवंता ॥ निजदलबिचलसुनाहनुमाना ॥ पछिम ११
द्वाररहाबलवाना ॥ मेघनादतहंकरैलराई ॥ टूटनद्वारपरमकठिनाई ॥ पवनतनैमनभाअतिक्रोधा ॥ गर्जेउप्रबलकालसमजोधा ॥ कूद
दिलंकगढउपरआवा ॥ गहगिरिमेघनादकहधावा ॥ भंजेउरथसारथिनिपाता ॥ ताहिहृदयमहुंमारेउलाता ॥ दूसरेसूतबिकलतेहिजा

ना॥ स्यंदन घालि तुरित घर आना॥ दो॥ अंगद सुने उंकि पवन सुत गढ पर गए उ अकेल॥ समर वाकुरा वालि सुत तरकि चढा कपि षेल॥ ५३॥
॥ चौ॥ जुध्य विरुध्य क्रोध दोउ वंदर॥ राम प्रताप सुमिरि उर अंतर॥ रावन भवन चढे दोउ धाई॥ करहि को शलाधीस दोहाई॥ कलस सहित गहि
भवन ढहावहिं॥ देषि निसाचर पति भय पावहिं॥ नारि वृंद कर पीटहि छाती॥ अव दोउ कपि आए उतपाती॥ कपि लीला करि ताहि डेरावहि॥ राम चं
द्र कर सुजस सुनावहि॥ पुनि कर गहि कंचन के षंभा॥ कहहि करिय उतपाति अरंभा॥ कूदि परे रिपु कटक मंझारी॥ लागे मर्दै भुजवल भारी॥ का
हुहि लात चपेटन्ह केहू॥ भजहु न रामहि सो फल लेहू॥ दो॥ एक एक सन मर्दि कै तोरि चलावहि मुंड॥ रावन आगे परहि ते जनु फूटहि दधि कुंड
॥ ५४॥ चौ॥ महा महा मुखिआ जो पावहि॥ ते हि पद गहि प्रभु पास चलावहि॥ कहहि विभीषण तिन्ह के नामा॥ देहि राम तिन्हक हनिज धामा॥ षलम
नुजा द्वजामिष भोगी॥ पावहि गति जो जाचत जोगी॥ उमा राम मदु चित करुणाकर॥ वैर भाव मोहि सुमिरत निसिचर॥ देहि परम गति सो जीय जानी॥ अ
स कृपाल को कहहु भवानी॥ अंगद अरु हनिवंत प्रवेसा॥ कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेसा॥ लंका दोउ कपि सोहहि कैसे॥ मथहि सिंधु दुइ मंदर जैसे
दो॥ भुजवल रिपु दल दलमले देषि दिवस कर अंत॥ कूदे जुगल प्रयास विनु आए जहं भगवंत॥ ५५॥ चौ॥ प्रभु पद कमल सीस तिन्ह नाए॥ देषि
सुभट रघुपति मन भाए॥ राम कृपा करि जुगल निहारे॥ भए विगत श्रम परम सुखारे॥ गए जानि अंगद हनुमाना॥ फिरे भालु मरकट भट नाना॥ जातु
धान प्रदोष वल पाई॥ धाइ करहि दशसीस दोहाई॥ निसिचर अनी देषि कपि फिरे॥ जहं तहं कटक टाइ भट भिरे॥ दोउ दल प्रवल प्रचारि प्रचारी॥

लंका० लरहि सुभट नहि मानहि हारी ॥ वीरतमीचर सब अतिकारे ॥ नानावरन बलिमुख भारे ॥ सबल जुगल बल जोधा ॥ विविध प्रकार भिरत करि क्रो
१२ धा ॥ प्राविट सरद पयोद घनेरे ॥ लरत मनहु मारुत के प्रेरे ॥ अनिप अकंपन अरु अतिकाया ॥ विचलत सेन कीन्ह इन्ह माया ॥ भएउ नि
मिषि मह अति अधियारे ॥ काहुहि सूझन आपु पराये ॥ मारु काटु सब करहि पुकारा ॥ वृष्टी होहि रुधिरोपल छारा ॥ दो ॥ देषि निविड तम
दसहु दिसि कपिदल भएउ षभार ॥ एकहि एक न देषत जहं तहं करहि पुकार ॥ ५६ ॥ चौ ॥ सकल मरम रघुनायक जाना ॥ लिए बोलि अंगद
हनुमाना ॥ समाचार सब कहि समुझाए ॥ सुनत कोपि कपिकुंजर धाए ॥ पुनि कृपाल हसि चाप चढावा ॥ पावक सायक सपदि चलावा ॥
भएउ प्रकास कतहु तम नाही ॥ ज्ञान उदै जिमि संसै जाही ॥ भालु वलीमुख पाइ प्रकासा ॥ धाइ कोपि विगत सव त्रासा ॥ हनूमान अंगद र
णगाजे ॥ हांक सुनत रजनीचर भाजे ॥ भागत भट पटकहि धरि धरनी ॥ करहि भालु कपि अद्भुत करनी ॥ गहि पद डारहि सागर माही ॥ मक
र उरग झष कछु षाही ॥ दो ॥ कछु घायल कछु रण परे कछु गढ चले पराइ ॥ गर्जहि मर्कक भालु कपि रिपु दल बल विचलाइ ॥ ५७ ॥ राम
चौ ॥ निसा जानि कपि चारिउ अनी ॥ आए जहा कोशलाधनी ॥ राम कृपा करि चितवा जवही ॥ भए विगत श्रम वानर तवही ॥ उहां १२
दसानन सुभट हंकारे ॥ सब सन कहे सुभट जे मारे ॥ आधा कटक कपिन संघारा ॥ कहहु वेगि का करिय विचारा ॥ मालिवंत अति जरठ
निसाचर ॥ रावण मातु पिता मंत्रवर ॥ बोला वचन नेति अति पावन ॥ जात सुनहु कछु मोर सिषावन ॥ जव ते तुम सीता हरि आनी ॥ अ

सगुनहोहिनजाहिबषानी॥वेदपुरानजासुजसगावा॥रामबिमुखकाहुनसुखपावा॥दो॥हिरण्याछभ्रातासहितमधुकैटभबलवान
जेहिमारेउसोअवतरेउकृपासिंधुभगवान॥५९॥चौ॥दो॥दोहरा॥कालरूपषलबनदहनगुणागारघनबोध॥जेहिसेवहिशिवअजवि
बुधतासनकवनविरोध॥चौ॥परिहरबैरदेहुबैदेही॥भजहुकृपानिधिपरमसनेही॥ताकेवचनवानसमलागे॥करिआमुखकरिजाहिअ
भागे॥बूढभएसिनतोमारततोही॥अबजनिनैनदिषावसिमोही॥तेअपनेमनअसअनुमाना॥वधनचहतएहिकृपानिधाना॥सोउ
ठिगएउकहततुर्बादा॥तवसकोपिबोलेघननादा॥कौतुकप्रातदेषिहहुमोरा॥करिहौंबहुतकहौंकाथोरा॥सुनिसुतवचनभरोसाआ
वा॥प्रीतिसमेतअंकलैलावा॥करतविचारभएउभिनुसारा॥लगेभालुकपिचारिहुद्वारा॥कोपिकपिनदुर्गमगढघेरा॥नगरकोला
हलभएउघनेरा॥विविधायुधधरिनिसिचरधाए॥गढतेपर्वतसिषरढहाए॥छं॥ढाहेमहिधरसिषरकोटिन्हविविधिविधिगोलाचले॥घहरा
तजिमिपविपाततगर्जतजनुप्रलैकेवादले॥मरकटसुभटसनजुरतगहितनरूलरततनुजंझरभए॥गहिसैलतेगढपरचलावहिजहसोतहंनि
सिचरहए॥दो॥मेघनादसुनिश्रवनअसगढपुनिछेकाआइ॥उतरिदुर्गतेवीरवरसनमुखचलावजाइ॥६०॥चौ॥कहंकोशलाधी
सदोउभ्राता॥धन्वीसकललोकविख्याता॥कहनलनीलदुविदसुग्रीवा॥कहअंगदहनिवंतबलसीवा॥कहांविभीषनभ्राताद्रोही॥
आजुसठहिहठिमारौंवोही॥असकहिकठिनवानसंधाने॥अतिसैकोपिश्रवणलगितानै॥सरसंहूहसोछाडैलागा॥जनुसपछधावहिव

लंका कुनागा॥ जहँतहँपरतदेषिअतिवानर॥ सनमुषहोइनसकेतेहिअवसर॥ भागेभैव्याकुलकपिरीछा॥ विसरीसवैजुध्यकैइछा॥ ९
१३ सोकपिभालुनरनमहँदेषा॥ कीन्हेसिजेहिनप्रानअवसेषा॥ दो॥ मारेसिदशदशविसिषसवपरेभूमिकपिवीर॥ सिंहनादगरजतभए
मेघनादरणधीर॥ ६॥ चौ॥ देषिपवनसुतकटकविहाला॥ क्रोधवंतधायोजनुकाला॥ महामहीधरतमकिउपारा॥ अतिरिसिमेघ
नादपरडारा॥ आवतदेषिगयोनभसोई॥ रथसारथीतुरंगसवषोई॥ वारवारप्रचारहनुमाना॥ निकटनआवमरमसोजाना॥ रामस
मीपगयोघननादा॥ नानाभातिकहेसिदुर्वादा॥ अस्त्रशस्त्रआयुधसवडारे॥ कौतुकहिप्रभुकाटिनिवारे॥ देषिप्रभावमूढषिसिआना॥ क
रैलागुमायाविधिनाना॥ जिमिअहिकरैगरुडसनषेला॥ डरपावैगहिस्वल्पसपेला॥ दो॥ तासुप्रवलमायाविवसशिवविरंचिवडछोट
ताहिदेषावैनिसिचरनिजमायामतिषोट॥ ६२॥ चौ॥ नभचढिवरषैविपुलअंगारा॥ महितेप्रगटहोहिजलधारा॥ नानाभांतिपिसाचं
पिसाची॥ मारुकाटुधुनिवोलहिनाची॥ विष्टमुत्ररुधिरकटहाडा॥ वरषैकवहुंउपलवहुछाडा॥ वरषिधूरिकीन्हेसिअधिआरा॥ राम
॥ सूझनआपनहाथपसारा॥ अकुलानेकपिमायादेषी॥ सवकरमरणवनाएहिलेषी॥ कौतुकदेषिराममुसुकाने॥ भएसभीतसक १३
लकपिजाने॥ एकहिवानकटिसवमाया॥ जिमिदिनकरहरतीमिरनिकाया॥ कृपादृष्टिकपिभालुविलोके॥ भएप्रवलरनरहतनरोके॥ दो
आयसुमागेउरामपहंअंगदादिकपिसाथ॥ लछिमनचलेसकोपअतिवानसरासनहाथ॥ ६३॥ चौ॥ छतजनयनउरवाहुविशाल

हेमगिरिसमतनु कछुएकलाला॥ इहा दशाननसुभटपठाए॥ नानाअत्रशस्त्रलैधाए॥ भूधरनखविटपायुधधारी॥ धाएक
पिजैरामपुकारी॥ भिरेसकलजोरिनसनजोरी॥ इतउतजैइछानहियोरी॥ मुदुकन्हलातन्हदातन्हकाटही॥ कपिजैसिल्लामा
रिपुनिडाटही॥ मारुमारुधरुधरुमारु॥ सीसतोरिगहिभुजाउपारू॥ असिरवपूरिरहीनवषंडा॥ धावहिजहंतहंरुंडप्रचंडा॥ देषहि
कौतुकनभसुरवृंदा॥ कबङ्केविस्मैकबङ्कअनंदा॥ दो॥ जमेउगाडभरिभरिरुधिरउपरधूरिउडाइ॥ जिमिअंगाररासिनपर
मृतकधूमरङ्कछाइ॥ ६३॥ चौ॥ घायलवीरविराजहिकैसे कुसुंभकेतुकिकेतरुजैसे॥ लछिमनमेघनाददोउजोधा॥ भिरेपरस्पर
करिअतिक्रोधा॥ एकहिएकसकैनहिजीती॥ निसिचरछलवलकरैअनीती॥ क्रोधवंततवभएउअनंता॥ भंजेउरथसारथीतुरं
ता॥ नानाविधिप्रहारकरुसेषा॥ राक्षसभएउप्रानअवसेषा॥ रावणसुतनिजमनअनुमाना॥ संकटभएउहरिहिममप्राना॥ वीरघ
घातछाडेसिनिजसांगी॥ तेजपुंजलछिमनउरलागी॥ मूर्छाभइशक्तिकेलागे॥ तवचलिगएउनिकटभयत्यागे॥ दो॥ मेघनादसम
कोटिशतजोधारहेउठाइ॥ जगदाधारशेषकिमिउठैचलेसुभटखिसिआइ॥ ६४॥ चौ॥ सुनुगिरिजाक्रोधानलजासू॥ जारैभुवनचारि
दशआसू॥ सककसंग्रामजीतिकोताही॥ सेवहिसुरनरअगजगजाही॥ यहकौतूहलजानैसोई॥ जापरकृपारामकैहोई॥ संध्याभइफि
रिदोउअनी॥ लगेसंभारननिजनिजसेनी॥ व्यापकब्रह्मअजितभुवनेश्वर॥ लछिमनकहाबूझुकरुणेश्वर॥ तवलगिलेआयोउहनु

लंका॰
१४

माना॥ अनुज देखि प्रभु अति दुख माना॥ जामवंत कह बैद सुषेना॥ लंका रहै सो पठइय लेना॥ धरि लघु रूप गएउ हनुवंता॥ आ
नेउ भवन समेत तुरंता॥ दो॥ रघुपति चरन सरोज सिर नायो आइ सुखेन॥ कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन॥ ६५॥ चौ॥
राम चरण सरसिज उर राखी॥ चलेउ प्रभंजन सुत बल भाषी॥ उहां दूत एक मरम जनावा॥ रावन कालनेमि ग्रह आवा॥ दसमुख
कहा मरम तेइ सुना॥ पुनि पुनि कालनेमि सिर धुना॥ देषत तुम्है नगर जेइ जारा॥ तासु पंथ को रोकनि हारा॥ भजि रघुपति हि
करहु हित अपना॥ छाडहु नाथ सब बृथा कलपना॥ नील कंज तन सुंदर स्यामा॥ हृदै धराषु लोचन अभिरामा॥ अहंकार
मम ता मद त्यागहु॥ महा मोह निसि सोवत जागहु॥ काल ब्याल कर भछक जोई॥ सपनेहुं समर कि जितिय सोई॥ दो॥ सुनि दस
कंधर रिसान अति तेम मन कीन्ह विचार॥ राम दूत कर मरन भल यह षल रत मन मार॥ ६६॥ चौ॥ अस कहि चला रचेसि मग माया॥
सर मंदिर वर बाग बनाया॥ मारुत सुत देषा भल आश्रम॥ मुनिहि बूझि जल पियौं जाइ श्रम॥ राक्षस कपट वेष तहं सोहा॥ माया
पति दूतहि चह मोहा॥ जाइ पवनसुत नायो माथा॥ लाग सोक है राम गुण गाथा॥ होत महा रण रावन रामहि॥ जितिहहि राम
न संसै अवहि॥ इहां भए मैं देषौं भाई॥ ज्ञान दृष्टि बल मोहि अधिकाई॥ मागा जल तेहि दीन्ह कमंडल॥ कहह कपि नहि अघाउ थोरे
जल॥ सर मज्जन करि आतुर आवहु॥ दीक्षा देउं ग्यान जेहि पावहु॥ दो॥ सर पैठत कपि पद गहेउ मकरी तब अकुलान॥ मारे

राम
१४

उसोधरिदीव्यतनचगगनचदिजान ॥५७॥ चौ ॥ कपितवदरसभइउन्नीःपापा ॥ मिटेउतात मुनिवरकेश्रापा ॥ मुनिनहोइयहनिसिच
रघोरा ॥ मानेउंसत्यवचनकपिमोरा ॥ असकहिगइअपछराजवही ॥ निसिचरनिकटगएकपितवही ॥ कहकपिमुनिगुरुदछि
णालेहू ॥ पाछेंहमहिमंत्रवरदेहू ॥ सिरलंगूरलपेटिपछारा ॥ निजतनप्रगटेसिमरतीवारा ॥ रामरामकहिछाडेसिप्राना ॥ सुनिम
नहरषिचलाहनुमाना ॥ देषासैलनऔषधचीन्हा ॥ सहसाकरिउपारिगिरिलीन्हा ॥ गहिगिरिनिसिनभधावतभयउ ॥ अवधपरीउ
परकपिगइउ ॥ दो ॥ देषाभरतविसालअति ॥ निसिचरमनअनुमानि ॥ विनुफरसायकमारेउचापश्रवनलगितानि ॥५८॥ चौ ॥ परेउ
मूर्छिमहिलागतसायक ॥ सुमिरतरामरामरघुनायक ॥ सुनिएयवचनभरतउठिधाए ॥ कपिसमीपअतिआतुरआए ॥ विकलविलोकि
कीसउरलावा ॥ जागतनहिवहुभांतिजगावा ॥ मुरवमलीनमनभएउदुरवारी ॥ कहतवचनभरिलोचनवारी ॥ जेहिविधिरामविमुरव
विधिकीन्हा ॥ तेइंपुनियहदारुणदुरवदीन्हा ॥ जोमोरेमनवचअरुकाया ॥ प्रीतिरामपदकमलअमाया ॥ तोकपिहोउविगतश्रमसूला ॥१
जोमोपररघुपतिअनुकूला ॥ सुनतवचनउठिवैठकपीसा ॥ कहिजैजैतिकोशलाधीसा ॥ सो ॥ लीन्हकपिहिउरलाइपुलकिततनलो
चनसजल ॥ प्रीतिनहृदयसमाइसुमिरिरामरघुकुलतिलक ॥५९॥ चौ ॥ तातकुशलकहुसुखनिधानकी ॥ सहितअनुजअरुमातुजान
की ॥ कपिसवचरितसंछेपवषाने ॥ भएदुखितमनमहुपछिताने ॥ अहहदइवमैकतजगजाएउं ॥ प्रभुकेएकोकामनआएउ ॥ जानिकुअवससरम

लं॰का॰ १५ नधरिधीरा॥पुनिकपिसनवोलेरघुवीरा॥तातगहरहोइहिनोहिजाता॥काजनसाइहिहोतेप्राता॥चढुममसाएकसैलसमेता॥पठवौंतोहि
जहँकृपानिकेता॥सुनिकपिमनउपजाअभिमाना॥मोरेभारचलिहिकिमिवाना॥रामप्रभावविचारिवहोरी॥वंदिचरणकपिकहकरजोरी
तवप्रतापउरराषिगुसांई॥जैहौरामवाकीनाइं॥भरतहरषिततवआयसुदयऊ॥पदसिरनाइचलतकपिभएऊ॥दो॥भरतवाहुवल्सगुणअधिकप्र
भुपदप्रीतिअपार॥जातसराहतमनहिमनपुनिपुनिपवनकुमार॥७०॥चौ॥उहारामलछिमनहिनिहारी॥वोलेवचनमनुजअनुहारी॥अर्धरा
तिगइकपिनहिआवा॥रामउठाइअनुजउरलावा॥सकहुनदुषितदेषिमोहिकाऊ॥वंधसदातवमृदुलसुभाऊ॥ममहितलागितजेहुपितुमा
ता॥सहेहुविपिनहिमआतपवाता॥सोअनुरागकहांअवभाई॥उठहुनसुनिममवचविकलाई॥जौजनतेउवनवंधविछोहू॥पितावचनमन
तेउँनहिवोही॥सुतवितनारिभवनपरिवारा॥होंहिजाहिजगवारहिवारा॥असविचारिजियजागहुताता॥मिलएनजगतसहोदरभ्राता॥यथापंष
विनुषगअतिदीना॥मनिविनुफनिकरिवरकरहीना॥असममजीवनवंधविनुतोही॥जोजडदैवजिआवैमोही॥जैहौंअवधकवनमुहुँलाई राम
नारिहेतुप्रियवंधगवाई॥वरुअपजससहतेउँजगमाही॥नारिहानिविशेषछतिनाही॥अवअपलोकसोकसुततोरा॥सहिहिनिठुरकठोरउरमो १५
रा॥निजजननीकहंएककुमारा॥ताततासुतुमप्रानअधारा॥सौपेसिमोहितुम्हैगहिपानी॥सवविधिसुखदपरमहितजानी॥उतरकाहिदेहौं
काजाई॥उठिकिनमोहिसिषावहुभाई॥वहुविधिसोचतसोचविमोचन॥श्रवतसलिलराजीववविलोचन॥उमाएकअखंडरघुराई॥नरगतिभ

क्षिकृपालदेषाई॥सो॥प्रभुविलापसुनिकानविकलभएबानरनिकर॥आइगएहहनुमानजनुकरुणामहवीररस॥७१॥चौ॥हरषिरामभेटेह
नुमाना॥अतिकृतज्ञप्रभुपरमसुजाना॥तुरितवइततवकीन्हउपाई॥उठिवैठेलछिमनहरषाइ॥हृदयलाइभेटेप्रभुभ्राता॥हरषेसकलभालुक
पिव्राता॥कपिगिरिवैदतहापहुचावा॥जेहिविधितवहिताहिलेआवा॥यहवृतांतदशाननसुनेउ॥अतिविषाद्पुनिपुनिसिरधुनेउ॥व्याकुल
कुंभकरणपहिंगएउ॥करिवहुजतनजगावतभएउ॥जागेनिसिचरदेषियकैसा॥मानहुंकालदेहधरिवैसा॥कुंभकरणपूछासुनुभाई॥काहे
तवमुखगएउसुखाइ॥कथाकहाशवतेंअभिमानी॥जेहिप्रकारसीताहरिआनी॥तातकपिननिसिचरसवमारे॥महामहाजोधासंघारे॥दुर्मुखसुररि
पुमनुजअहारी॥भटअतिकायअकंपनभारी॥अपरमहोदरआदिकवीरा॥परेसमरमहअतिरणधीरा॥दो॥सुनिदशकंधरवचनतवकुंभक
रणविलषान॥जगदंवाहरिआनिअवसठचाहतकल्यान॥७२॥चौ॥भलनकीन्हतैनिसिचरनाहा॥अवमोहिआनिजगाएहुकाहा॥अज
हूंतातत्यागहुअभिमाना॥भजहुरामहोइहिकल्याना॥हैदशसीसमनुजरघुनायक॥जाकेहनोमानअसपायक॥अहहवंधुतैकीन्ह
षोटाई॥प्रथमनमोहिजगावहुआइ॥कीन्हेहुप्रभुविरोधतेहिदेवक॥शिवविरंचिसुरजाकेसेवक॥नारदमुनिमोहिज्ञानजोकहेउ॥कहतेउतोहि
समैनिरवहेउ॥अवभरिअंकमभेटहुभाई॥लोचनसुफलकरोनिजजाइ॥स्यामगातसरसीरुहलोचन॥देषोजाइतापत्रैमोचन॥दो॥रामरूपगु
णसुमिरिमनमगनभएछुनएक॥रावनमागेउकोटिघटमदअरुमहिषअनेक॥७३॥चौ॥महिषषाइकरिमदिरापाना॥गर्ज्जोवज्रघातस

लंका० माना॥कुंभकरणदुर्मदरनरंगा॥चलेउदुर्गतजिसेननसंगा॥देषिविभीषनआगेआएउ॥पदगहिनामकहतनिजभएउ॥अनुजउठाइहृद
१६ यतेहिलावा॥रघुपतिभक्तिजानिमनभावा॥तातलातमोहिरावननमारा॥कहतपरमहितमंत्रविचारा॥तेहिगलानिरघुपतिपहआए
उं॥दीनदेषिप्रभुकेमनभाएउ॥सुनुसुतभएउकालवसरावन॥सोकिमानअवपरसिषावन॥धन्यधन्यतैंवीरविभीषन॥भएउतातनिसिच
रकुलभूषण॥वंधवंसतैंकीन्हउजागर॥भजेउरामसोभासुषसागर॥दो॥मनवचकर्मकपटतजिभजहुरामरणधीर॥जाहुननि
जपरसूझमोहिभएउंकालवसवीर॥७४॥चौ॥वंधवचनसुनुफिराविभीषण॥आयोतहंत्रैलोकविभूषण॥नाथभूधराकारसरीरा॥कुंभ
करणआवतरणधीरा॥अतनाकपिनसुनाजवकाना॥किलिकिलाइधायेवलवाना॥लियेउपारिविटपअरुभूधर॥कटकटाइडा
रहिंताऊपर॥कोटिकोटिगिरिसिषरप्रहारा॥करहिंभालुकपिएकहिवारा॥मुरैनमननतननटरतनटारे॥जिमिगजआकफलनकेमारे
तवमारुतसुतमुठुकाहनेउं॥परेउधरणिव्याकुलसिरधुनेउं॥पुनिउठितेंमारेउहनिवंता॥घुर्मितभूतलपरेउतुरंता॥पुनिनलनीलहिअव राम
निपछारेसि॥जहंतहंपटकिपटकिभटडारेसि॥चलीवलीमुषसेनपराइ॥अतिभैत्रसितनकोउसमुहाई॥दो॥अंगदादिकपिघायवसकरि १६
समेतसुग्रीव॥काषदाविकपिराजकहचलाअमितवलसीव॥७५॥चौ॥उमाकरतरघुपतिरनलीला॥वेलगरुडजिमिअहिगनमीला॥भृकु
टिभंगजोकालहिषाई॥ताहिकिसोहेऐसेलराई॥जगपावनिकीरतिविस्तरहहिं॥गाइगाइभवसागरतरिहहिं॥मूर्छागइमारुतसुतजागा॥सुग्रीवहि

तव षोज न लागा॥ कपिराज कुंकै मूर्छा वीती॥ निवुकि गए तैमु तक प्रतीती॥ काटेसि दशन नासिका काना॥ गर्जि अकास चला तेजाना॥ गहेसि
चरन धरि धरनि पछारा॥ अतुल घाव उठि पुनि तेहि मारा॥ पुनि आये उ प्रभु पहँ वलवाना॥ जै जै कारु नी क भगवाना॥ नाक कान काटे सो जानी॥ फि
रा क्रोध मन भए उ गलानी॥ सहज भीम पुनि विनु श्रुति नासा॥ देषत कपि दल उपजी त्रासा॥ दो॥ जै जै जै रघुवंस मनि धाए कपि दै हूह॥ एक हि वा
र जो ताहि पर डारेन्हि गिरि तरु जूह॥ ६४॥ चौ॥ कुंभकरण रण रंग विरुधा॥ सनमुख चला काल जनु क्रूधा॥ कोटि कोटि कपि धरि धरि षाई॥ जनु टि
डी गिरि गुहा समाई॥ कोटिन्हि गहि सरीर सन मर्दा॥ कोटिन्ह मीजि मिलावै गर्दा॥ मुख नासा श्रवनन्ह कि वाटा॥ निसरि पराहि भालु कपि ठाटा॥ र
ण मद मत्त निसाचर दर्पा॥ विश्व ग्रसिहि जनु एहि विधि अर्पा॥ मुरे सुभट रन फिरहि न फेरे॥ सूझन नैन सुनहि नहि टेरे॥ कुंभकरण रन फौज विडारी॥ सु
नि धाए रजनीचर झारी॥ देषी राम विकल कटकाई॥ रिपु अनीक नाना विधि आई॥ दो॥ सुनु सुग्रीव कपीस तुम सकल संभारहु सैन॥ मै देषौ षल वल्ल द
ल हि वोले राजिव नैन॥ ६७॥ चौ॥ कर सारंग विसिष कटि भाथा॥ अरि दल दलन चले रघुनाथा॥ प्रथम कीन्ह प्रभु धनुष टंकोरा॥ रिपु दल वधिर भए
सुनि सोरा॥ सत्य सिंधु छाडे सर लछा॥ काल सर्प जनु चले सपछा॥ अति जे चले निसित नाराचा॥ लगे कटन भट विकट पिसाचा॥ कटहि च
रन उर सिर भुज दंडा॥ वहुतक वीर होहि शत षंडा॥ घूर्मि घूर्मि घायल महि परहीं॥ उठहि संभारि सुभट पुनि लरहीं॥ लागत वान वनद ए
जिमि गाजहि॥ वहुतक देषि कठिन सर भागहि॥ रुंड प्रचंड मुंड विधावहि॥ धरु धरु मारु मारु धुनि गावहि॥ दो॥ छन मह प्रभु के सायकनि काटे वि

लंका० ७ कटपिशाच॥ पुनि रघुपति के सेन महि प्रविसे आइ नराच॥ ७८॥ चौ॥ कुंभकरन मन दीष विचारी॥ हते निमिष महि निसिचर झारी॥ भए उ
७ क्रोध दारुण वलवीरा॥ करि मृगनायक नाद गंभीरा॥ कोपि महीधर लेइ उपारी॥ डारै जहं मर्कट भट भारी॥ आवत देषि सयल प्रभु भारे॥
सरन्हि काटि रज सम करि डारे॥ पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक॥ छाडे अति कराल वहु सायक॥ तन महं प्रविसि निसरि सर जांही॥ जनु दा
मिनि घन माह समांही॥ स्रोनित स्रवत सोह तन कारे॥ जनु कज्जल गिरि गेरु पनारे॥ विकल विलोकि भालु कपि धाए॥ विहसा जव हि नि
कट भट आए॥ दो॥ गर्जत धायो वेग अति कोटि कोटि गहि कीस॥ महि पटकै गजराज इव सपथ करै दससीस॥ ७९॥ चौ॥ भागे भालु वलिमु
ख जूथा॥ वृक विलोकि जिमि मेष वरूथा॥ भागे वानर भालु भवानी॥ विकल पुकारत आरत वानी॥ यह निसिचर दुकाल सम अहइ॥
कपि कुल देश परन अव चहइ॥ कृपा वारिधर राम षरारी॥ पाहि पाहि प्रणतारत हारी॥ सकरुण वचन सुनत भगवाना॥ चले सुधारि सरा
सन वाना॥ राम सेन निज पाछे घाली॥ चले सकोप महा वलसाली॥ षैचि धनुष सत सर संधाने॥ छुटे तीर सरीर समाने॥ लागत सर राम
धावा रिसि भरा॥ कुधर डगमगत डोलत धरा॥ लीन्ह एक तेहि सैल उपाटी॥ रघुकुल तिलक भुजा सो काटी॥ भुज समेत गिरि महि मे गीरा॥ तव हु ७
नहारि माने वल वीरा॥ धावा वाम वाहु गिरि धारी॥ प्रभु सो भुजा काटि महि पारी॥ काटे भुजा सोह षल कैसा॥ पक्षहीन मंदर गिरि जैसा॥ उ
ग्र विलोकनि प्रभुहि विलोका॥ ग्रसन चहत मानहुं त्रैलोका॥ दो॥ करि चीक्कार घोर अति धावा वदन पसारि॥ गगन सिद्ध सुर त्रसित भा

हाहाहोतपुकार ॥ ७० ॥ चौ ॥ सभैदेवकरुणानिधिजाने ॥ श्रवनप्रजंतसरासनताने ॥ विसिषनिकरनिसिचरमुखभरेउ ॥ तदपिमहावलभूमिन
परेउ ॥ सरन्हिभरामुखसनमुखधावा ॥ कालत्रोनसजीवजनुआवा ॥ तवप्रभुकोपितीव्रसरलीन्हा ॥ धरतेभीन्नतासुसिरकीन्हा ॥ सोसिरपरेउद
शाननआगे ॥ विकलभएउजिमिफनिमनित्यागे ॥ धरनिधसैधरधावप्रचंडा ॥ तवप्रभुकाटिकीन्हदुइखंडा ॥ तासुतेजप्रभुवदनसमाना ॥ सुरमुनिसभेअ
चंभेमाना ॥ नभदुंदुभीवजावहिहरषहि ॥ जैजैकहिप्रसूनसुरवरषहि ॥ करिविनतीसुरसकलसिधाए ॥ तेहीसमैदेवऋषिआए ॥ गगनोपरिहरिगु
नगनगाए ॥ रुचिरवीररसप्रभुमनभाए ॥ वेगिहतहुखलकहिमुनिगएउ ॥ रामसमरमहिसोहतभएउ ॥ छं ॥ संग्रामभूमिविराजरघुपतिअतुलवलको
शलधनी ॥ श्रमविंदुमुखराजीवलोचनरुचिरतनश्रोनितकनी ॥ भुजजुगलफेरतसरसरासनभालुकपिचहुंदिसवने ॥ कहदासतुलसीकहिनसक
छविसेषजेहिआननघने ॥ दो ॥ निसिचरअधममलायतनताहिदीन्हनिजधाम ॥ गिरिजतेनरमंदमतिजेनभजहिश्रीराम ॥ ७१ ॥ चौ ॥ दिनकीअंतफि
रिदोउअनी ॥ समरभएसुभटनश्रमघनी ॥ रामकृपाकपिदलवलवाढा ॥ जिमितृनपाइलागिअतिदाढा ॥ छीजहिनिसिचरदिनअरुराती ॥ निज
मुखकहेधर्मजेहीभांती ॥ वहुविलापदसकंधरकरई ॥ वंधसीसपुनिपुनिसिरधरई ॥ रोवहिनारिहृदयहतिपानी ॥ तासुतेजवलविपुलवषानी ॥ मे
घनादतेहिअवसरआवा ॥ कहिवहुकथापितहिसमुझावा ॥ देषिहहुकालमोरिमनुसाई ॥ अवहिवहुतकाकरौंवडाई ॥ इष्टदेवसेवलरथपाएउ ॥ सो
वलतातनतोहिदिषाएउ ॥ एहिविधिजलपतभयोविहाना ॥ चहुंद्वारलागेभटनाना ॥ इतकपिभालुकालसमवीरा ॥ उतरजनीचरअतिरणधीरा ॥ ल

लंका० रहिसुभटनिजनिजजैहेतू॥ वरनिनजाइसमरखगकेतू॥ दो॥ मेघनादमायारचीरथचढिगयोअकास॥ गर्जैउप्रलैपयोदजिमिभइकपिक
१८ टकहित्रास॥ ७२॥ चौ॥ शक्तिसूलतरुआरिकृपाना॥ लागेवृष्टिकरैविधिनाना॥ रहेदशहुंदिसिसायकछाई॥ मानहुंमघामेघझरिलाई॥
धरुधरुमारुसुनहीकपिकाना॥ जेमारैंतेहिकोउनजाना॥ गहिगिरितरुअकासकपिधावहि॥ देषहिनतेहिदुखितफिरिआवहि॥ औघटघाट
वाटगिरिकंदर॥ मायावलकिन्हेसिसरपंजर॥ जाहिकहाभैव्याकुलवंदर॥ सुरपतिवंदपरेजनुमंदर॥ मारुतसुतअंगदनलनीला॥ कीन्हेसिविक
लमहावलसीला॥ पुनिलछिमनसुग्रीवविभीषण॥ सरनिमारिकीन्हेसिजर्जरतन॥ पुनिरघुपतिसनजूझनलागा॥ सरछाडैहोइलागइना
गा॥ रनसोभालगिप्रभुवधावा॥ नागफासदेवनभैपावा॥ दो॥ खगपतिजाकरनामजपिनरकाटहिभवफास॥ सोप्रभुआवकिवंधतरव्यापक
विश्वनिवास॥ ७३॥ चौ॥ व्याकुलकटककीन्हघननादा॥ पुनिभाप्रगटकहैदूर्वादा॥ जामवंतकहखलरहुठाढा॥ सुनिकरिताहिक्रोधअति
वाढा॥ बृद्धजानिसठछाडेउतोही॥ लागेसिपतितप्रचारनमोही॥ असकहितरलत्रीसूलचलावा॥ जामवंतकरिगहिसोधावा॥ मारेसिमेघनाद राम
कैछाती॥ पराधरनिघूर्मितसुरघाती॥ पुनिरिसानगहिचरणफिरावा॥ महीपछारिनिजवलदेषरावा॥ वरप्रतापसोमरइनमारा॥ तवगहिपदलंकाप १८
रडारा॥ इहादेवरिषिगरुडपठावा॥ रामसमीपसपदिसोआवा॥ दो॥ पन्नगारिषाएसकलछुनमहव्यालवरूथ॥ भएविगतमायातुरितहरषेवा
नरजूथ॥ ७४॥ चौ॥ मेघनादकैमूर्छाजागी॥ पितहिविलोकिलाजअतिलागी॥ तुरितगएगिरिवरउठिकंदर॥ करैंअजैमषअसमनमहधर॥ सो

सुधि पाइ विभीषन कहइ ॥ सुनु प्रभु समाचार अस अहई ॥ मेघनाद मख करै अपावन ॥ खल मायाविधि देव सतावन ॥ जौ प्रभु सीद्ध होन सो पाइ
हि ॥ नाथ वेगि रिपु जीति न जाइहि ॥ सुनि रघुपति अतिसै सुख माना ॥ लिए वोलि अंगद हनुमाना ॥ लछिमन संग जाहु तुम भाई ॥ करहु विध्वंस यज्ञ
कर जाई ॥ जामवंत कपिराज विभीषन ॥ सेन समेत रहहु जीनीउं जन ॥ तुम लछिमन रन मारेहु वोही ॥ देषि सभै सुर दुख अति माही ॥ जव रघु
वीर दीन्ह अनुसासन ॥ कटि निषंग क गहे सरासन ॥ प्रभु प्रताप उर धरि रनधीरा ॥ वोले घन इव गिरा गंभीरा ॥ जौ तेहि आजु वधे विनु आवों ॥ तौ
रघुपति सेवक न कहावों ॥ जौ सत संकर करहि सहाइ ॥ तदपि हतो रघुवीर दोहाई ॥ दो॥ वंदि रामपद कमल जुग चले तुरंत अनंत ॥ अंगद नील म
यंद नल संग सुभट हनिवंत ॥ ७५ ॥ चौ॥ जाइ कपिन्ह देवा सो वैसा ॥ आहुति देत रुधिर अरु भैसा ॥ तव कीसन्ह कृत यज्ञ विध्वंसा ॥ जव न उ
ठै तव करहि प्रसंसा ॥ तदपि न उम धरा कच जाई ॥ लातन हति हति चले पराइ ॥ लै त्रसूल धावा कपि भागे ॥ आए राम अनुज के आगे ॥ आवा प
रम क्रोध कर मारा ॥ गर्जि घोर रव वारहिं वारा ॥ कोपि मारुतसुत अंगद धाए ॥ हति त्रसूल उर धरनि गिराए ॥ प्रभु कहं छाडुत स्रूल प्रचंडा ॥ सर
हति कृत अनंत जुग षंडा ॥ उठि वहोरि मारुत जुवराजा ॥ हतहि कोपि तेहि घाव न वाजा ॥ फिरै वीर रिपु मरै न मारा ॥ तव धावा करि घोर चिकारा ॥
आवत देषु क्रोध जनु काला ॥ लछिमन छाडे उ विसिष कराला ॥ आवत देषे पवि सम वाना ॥ तुरित भए षल अंतरध्याना ॥ विविध वेष धरि करै ल
राई ॥ कवहुं के प्रगट कवहु छपि जाई ॥ तव त्रसूल छाडेसि लछिमन पर ॥ काटि कीन्ह सत षंड धरनिधर ॥ सिव रए क पुन्नि सो लेधायो ॥ राम अ

लंका नुजसोकाटिषसायो ॥ दो ॥ आयुधविविधिछाडातेइरजसमकीन्हफनीस ॥ हरषविवसकपिरिछसवविधसहितसुरईस ॥ ८६ ॥ चौ ॥ विविधा
१९ युधसरछाडैलागा ॥ रनकाननछूटहिजिमिनागा ॥ रामअनुजसरसिंहसमाना ॥ उमाग्रसितछूटैअभिमाना ॥ देषिअवधिरिपुडरेकपीसा
परमक्रोधतवभएउअहीसा ॥ लछिमनमनअसमंत्रहढावा ॥ एहिपापिहिंमैवङ्कतषेलावा ॥ सुमिरिकोशलाधीसप्रतापा ॥ सरसंधानकी
न्हकरदापा ॥ देषियजिमिरविनेजसमाना ॥ फुकरतमनकुंव्यालअनुमाना ॥ छाडेउवाननासुतनलागा ॥ सीसभुजाकाटेन्रमनागा
सीसपरेउधरनीमहजवही ॥ भुजादाहिनिगौनभतवही ॥ घनसमानसोगरजुअभागा ॥ मरतीवारकपटसवत्यागा ॥ दो ॥ रामअ
नुजकहिरामकहिअसकहिछाडेसिप्रान ॥ धन्यधन्यतवजननीकहअंगदहनुमान ॥ ८७ ॥ चौ ॥ विनुप्रयासहनुमानउठावा ॥ लं
काद्वाररापितेहिआवा ॥ जोजमकहजन्मकजमदंडा ॥ हरिद्रोहीसुतमहाप्रचंडा ॥ महिमाअतुलमहाबलसींवा ॥ जासुप्रभावअभेद
सग्रीवा ॥ भुजवलसुरनायकवसिकीन्हा ॥ चौदहभुवनजीतिजसलीन्हा ॥ रिपुतरुलषनमूलषनिगंजेउ ॥ जिमिगजकमलनालग राम
हिभंजेउ ॥ जिमिवासवगाहिकुलिसकराला ॥ कीन्हविछिन्नगिरिपछविसाला ॥ रनसागरमहपरेउसरीरा ॥ तजेदारुजिमिरुधिरस(१९
नीरा ॥ दंतविकटमुखपरमअपावन ॥ चिवुकचिकुरकपिअसुभडेरावण ॥ रसनाललरंगजनुजावक ॥ देवकीसिषासोहजनुपाव(
क ॥ पाइसुआयसुरिछभकपीसा ॥ लीन्हउठाइदुअन्हकरसीसा ॥ दो ॥ करिश्रममारेउमहारिपुरामअनुजरणधीर ॥ निडरसुमन

बरषहिविवुधकहिजैगिरागंभीर ॥ ८८ ॥ चौ ॥ तासुमरनसुनिसुरगंधर्वा ॥ चढिविमानआएनभसर्वा ॥ वरषिसुमनदुंदुभीवजावहि ॥ श्रीर
घुनाथविमलजसगावहि ॥ जैअनंतजैजगतअधारा ॥ तुमप्रभुसवदेवननिस्तारा ॥ अस्तुतिकरिसुरसिद्धसिधाए ॥ लछिमनकृपासिंधुप
हिआए ॥ प्रभुहिविलोकिसीसपदनाए ॥ उठिप्रभुहरषिअनुजउरलाए ॥ कृपादृष्टिप्रभुअनुजहिहेरे ॥ विगतघावकीन्हाकरफेरे ॥ वानवेधिदेषि
तनकैसे ॥ कनकत्रोणपुरितसरजैसे ॥ मुखप्रसन्ननादेषिलषीसव ॥ रिपुवधकहेउविभीषणइंतव ॥ धरेउसीससआनिप्रभुआगे ॥ वानरभालु
विलोकनलागे ॥ प्रभुकौतुकीनिरषिसोसीसा ॥ राषनकहेउकोशलाधीसा ॥ दो ॥ प्रभुआयसुसुनिकीसपतिराषेजतनकराई ॥ कटकसहितरघुवं
समनिसोभितदूनैभाइ ॥ ८९ ॥ चौ ॥ कृपादृष्टिसवकटकनिहारे ॥ भएश्रमरहितरामवैढारे ॥ सुनहुउमाएहिविधिरिपुमारे ॥ सुरनरगनसवभएसुषारे ॥
अवसोसुनहुवातहितेहिकेरी ॥ धराजोलंककगइसरप्रेरी ॥ मेघनादअंगनमहिपरि ॥ वानवेधितआनितसोभरि ॥ देषानहासुलोचनावेसी ॥ रतितेरुचिर
रूपगुणजैसी ॥ नागसुतादशकंधपतोहू ॥ वासवरिपुतियछविमेंजोहू ॥ हेमसिंहासनसोहतिवाला ॥ सेवहिविद्याधरअतिमाला ॥ एजहिविवि
धिविनेकरितहाही ॥ सुखप्रमोदकोसकैसराही ॥ तहंपतिभुजापरीपविभांती ॥ मनहुसकलसुरतरुकिकांती ॥ दो ॥ तहंदसदासीदेषिकैस्तोनस्रव
तभुजदंड ॥ भएउसवनआचर्यमैमनहुअषंडलषंड ॥ ९० ॥ चौ ॥ सुनिकरिसकलसरवीमुखवैना ॥ तजिसिंहासनउठीसुनैना ॥ प्रेमसुभावधरकि
धरधरकी ॥ सुभकेअसुभदहिनभुजफरकी ॥ होतमहारनरावनरामहि ॥ वीरधरीनमोरपियतामहि ॥ सकलसुरासुरसकहिनजूझी ॥ विधि

लंका वामतापुरै नहि वूझी॥ एतनाकहतगइ चलि आपु॥ पतिभुजलषिकरकोढविलाप॥ कंकनमनिगनभूषणसोई॥ महाविटपसम
२० आननहोई॥ देषतमनहिनआवततेही॥ तासुसुभावसुनछु पहिलेही॥ नीदनारिभोजनपरिहरई॥ वारहिवरषतासुकरमरइ॥ दो॥ करिर
विचारमनदीकदेइ मैपतिदेवतानारि॥ भुजकहंभेटनदुचितइसुनिकरदीन्हपसारि॥ ८१॥ चौ॥ लषिरुषतासुसषीउठिधाई॥ तुरितहिषोजि
षरीलैआई॥ दीन्हहाथपरमनिआगनाई॥ लिषतलषनकीरतिरुचिराई॥ नीदनारिभोजननसतकोढी॥ कहततासुमहिमाअतिछोटी॥ अ
छैअव्यय अजअविनासी॥ अतुलअमितघटघटकेवासी॥ प्रगटहिंपालहिंपुनिजगहरही॥ त्रिगुनरूपत्रैमूरतिधरही॥ जोकालहुक
रकालभयंकर॥ वरननतसुजससारदासंकर॥ लीलातनसुरसेवकहेतू॥ जासुनामभवसागरसेतू॥ मुनिमनपुंडरीकजाकेघर॥ वचन
विवेकविचारवुद्धवर॥ दो॥ कोटिकलपवरननतनिगम॥ आगमजासुगुनगाथ॥ तमसरीरजउजीववितु किमिवरनैलिषिहाथ॥ ८२॥ चौ॥ म
मसिरगएउदरसरघुराइ॥ नववचननलगिभुजापढाई॥ एहिविधिलिषीसकलभुजवाता॥ परीभूमितलअतिविकलाता॥ वाचिसकलर राम
भुजालिषायथारथ॥ लछिमनरामजानिपरमारथ॥ तयासुभावतदपिरहिभांती॥ विलपतिमिलिसवसखिनकीपांती॥ गुनगनसाहस २०
सीलनाहके॥ कहिरोवतिवलविपुलवाहके॥ जेहिभुजवलसुरनाथविगोए॥ सोप्रभुआजसमरमहसोए॥ मनिगनभूषणवसनविसार
ही॥ महिलोटहिकरतलसिरमारहि॥ मगनविपतिसरीरसुधिनाही॥ दारुणविपतिकहियकेहिपाही॥ छनकप्रबोधसखीकोउकरई

वढ़्ढ़रिसोकदावानलजरई ॥ छनछनउठतिपरतिधरणीतल ॥ पुनिपुनिउठिसराहिपतिकेवल ॥ दो ॥ तिन्हमहंसखीसयानिएककहीसमु
झाएसिवैन ॥ सोकछाडुपतिदेवजासुमतिकरहुमनचैन ॥ ९३ ॥ चौ ॥ सुनिकहसहसाननतनुजाता ॥ सत्यकहातुमसखीसुमाता ॥ विधि
निर्मितदुखमोकहलाह्य ॥ सुखभरिपरिभुवनसवकाहू ॥ विजैरामलछिमनकरआएउ ॥ सुजससकलवानरकुलगाएउ ॥ कुलकलंकवड
लएउविभीषन ॥ कुलकुठारअसमुनानदीषन ॥ छूटिवंदिअवसुरगनकेरी ॥ निजनिजपुरन्हदोहाईफेरी ॥ मुनिपुलस्तिकरभाकुलना
सू ॥ अवरविससिसुखकरहुप्रकासू ॥ तेजवंतपावकपरिहरिदुख ॥ वहिहिसमीरआजुअपनेसैसुख ॥ सलिलगगनतलनिर्मलआजू
सुवसवसिहिसुरनायकराजू ॥ दो ॥ यमकुवेरदिसिपालसवप्रमुदितसुरनरनाग ॥ षाइअघाइविहाइदुखपाएसुयज्ञविभाग ॥ ९४ ॥
चौ ॥ एतनाकहिमंदिरमहंआई ॥ देषतिमनिगनधनवढ़्ढ़ताई ॥ सुरपतिभवननपटतरताही ॥ जहरिधिसिधिविधिसहितकमाही ॥ देषतवि
थैनमनअनुरागेउ ॥ पतिपदनेहनिपुनमनलागेउ ॥ दीन्हेउमनिगनभूषनचीरा ॥ धेनुधरनिगजहाटकहीरा ॥ मनिमैशिविकारचेउसो
हाई ॥ भुजचढाइपहिरावबनाई ॥ आपुनचढतभइपुनिजाई ॥ सुरदुर्लभसुखसदनविहाई ॥ वीतरगीजिमितजैविषैगन ॥ सहसभांतिपतिपद
लागेमन ॥ सुकसारिकासुलोचनीज्याए ॥ कनकपिंजरन्हराषिपढाए ॥ व्याकुलकहहिसोकहासुनैना ॥ सुनिधीरजपरिहरैसुवैना ॥ भए
विकलषगमृगएहिभांती ॥ अपरदसाकेसेकहिजाती ॥ पजालोगसंगसवलागे ॥ प्रेमउमगिलोचनजलजागे ॥ दो ॥ वाजनलगेनिसानघन

लंका
२१

ढोलदुंदुभीभेरि॥पुरजनपरिजनसंगसवचलेपालकीघेरि॥९५॥चौ॥देषिभीरदशकंधदुआरे॥सजगभएसववीरअचारे॥जानाकट
करिपुन्हकिआइ॥अस्त्रशस्त्रकरधरेवनाई॥धनुचढाईतरकसकटिवाधहि॥गहिअसिचर्मसमरवरकाधहि॥तोमरपरसुप्रचंडग
दागहि॥रोषतचोषतसूलशक्तिलहि॥मारुमारुधरुधरुकहिधावहि॥प्रगटदशाननविजैसुनावहि॥गर्जीतजीकहगिरागंभीरा॥समरभयंकर
निसिचरवीरा॥निपटहिनिकटपालकिआई॥चीन्हिसकलभटरहेलजाई॥देषिजोहारिनागपतिकन्या॥सतीसीरोमनित्रिभुवनधन्या॥
दो॥द्वारपालदशकंधकहविनैसुनाएन्हिजाइ॥भइरजायसुवेगिहीलेडुसोताहिवोलाइ॥दो॥तेहिअवसरसूलोचनागहीचरणअकु
लाइ॥भुजाराषिघननादकेकरुणावचनसुनाइ॥९६॥चौ॥तुमहिअछतअसहालहमारी॥सुरवतजिभएलोकअधिकारी॥नभतलम
गभुजममगहपरी॥संसैजानिदीन्हकरषरी॥लिषिरामलछिमनमहिमाइन्ह॥असमेसोसवविधिकथाकहीतिन्ह॥ठगीसीरहीवाचिगुण
गाथा॥जरउंसंगजौपावउमाथा॥रनकवंधभुजममगहआई॥सिरतहेजहनरेसदोउभाइ॥करिवसोजतनमिलैमोहिसीसा॥तुमसरवग्य राम
चराचरईसा॥सुनतकुलिससमगिरावधूकी॥जीवनआसदशाननमूकी॥तदपिधीरधरिकरतप्रवोधा॥कहुकहंमोहिसमानजगजोधा॥ २१
दो॥रामलषनसुग्रीवनलनीलदुविदहनिवंत॥माथविभीषनरुरषभकोआनोमारितुरंत॥९७॥चौ॥अवनेंरहेउंभरोसेभारी॥कुंभक
रनघननादसुरवारी॥मइंआजुलगिकीन्हनजूझी॥इन्हसवकरपुरुषारथवूझी॥मुएतेनरवानरकेमारे॥वातसुनतवडीलाज॥

हमारे॥ गनतीकवनवीरमहंइन्हकी॥ असिदुरदसाकीन्हकपिजिन्हकी॥ छाडु सोचकुलवधपतोहू॥ जानसितिन्ह समानजनिमोहू॥ एरव
विलंवकरहुघरिचारी॥ देषहुमोरिभयंकरमारी॥ आनिसीससव शत्रुन्हकेरा॥ विनुप्रयासलागैनहिवेरा॥ भोगवहिजंतुपुराकृतभोगा॥ न
तकतवनचरनिसिचरजोगा॥ दो॥ मेरुउषारनिहारजोधराधरहिकरवीच॥ तेभटषाएमकसिसुकालकुटिलतामीच॥ ९८॥ चौ॥ क्रोध
विवस्पप्रगटवलवोले॥ हृदयसोकतरुअचलनडोले॥ समाधाननहिमानतसोई॥ सुनिप्रतापसंतोषनहोई॥ नरवानरपुरुषारथदेषत॥ वड
प्रभुप्रवलछोटकरलेषत॥ कृदिसिंधुलंकाकपिजारी॥ लघुकरिमाननताहिसुरारी॥ कुंभकरनअतिकायमहोदर॥ ममपतिगिरेउसोसेनूस
होदर॥ तेरिपुचहतदसाननजीती॥ देषहुमहामोहकैरीती॥ उतरदेउतोपातषहोई॥ करिविवादअवसरवसषोई॥ फिरइराजतोमोहि
नकाजा॥ विनुपियसकलनरककरसाजा॥ दो॥ तुरतहिउठीसुलोचनागइमयासुतपास॥ पदगहिरोअतिसकलकहिप्रगटसोक
उपहास॥ ९९॥ चौ॥ आदिहितेसवकथावषानी॥ सुनिसुनिरोवहिरावनरानी॥ कहीसोपतिभुजालिषितवहोरी॥ रामलषनमहिमा
नहिषोरी॥ कहेउवहुरिदशकंधरक्रोधा॥ मुएहुंनविउमितकीन्हसुजोधा॥ सुनिसूरत्ववधकीवानी॥ वोलीदुषितमदोदरीरानी॥
कहेउसोमानवसत्यसयानी॥ सुनीजोनारदमुखकीवानी॥ पाछिलवातभइसवसांची॥ अनुभवकीन्हनएकौवाची॥ देविनहोइमृषा
रिषिभाषित॥ अपनेमाहमोहमनराषित॥ आगिलिकथासमाससमेता॥ सुनुपुत्रीरिषिवरनेउजेता॥ वीरभावदसकंधरजुझिहि॥ प्रानउ

लंकां० गए नेति नहि वूझिहि ॥ सीय सोक संकट गे छूटिहि ॥ वानर भालु राज घर लूटिहि ॥ सुरस्म निभूषन वसन विमाना ॥ भोग करिहि वानर कुल नाना
२२ ना ॥ दो ॥ राज विभीषन पाइहे अमर कल्प निरवाहि ॥ भावि वस सुख दुख जगत उपदेसी कछु काहि ॥ २०० ॥ चौ ॥ मुनि वचनन न केमा हिय प
रतीती ॥ अनुभव सदा हारि अरु जीती ॥ तुम पुत्री परिहरि अव सोका ॥ पति संग तुरित सा जु परलोका ॥ जाकु राम यह पति सिर लागी ॥ ताजि
स कोच सिर आन कु मांगी ॥ होइ लाज नहि आजु कन्नषरण ॥ समैही न्रगुनन नहि न दूषन ॥ एक नारि व्रत रघुपति केरी ॥ लषन सु
जस तै सुने घनेरी ॥ हे पुनि समुर विभीषन तोरा ॥ वालि सुअन है वालक मोरा ॥ जामवंत मंत्री सुग्रीवा ॥ दुविद मयंद महावल सीवा ॥
जानि य व्रह्मचर्य हनिवंता ॥ शिव स रूप भै हर भगवंता ॥ सदा नेति रत राम नरेसा ॥ तहा जात कहु कवनि कलेसा ॥ दो ॥ विदित तोहि प
ति भुज लिषित लछमन राम प्रभाव ॥ हम कछु कहा रिषि भाषित अव विलंव जनि लाव ॥ २०१ ॥ चौ ॥ सुनत सा सुहित की मुख वानी ॥ जा
उं राम पहं अस मन ठानी ॥ वार वार चरनन्ह सिर नाई ॥ चली जहां लछिमन रघुराई ॥ देषि कटक भालु कपि केरी ॥ सिंधु सुवेल मही ध राम
र घेरी ॥ उमगो उमन कु महोदधि दूसर ॥ हरित पिंगक पिधु मिल धूसर ॥ लोम लालि सा सकि अन हेरी ॥ मनकु लपट वडवानल केरी ॥ सि २२
रित रुधर भुज सह जभयंकर ॥ जेहत हं प्रगट होहि जनु जलधर ॥ लछिमन सेस सु अंक सीस धरि ॥ कटक जलधि सो वत राघो हरि ॥ अछे
वटत हवा टविभीषन ॥ अस सुकृति श्रुति सुनान दीषन ॥ दो ॥ देषत उरी सिलोचना धीर जधरति व होरि । महाराज रघुवर हि को विनै सुनाइ

हिमोरि॥१०२॥चौ॥वानरसकलउठेअसवोली॥अरिपुरतेआवतएकडोली॥जानिपरतरावनअववूझा॥भौमतिमेघनादजवजूझा॥हठ
जसीतहिदीन्हपठाई॥तजहुसोचअवमिटीलराई॥जेहिलगिप्रगटकीन्हपुरआगी॥वाध्योसेतुहेतुजेहिलागी॥सोसीताजौंविनुश्रमपाई॥जानव
विधिअनकूलअघाई॥विजैरामलछिमनकहंआएउ॥सुजसवीरवानरकुलपाएउ॥विरहरामलछिमनकरछूटेउ॥विनुकलेसलंकागढ
टूटेउ॥जुगजुगकीरतिरहिहिहमारी॥कतरनकतहमलघुवनचारी॥दो॥एहिविधिमनविचारकरिदेइढीकमेनमाहि॥भएउकाजरघुरा
जकरवातदुसरीनाहि॥१०३॥चौ॥पैठतकटकअतिहिसकुचाई॥त्र्यनाचिन्हाराजिमिपरथरजाई॥आगेजाइदेषिरघुवीरहि॥छविमेस्यामलगौ
रसरीरहि॥मरकतकनकछविहिअनुनिदत॥धन्यसोजनमहिमाजोवेदत॥मत्तगयंदसुएउभुजदण्डा॥धनुषवानअसिधरनप्रचंडा॥उर
विसालअतिउनितकंधर॥कंवुकंठरेषाघसन्नतर॥मुरवछविकीउपमाकविजोहै॥ससिसरोजसमकहेनसोहै॥दसनपांतिकिकांतिक
हैको॥ललकतमनपरतरनलहैको॥देषतअधरनकीअरुनाई॥विंवाफलवंधूकलजाई॥सुकतुएउहिनासिकालजावै॥षकेसुकविपट
तरनहिपावै॥दो॥छविमैगुनमैतेजमैपरमउदधिअवगाह॥जहानपावैहेपारसुरकोवरनैकविघाह॥१०४॥चौ॥भ्रकुटीकुटिलकपोलसोहा
ए॥सीसजटाकेमुकुटवनाए॥भालविसालतिलकजुतसोहै॥ध्यानसमैमुनिमानसमोहै॥वलकलवसनत्रोनकटिवांधे॥करसरसुभगसरासन
कांधे॥वीरासनआसनम्रगछाला॥नवपल्लवप्रसूनकेमाला॥चरनसरोजवरनिनहिजाही॥जहमुनिमधकरसदालोभाही॥प्रातभईजे

लंका २३

हियलतेगंगा॥श्रुतिपुरानकहहकथाप्रसंगा॥नवहिमहेसविरंचिजाहिकहं॥लोचनगोचरहोइकाहिकहं॥जनआरतभंजनकहंजोहि
त॥भवसागरतारनकहंवोहित॥दो॥प्रनतपालविरदावलीइन्हचरनन्हकेवानि॥सोकहरनिसंसैदलनिकरनिसुमंगलषानि॥
१०५॥चौ॥करजोरेअंगदहनुमाना॥दुविदमयंदकुमुदवलवाना॥जामवंतकपिपतिवलसीला॥रिषभसुषेनसहितनलनीला
महावीरवानरसवराजहिं॥लषनविभीषनदुहुंदिसिगाजहिं॥अमितभागपसरवरुपसुसेवक॥चितवहिंरूषरघुनंदनदेवक॥
सभामध्यसोभितरघुनंदन॥कीन्हेसकलनिरषिनिजदर्पन॥करतिदंडवतिसीसधरिधरनी॥सुचरितकथाविभीषनवरनी॥पुत्र
वध्यदशकधरकीहै पतिदेवतासुलोचनतीहै॥मेघनादकीनारिसुशीला॥यहगतितवविरोधकीलीला॥छ॥दो॥मुएपानपतिभु
जहिभाकहिसमुझाएसिवोहि॥महाराजरघुवंसमनिजाचनआइतोहि॥१०६॥चौ॥करतिप्रनतआरतनहिथोरे॥करुणावचनकहति
करजोरे॥छं॥परसतपदपावनसोकनसावनपुनितभइतपपुंजसही॥देषतरघुनायकजनसुखदायकसनमुखहोइकरजोरिर
ही॥अतिप्रेमअधीरापुलकसरीरामुखनहिआवैवचनकही॥अतिसैवडभागीचरननलागीजुगलनयनजलधारवही॥धीरजमनकी
न्हाप्रभुकहंचीन्हारघुपतिकृपाई॥अतिनिर्मलवाणीअस्तुतिठानीग्यानगम्यजैरघुराई॥मैनारिअपावनिप्रभु[illegible]जगपावनरावन
रिपुजनसुखदाइ॥राजीवविलोचनभवभयमोचनपाहिपाहिसरननआइ॥भुजमोहिसिषदीन्हाअतिभलकीन्हाप्रेमअनुग्रहमैमाना

राम २३

२४ देषेउभरिलोंनहरिभवमोचनइहैलाभसंकरजाना॥विनतीप्रभुमोरीमैमतिभोरीनाथनवरमागउंआना॥पदकमलपरागार
सअनुरागाममनमधुपकरैपाना॥एहिभांतिसुनैनाअस्तुतिवैनावारवारहरिचरनपरी॥जोअतिमनभावासोवरपावाचर
ननाइभुजसीसधरी॥दो॥असप्रभुदीनवंधहरिकारनरहितकृपाल॥तुलसिदासप्रभुताहिभजुछाडिकपटजंजाल॥१०६॥चौ॥तुम
अंतरजामीभगवाना॥प्रभुतवआदिअंतअवसाना॥करुणावचनसुनारघुवीरा॥पुलकरोमभएसिथिलसरीरा॥देउंजिआइतोर
पतिआजू॥भुजकुलंककलपशतराजू॥छाडुसोचअवमनहरषाहू॥तुरितभवनअपनेफिरिजाहू॥सुनिअससत्यसिंधकीवाते॥मन
महवनचरभालुडेराते॥कहिनसकहिकछुप्रभुरुषदेषी॥कहाकरिहिकरतारअलेषी॥सीयसोचकरफलनहिहोइहि॥जोकरिकृपारा
मएहेजोइहि॥दो॥राजविभीषनलंककरकरिहहिकेहिविधिभाइ॥समुझिवएरघननाइजवगहिहिसरासनजाइ॥१०७॥चौ॥सुरव(
रुषलषिकापिकीसवजाना॥प्रनतपालसरवज्ञसमाना॥देषिवहुतरघुवरकीछोहू॥विनैकरतिदसकंधपतोहू॥तुमउदारदेवैस
वलायक॥करुणामयदेषियरघुनायक॥महूंविचारकीन्हमनमांही॥जीवनतेयहमरनसराही॥भुजवलजीतिलोकवसि
कीन्हे॥चौदहभवनजीतिजसलीन्हे॥रनतीरथजाचकविधिकीन्हे॥प्रानदानलछिमनकरदीन्हे॥अवनउचितवितदेअपहारा॥
तेहिपरअधिकजोदरसतुम्हारा॥जानीमहूंमरोसतसाधी॥मिलवतुमहिजसमिलैसमाधी॥दो॥निर्मलअतिअवसरभएउसुनि

लेका यसत्यरघुवीर ॥ तुमहिमिलेनहिहोइभवयथासिंधगतनीर ॥१०८॥ चौ ॥ मनकीजाननहारसुदेवा ॥ भवसागरनाघहिपहिषे
२४ वा ॥ लीन्हेउरिषभकपीसवोलाई ॥ मेघनादसिरदीन्हमगाई ॥ पाइछ्तारथमानेसिआस ॥ मिटाविरहसंभवपरिताप ॥ अचलपोछ
तिमुखकीधरी ॥ कहोममप्रानसजीवनमूरी ॥ देषिकहतसंदेहसुग्रीवा ॥ भुजमहिलिषइसोमोहिनसीवा ॥ हसेवदनतोयहतियसो
ची ॥ नातरुनिसिचरमायानाची ॥ कतयहज्ञानमृतकभुजगावै ॥ मुनिवरसाधेऊंनहिपावै ॥ प्रभुअसकहेउहसिहियहसीसा
कियकुकुतर्कनउचितकपीसा ॥ दो ॥ सिरसोकहतिसिलोचनाहसकुवेगिममनाथ ॥ नातरुप्रीतिनमानिहोंलिष्याजोतुमरे
हाथ ॥१०९॥ चौ ॥ छिनकविलंवकीन्हनहिवोले ॥ मृतकसोमुखमुदितनहिषोले ॥ पुनिपुनिकहतिसोनागकुमारी ॥ अमित
भएरनमहकीमारी ॥ लगेउलषनसरछोभवढावहि ॥ प्रभुसमीपकतमोहिलजावहि ॥ जौंमनवचनकर्मएहदेही ॥ पतिदेवर
तानहिआनसनेही ॥ तौप्रभुसभावीचसिरवोलै ॥ रहिजाइहिजगसुजसअमोलै ॥ जौंजनतिउतवयहगतीसांई ॥ वोलि राम
पठवतिउपितहिसहाई ॥ सुनितियवचनहसेउटिसीसा ॥ चौकेचकतभालुभटकीसा ॥ हसेउठठाइवदनसवदेषत ॥ विस्म २४
यभएउसकलजनपेषत ॥ कुलिससहितपुनिसुनिनहिजाई ॥ रहेउसोवदनवड्डरिअरगाई ॥ सकुचकपीसहितोषेउना
री ॥ वडआचर्यभएउवनचारी ॥ यहसछ्याकपिपतिसिरनाई ॥ कारणकवनहसोसिरसाई ॥ दो ॥ सीसपाइप्रभुचरणगहि

वहुविधिविनै सुनाइ॥ आजुकदिनरनपरिहरियममहितकोशूलुराई॥११०॥चौ॥ वहुरिविभीषनपदहिनमतसो॥ रघुवरगु
णगणहृदयरोमितसो॥ तुमपितुसमदसकंधरभाई॥ एहिकुलकैतोहिलागुवडाई॥ मुनिपुलस्तिपरिवारकदीपक॥ पाएहुफलरघु
वीरसमीपक॥ मह्नमोहवसअनभलमानेउ॥ गयानमुएउतवगुणपहिचानेउ॥ जुगजुगकरवअकंटकराजू॥ सहितसुकीरतिसुकृ
तसमाजू॥ सुमिरततुमहिसुजनगतिपाइहि॥ रघुपतिचरितसंगकरिगाइहि॥ सुनतविभीषणकरुणाभारी॥ प्रगटकरतसमयअटका
री॥ कालकर्मगतिकहिसमुझाएउ॥ चलीतुरतगुरआयसुपाएउ॥दो॥ वोहरकरिकपिकटकतेफिरेंविभीषनआपु॥ विसरेउ
दसकंधरवएरहोतनिरषिसंताप॥१११॥चौ॥ सिरचढाइपालकिवहुसोउ॥ रघुपतिकृपाप्रभाववडिजोउ॥ हृदयराषिमूर
तिघनस्यामहि॥ रसनारटतनिरंतरनामहि॥ सरितसिंधुसंगमजहपावन॥ यहसुधिपाइआइगएरावन॥ संगमदोदरिस
वरनिवासू॥ मनहुंसोकरविकिरिनिप्रकासू॥ पाइरजायसुसेवकधाए॥ चंदनअगरभारवहुल्याए॥ रचिहढदारुणचितावना
ए॥ जनुसुरलोकनिसेनिलाए॥ करिप्रनामसवजनपरितोषे॥ धीरजधरिसुमिरतसतचोषे॥ सिरभुजधरिवैठीकरआसन॥ भ
इजनुजोगासिद्धकरवासन॥दोम॥ दीन्हअगिनिज्वालावढीलपटगगनलपटाई॥ लखीनकाहूंजाततेहिसुरपुरपहुची
जाइ॥११२॥चौ॥ सुतवधदेषिदशाननजवही॥ मूर्छितभएपरेमहितवही॥ दूषितहृदयनयननभरिआवा॥ जनुसेरमनिअहिरा

लंका जगवावा॥हासुतसंततअग्याकारी॥करिविलापदसकंठपुकारी॥सक्रआदिजीतेऊसवदेवा॥सुरमुनिनागकरहिसवसे
२५ वा॥दूसररहेउनभुजवलदापा॥सर्गभूमितलततेऊप्रतापा॥एहिविधिकरिविलापलंकेसा॥भएउतेजहतसुनुउरगेसा॥मंदोदरीरो
दनकरभारी॥उरताडनवहुभांतिपु[illegible]कारी॥नगरलोगसवव्याकुलसोचा॥सकलकहहिदशकंधरपोचा॥दो॥तवलंकेसअनेक
विधिसमुझाएसवनारि॥विश्वरूपपरिपंचसवदेषहुहृदयविचारि॥१२३॥चौ॥तिन्हहिज्ञानउपदेसेउरावन॥आपुनमंदकथासु
भपावन॥परउपदेसकुशलवहुतेरे॥जेआचरहितेनरनघनेरे॥देषिचरितप्रनीतसुरगावहि॥वरषिसुमनदुंदुभीवजावहि॥१
तासुक्रपाकरिनिसिचरनाहा॥भएउसोचवसअतिउरमाहा॥सचिवआइसवलगेवुझावन॥वादिविषादकरियजियरावन
सुतवितनारिविविधिसुखकैसे॥उपजहिघटाजाहिनभजैसे॥तडितदमकिदेषियघनमाही॥रहहिनथिरतेवहुरिछपांही॥य
हजियजानिसुनियदसभाला॥वचहिनकोउजगआएकाला॥अवप्रभुजनननविचारियसोई॥रिपुकरनासजवनिविहोई॥ राम
वचनसुनतकिछुगेसुखमाना॥कालविवसजिमितीरथग्याना॥दो॥लागेउकरननविचारतववहुप्रकारदससीस॥समुझिहृ २५
दयमहिरावनहिआएजहमदुईस॥१२४॥चौ॥चौदेउचारिनिसितहतववीती॥संध्यावंदनकीन्हसप्रीती॥लागेउकरनध्यानदस
सीसा॥वहुरिहरषितोरेकरवीसा॥सीवसेवकसोअतिअनुरागी॥सुनुषगेसतेहितेवडभागी॥अकर्षणमंत्रजपेउदशभा[illegible]ला॥अहिरा

वनचितडोलुपताला॥ लगेउ करन सो अस अनुमाना॥ किमि कारन दशमुख अकुताना॥ निसिचर नाह भुवन वस जाके॥ जीतन क
हन वीर कोउ ताके॥ मन क्रम वचन आन नहि सेवी॥ धरेउ ध्यान उर कामद देवी॥ चलेउ वज्जुरि आयो सो तहवा॥ शिव मंडप रावन रह जहवा॥ नि
सिचरपति कहते दससिर नावा॥ कारि गहि निज आसन वैठावा॥ दो॥ अहिरावन तव रावनहि पूछेउ कुशल सप्रीति॥ प्रथम कही ते सो कथा भ्र
गिनी कीन अनीति॥ ५५॥ चौ॥ वध षरदूषण जिमि सुधि पाई॥ मारिच कपट मृग कथा सुनाई॥ कहेसि वज्जुरि सीता कर हरणा॥ पवनतने
बल लंका दहना॥ सेतु वांधि जिमि प्रभु चलि आए उ॥ वालि तनै संवाद सुनाए उ॥ अनिप अकंपन अरु अतिकाया॥ परे समर महसुत अ
हि राया॥ तात कुशल अव आइ सिरानी॥ कटक निसाचर सकल षोटानी॥ कुंभकरण घननाद मारे॥ राम लषन तेम नुज विचारे॥ आने
उ वोलि तेहि ते निज पासा॥ करु सोइ जतन होइ रिपु नासा॥ सुनत वचन कह केतिक वाता॥ हरि लै जैहौ दूनौ भ्राता॥ ले पताल देवि हि
वलि देउं॥ जस मरण निसिचर महं लेउं॥ लेइ जव जावे उं जाने कुंतव ही॥ रवि समते ज होइ हि निसि जवही॥ दो॥ कहि अस वचन प्रवोध
करि सीस नाइ वुल भाषि॥ आयउ रघुपति कटक तव निज देवी उर राषि॥ ५६॥ चौ॥ सून न करा निसि अति अंधियारी॥ मरकट भट जागहि
तरु भारी॥ कहहि जैति जै जैति कृपाला॥ अतिहि अगम देषिय जनु काला॥ तहं मारुत सुत रचेउ पाई॥ निज लंगूर कि कोट वनाई॥ सो सो
भा कछु वरनि न जाई॥ जनु भुजंगपति रहे तहं आई॥ अरु जिमि देषियसे लसमाना॥ दरवाजे कत मुख हनुमाना॥ देषि हृदय अहिराव

लंकां० २६

एहारा॥ जिमिहिम उदैनहिमसैसारा॥ एकौजगुतिनमन ढहरानी॥ कपटवेषतहकीन्हभवानी॥ वेषविभीषनसव अनुहारी॥ पव
नुसुअनपहगाछलकारी॥ दो॥ सहजप्रतापीपवनसुतपुनिसुरपतिपतिदास॥ तिन्हहिनिसरिचलेराममुहंमूढहदयानहित्रास॥ ११७॥
चौ॥ मरमनजानैकछुसुतपवना॥ नृपविभीषणकारितहगवना॥ गाढभएउवोलेउसुनुभ्राता॥ चलेउंजहांकपालजनत्राता
मैरघुपतिसनआयसुपाई॥ संध्याकरणगएउंसुनुभाई॥ तेहितेतुरितचलेउप्रभुपाही॥ भैविलंवजनिरामरिसाही॥ स
त्यवचनकपिनिजमनजाना॥ सुनुषगेसभावीवलवाना॥ कपटचतुरगतिजानिनजाई॥ परमनूहरैहरएधनभाई॥ १
आयसुपाइगयोसोतहवा॥ फनपतिप्रभूदूनौरहजहवा॥ कपिपतिजामवंतनलनीला॥ वालितनैसुखेनवलसीला॥ दो॥
दुविदमयंदकपीसगननगजगवान्तकपिवीर॥ सहतविभीषनअपरभटसोएसवरणधीर॥ ११८॥ चौ॥ तहांमध्यरावनससिरा१
ह्लू॥ एकसंगसोएफनिमनिनाह्लू॥ दहिनेदिससोवतरघुनाथा॥ अनुजवामदिसतेहिपरहाथा॥ प्रभुपरकरपुनिराजतकेसे॥ जा राम
तरूपपरफनिमनिजैसे॥ कपिसवभएजिमिसागरछीरा॥ तहंसोएमानहुदोउवीरा॥ सुभगवानधनुधरेवनाई॥ लषनसहितस २६
मीषरघुराइ॥ अहिरावनमनकीन्हप्रनामा॥ देषिरामघनसुंदरस्यामा॥ ब्रह्मादिकजेहिध्याननपावहि॥ मुनिमहेसप्रजामनलाव
हि॥ कौरहिविविधिविधिजोगविरागी॥ रटहिनिरंतरनिसिदिनजागी॥ सोप्रभुनेदेषाभरिलोचन॥ कृपासिंधसेवकभैमोचन॥ वकु१

रिहृदयतेहि कीन्ह विचारा॥ रावनकाजकरौ अनुसारा॥ कछुनिजमायाकृतगुनिआइ॥ कवनीभांतिजाहिदोउभाई॥दो॥मोह
नितेमोहोसिसवहिंयंमनतेमुखमूंदि॥भएउ आदिसुयउचाटकरि प्रभुहिचल्यालेकूदि॥११९॥चौ॥एहिविधिप्रभुहिगयोलेसोई॥नर
भमारूगप्रकाशअतिहोई॥सोप्रकासजवरावनदेषा॥वचनप्रमानतासुकरलेषा॥मनमहुहरषकरैअतिभारी॥अहि
रावनलेगाअसुरारी॥लेनिजलोकगयोछनमाही॥रोरभएउतवकपिदलमाही॥जागेवानरश्रीहतफारी॥देषियजिमिसरि
ताविनुवारी॥ अरुदेषियजसनिसिविनुचंदू॥तेजहीनवासरजिमिइंदू॥रविविनुदीनजीयविनुदेहा॥जिमिदीपकविनुदेषियगे
हा॥एकहिएकलगेतवसछेन॥कहागयेत्रैलोकविभूषन॥दो॥सोधोसवहिनकटकुमहुनहिपाएदोउवीर॥भयव्याकुल
सवभालुकपिजनुजलचरविनुनीर॥१२०॥चौ॥सकलकहहिविधिकादइकीन्हा॥रघुपतिविनाप्रानचहलीन्हा॥
सोकग्रसितधरिसकहिनधीरा॥कहारामलछमनदोउवीरा॥करुणाकरैकपीसअपारा॥वनीवातविधिकाहविगारा
कटकनिसाचरसकलसंघारी॥रहाएकरिपुरावनभारी॥सोनरहतप्रभुसरकेलागे॥भाइकुहमसवकवनअभागे॥
कवहूंकैदससीसहिजीतहि॥कतरकवनहमदेवैसीतहि॥एहकहिविकलमुर्छिमहिपरेउ॥लागेउवज्रसएलजनुगिरेउ
बिभीषणगतिकहानजाई॥फेकरतवछाजिमिधेनुलवाई॥दो॥सहितपवनसुतरीछपतिदुखमनभावकुभांति॥षगपतिस

 रुनकरहुंकछुतमअपारतेहिराति॥२१॥चौ॥पवनतनैपुनिकहसवपाही॥विसमयएकहोतमनमाही॥कोउएकअ
 एविभीषणवेषा॥प्रभुकेनिकटजातमैदेषा॥पूछतवचनकहेसिअतिनीकी॥कपटनजानैनिसिचरजीकी॥वूचनकहतवो
लेलंकेसा॥अहिरावनलेगाअवधेसा॥पताललोकवसतहैसोई॥ममतनुवेषअवरनहिकोई॥महावलजानैवहुमाया॥
वोहिनिरखेदससीसपठाया॥जेहिवलहोइउहांसोजाई॥ताहिजीतिआनैदोउभाई॥कहैंभालुकपिसुनुहनुमाना॥तववलतात
सकलजगजाना॥वेगिसोजतनविचारहुतात॥कृपासिंधुआनहुदोउभ्राता॥दो॥विलषिकहेउकपीसतवमारुतसुतसुनुवा
त॥विनुरघुपतिधगजीवनपलजुगसेसमजात॥२२॥चौ॥तृषितमीनविनुवारिदुषारी॥तैसेहहमसवभएहनुमाना॥सीतासुधि
जिमिऔसधआनी॥तेहिप्रकारआनहुगुनषानी॥यहसुनिवहुरिपवनसुतवोला॥चितथिरकरहुसैननहिडोला॥भुवनचारिद
सतीनिउलोका॥आनिहौंप्रभुहितजहुतुमसोका॥तवतेसजगरहेहुसवभाई॥लरेहुकालजौरनचढिआई॥यहकहिगर्जीचलेउह
नुमाना॥प्रलयसमयकेमेघसमाना॥चलेजातएकतरुतरगएउ॥गीद्धिनिगीद्धकहतअसभएउ॥दो॥गीधिनिरहीगुरुभीनी
वोलीपियसोवैन॥आनहुआमिषमनुजकरषाउंहोउमनचैन॥२३॥चौ॥तासुवचनसुनिषगअसकहेऊ॥अहिरावनराघो
लैगैउ॥देइहिवलिदेविहिसोजाई॥वडेभाग्यआमिषसोपाई॥कौनेहुजतनदेवमेंआनी॥असकहिगीधिनारिसनमानी॥जवहिपव

नसुत यह सुधि पाइ॥ चलेउ हृदय सुमिरत रघुराई॥ तुरित पतालहि तेहि छन गैउ॥ अहिरावन पुर पैठत भएउ॥ द्वारपाल मकराध्वज
कीसा॥ कपि सन डाटि कहत वडु रीसा॥ निदरि चलेसि मोहि तोहि डर नाही॥ जिमि दीपहि न पतंग डेराही॥ मै मारुतसुत करहौ वा-
लक॥ स्वामिभक्त भंजन मुह वालक॥ सो॥ सुनत वचन हनुमान विस्मै वस वोलत भए॥ अरे मूढ अज्ञान मोरे सुत सपने हु नही
॥२४॥ चौ॥ कहत वचन सठ तोहि न षोरी॥ कामविवस कव मति भइ मोरी॥ मम सुत होसि मूढ केहि काजा॥ अंत नाक हत तोहि
न लाजा॥ केहि प्रकार ते मम सुत भए सी॥ निज उतपति मो सन किन कहसी॥ सुनत कहै मकराद्वज वचना॥ किहेहु तात जव लंका म५
दहना॥ तव आएहु वलि जलधि समीपा॥ भएउ प्रसेद तुमहि कपि दीपा॥ छुटि प्रसेद सागर महगएउ॥ सो झषपिएउ तहां मै भएउ॥
एहि प्रकार तव सुत मै ताता॥ गोंवो नहि निज पितु अरु माता॥ अहिरावन सेवा मै केउं॥ प्रभु आयसु रहि द्वारै देउं॥ दो॥ सत्य वचन हनु
मान कहि पूछा पुनि फिरि वात॥ आनेउ राम लषन कहं काह करत है तात॥२५॥ चौ॥ कहहु तात तेहि अस्थल नाउं॥ जानत हो मै निज प्र
भु ठाउं॥ यह वृतांत जानत हो ताता॥ अस मै श्रवन सुना कछु वाता॥ सीतापति औ फनिपति साथा॥ सो ले आयो निसिचर नाथा॥ करत
सो अहै होम दह आजू॥ देवि हि हि वलि देइहि निज राजू॥ जो कछु निज श्रवन सुनि पाएउं॥ तात तुमहि मै सकल सुनाएउं॥ निज प्रभु काज ला
गि दुख सहहू॥ मोही सन सत्य वचन किमि कहहू॥ जान कहहु पै जान न देउं॥ प्रभु आग्या तजि अजस न लेउं॥ सुनि अस पेलि चलेउ हनु

लंका मानाभ॥ भए उक्रोधमकरध्वजवलवाना॥ दो॥ कपिकहह नेमि मुष्टिका कपि पुनि मारा ताहि॥ एकहिएकहनै तव वल जुग सम घटि ना
२८ हि॥१२६॥ चौ॥ एकहिएक सकै नहि पारी॥ मारुतसुत सुत दोउ भट भारी॥ सुत कि पोछि सुत वाधि भवानी॥ चले वझुरि विलंव वाडि जा
नी॥ धरि लघु रूप हो मगै देषा॥ जीव सजीव परै नहि लेषा॥ देवी करतह मे उपरहइ॥ आनित घन वझु को कहि सकई॥ विविधि भांति
मे वापकवाना॥ धरे आनि देवी अस्थाना॥ मालिनितहां सुमन लै आई॥ सुमन मध्य प्रविसे कपि जाई॥ सुमन छुते अति हरु तह रु आ
ई॥ सो लै सुमन मंउपहि आई॥ सुमन सकल देवी पर चढेउ॥ विकट रूप तह तव कपि वएउ॥ दो॥ छुवत चरन देवी तव धरनी गई समाइ॥
वदन पसारि ठाट भए कपि छवि [illegible] निरषि न जाइ॥१२७॥ चौ॥ रूप देषि भए आनंद भारी॥ करहि विचार निसाचर राजू॥ करि प्रनाम त
व पूजा करही॥ जो कछु आव सो कपि मुष पर ही॥ रही जो सकल वस्तु समुदाई॥ वचीन एकौ सव कपि षाई॥ कपि षेला रत तह भ
ए अनुसारा॥ भा चहहि निसिचर कुल संघारा॥ अहिरावन उर भा सुष कैसे॥ चढे काधहोइ वलि पसु जैसे॥ सव नो होम सिद्ध जव जा राम
ना॥ लछिमन राम तुरित तह आना॥ ठाढ कीन्ह तहं प्रभु कहं आनी॥ निसिचर गहे वझु आयुध पानी॥ गहे गदा कोउ अरु धनु २८
नुवाना॥ शक्ति सूल तरु आरि कृपाना॥ दो॥ तोमर मुदगर परसु असि पास फास अरु वेद॥ वो उन षर्व धनुष सर देषत रहे न चे
त॥१२८॥ चौ॥ माया वल ते सकल विचछन॥ अति विकराल तासु को लछन॥ एहि विधि सकल वीर तह रहही॥ अहिरावण अ

ग्पा अनुसरही॥ आयसु पाइ षर्ग तिन्ह काढे॥ मरनु कहं प्रभु पर भए ठाढे॥ कोउ कह राज नेति अनुसरहू॥ तीनि दंड विलंब अब क
रहू॥ सुनि असमूढ लगेश मि कहई॥ सुमिरु जो कोउ तोरे कछु अहई॥ नाहित काल पहुंचु अब आई॥ निसि सपना सम कहहु दोउ भाई॥
कहहि मूढ प्रभु कह वहु वानी॥ कहत सकुच मोहि होत भवानी॥ दो॥ फनपति चितवहि राम कहं रामनिरषि अहिराज॥ प्रभु कर कौतु
क कहि यकि मि सुनहु गरुड षगराज॥२९॥ चौ॥ पुनि दुहु वंधु मन कीन्ह विचारा॥ जपै सकल जग नाम हमारा॥ एहि अवसर र
चाहिय हनुमाना॥ निकट न अहै वीर वलवाना॥ एहि विचारि केहि सुमिरन करही॥ सो वरि होइ जो विधि कछु करही॥ हसि सव नै
न वमारन लैउ॥ घनसमान कपि गर्जत भएउ॥ निसिचर सकल त्रसित भए भारी॥ कहहि वचन निज हृदय विचारी॥ अहिरावन भल की
न्ह न काउ॥ आनेउ इहां मनुज सुरराउ॥ तेहि ते देवि क्रोध भर आजू॥ अव भा सव कर परम अकाजू॥ भए ते जहत निसिचर झारी॥ दु
सरे कपि गर्जेउ अति भारी॥ दो॥ प्रगट रूप करि पवनसुत अट्टहास गंभीर॥ अति भै त्रसित निसाचर गुनहु उमा मतिधीर॥३०॥ चौ॥ उ
गम गभै सव इमि अभिमानी॥ मारुत वहहि जिमि साएर पानी॥ तेहि छन कपि लीन्ह हनुमानू॥ कटन लगेउ रसि र भुज जानू॥ काहू हि
ना कस्यवन विनु कीन्हा॥ धरि पद डारि अनल मह दीन्हा॥ निज लंगूर कि पेट वनावा॥ जेहि ते कोउ भाजै नहि पावा॥ एहि विधि स
व निसिचर संघारे॥ अहिरावन तव वचन उचारे॥ रे कपि ढीठ त्रास नहि तोही॥ अहिरावन मै जानन मोही॥ जंवुमाल कहं जि

मितु ममारा ॥ औ रावण सुत हते ह्कु बेचारा ॥ दो ॥ कालनेमि समसे नही सुनह्कु वचन हनुमान ॥ असकहि षर्ग प्रहारेसि कपि तन
वज्र समान ॥ १३ ॥ चौ ॥ लै असि ताहि पवनसुत मारा ॥ सीस काटि अनल महडारा ॥ पुरनाह्कु ति करि तहा सो सीसा ॥ प्रभु कहं लेइ
चले उत तव कीसा ॥ मकराध्वज तव विनती कीन्हा ॥ वंधन छोरि राज तव दीन्हा ॥ इहां कराज करह्कु तुम ताता ॥ सेएह्कु मम प्रभु
दूनौ भ्राता ॥ असकहि कपि निज दल महं आवा ॥ हरषी कटक परमसुख पावा ॥ मृतक सरीर प्रान फिरि आवा ॥ गइ मानि फनि क
मनह्कु फिरि पावा ॥ विछुरा मिलै वह्कुरि जिमि आइ ॥ इमि सव भए निरषि दोउ भाई ॥ मिलेउ कपीस चरन गहि माथा ॥ पुनि पद गहे उनि साच
रनाथा ॥ दो ॥ जामवंत अंगद सहित मिले भालु अरु कीस ॥ सनमाने एय वचन कहि लषन कोसलाधीस ॥ १३२ ॥ चौ ॥ वह्कुरि सवन
भेटे हनुमाना ॥ कहहि तात तुम राषेउ प्राना ॥ देवन्ह सुमन वृष्टि तव कीन्हा ॥ प्रमुदित हृदय दुंदुभी दीन्हा ॥ अनुज सहित हरषे रघुवीरा
वोले वचन सुनु तनै समीरा ॥ तोहि समान नहि कोउ हितकारी ॥ सुर मुनि सिद्ध जो कोउ तनुधारी ॥ जस तुह्मारा त्रिभुवन मे भरेउ ॥ सु
नि अस वचन चरन कपि परेउ ॥ नाथ करह्कु तुम मे केहि लेषे ॥ तरनि उचले अगम जल पेषे ॥ तैसे सव प्रताप तव नाथा ॥ सुनि अ
सकपि हिमिलेउ रघुनाथा ॥ कटक सहित हरषे दोउ भाई ॥ तेहि अवसर सुख कहि किमि जाइ ॥ अहिरावन कमरन सुनि काना ॥ भ
एउ तेजहत अति अकुलाना ॥ वचन वान सम लागेउ ताही ॥ संभ्रम मूर्छित परेउ महि माही ॥ मुख सुखाइ लोचन जल वहई ॥

वचननआवपुनिपुनिसिरधुनई॥दो॥मैंतनयातवआइकरिवहुप्रकारसमुझाइ॥मानन्हुमूढकालवसपरमक्रोधकुह
पाइ॥३३॥चौ॥रावनउरअवरैकछुवसेउ॥मेटिकोसकैजोविधिनिर्मयउ॥प्रभुविरोधकरिचहकल्याना॥मूढमोहवसिअ
तिअगपाना॥कृपासिंधसेवकमैहारी॥तेहिविरोधसुखचहसिसुरारी॥निसासिरानिभएउभिनुसारा॥लगेभालुकपिचारिहु
द्वारा॥सुभटवोलाइदशाननवोला॥रनसनमुखजाकरमनडोला॥सोअवहीवरुजाइपराई॥संजुतविमुखभएनभलाई
निजभुजवलमैवैरवढावा॥देहौंउतररिपुचढिआवा॥असकहिमरुतवेगरथसाजा॥वाजेसकलजुझाउवाजा॥चलेवीरस
वअतुलितवली॥जनुकज्जलकीआंधीचली॥असगुणअमितहोहितेहिकाला॥गनैनभुजवलगर्भविशाला॥छंद॥अतिगर्वग
नैनसगुनअसगुनश्रवहिआयुधहाथते॥भटगिरतरथतेवाजिगजचिक्करतभागतसाथते॥गोमायगीधकरालखररवस्वानरोवहि
अतिघने॥जनुकालदूतउलूकवोलहिवचनपरमभयावने॥दो॥ताहिकिसंपतिसगुणसुभसपनेहुमनविश्राम॥भूतद्रोहर
तमोहवसरामविमुखरतकाम॥३४॥चौ॥चलेउनिसाचरकटकअपारा॥चतुरंगीनअनीवहुधारा॥विविधभातिवाहन
रथजाना॥विपुलवरनपताकध्वजनाना॥चलेमत्तगजजूथघनेरे॥प्राविटजलदमारुतजनुप्रेरे॥वरनवरनविरदैतनिका
काया॥समरसूरजानहिवहुमाया॥अतिविचित्रवाहनीविराजी॥वीरवसंतसेनजनुसाजी॥चलतकटकदिगसिंधुरडगही

लंका छुभितपयोधिकुधरउछरही॥उठीरेनुरविगएछिपाई॥मरुतथकितवसुधाअकुलाई॥पवननिसानघोररववाजहि॥
३० महाप्रलयके घनजनुगाजहि॥भेरिनफीरिवाजुसहनाई॥मारुरागसुभटनसुखदाई॥केहरिनादवीरसवकरही॥
निजनिजवलपोरुषउच्चरही॥कहैदिशाननसुनहुसुभटा॥मरदहुभालुकपिनकेटटा॥होंमारिहोंभूपदोउभाई॥असकहि
सनमुखफोजचलाई॥यहसुधिसकलकपिनजवपाई॥धाएकरीरघुवीरदोहाई॥छं॥धाएविशालकरालमरकटभालुकाल
लसमानते॥मानहुसपछउडाहिभूधरवृन्दनानावानते॥नखदशनसैलमहाद्रुमायुधसवलसंकनमानही॥जैराम
रावनमत्तगजमृगराजसुजससवषानही॥दो॥दुहुदिसिजैजैकारकरिनिजनिजजोरिजानि॥भिरेवीरइतरघुपतिहिउतरावनहि
वषानि॥८५॥चौ॥रावनरथीविरथरघुवीरा॥देषिविभीषणभएउअधीरा॥अधिकप्रीतिमनभासंदेहा॥वंदिचरनकह
सहितसनेहा॥नाथनरथनाहिनपदत्राना॥केहिविधिजीतववीरवलवाना॥सुनहुसषाकहकृपानिधाना॥जेहिजैहो राम
इसोसंदनआना॥सौरजधीरतेहीरथचाका॥सत्यसीलदृढधजापताका॥वलविवेकदमपरहितघोरे॥छमाकृपास ३०
मतारजुजोरे॥ईसभजनसारथीसुजाना॥विरतिचर्मसंतोषकृपाना॥दानपरसवुधिशक्तिप्रचंडा॥वरविज्ञानकठिनकोदंडा॥
अमलअचलमनत्रोनसमाना॥समयमनेमसिलीमुखनाना॥कौंचअभेदविप्रगुरपूजा॥एहिसमविजेउपावनदूजा॥

सरवाधर्ममयअसरयजाके॥ जीतिनसकहिंकतहुंरिपुताके॥दो॥ महाअजैसंसाररिपुजीतिसकैसोवीर॥ जाकेअसर
थहोइदृढसुसुनहुसरवामतिधीर॥दो॥ सुनतविभीषनप्रभुवचनहरषिगहेउपदकंज॥ एहिविधिमोहिउपदेसदियरामकृ
पासुरवपुंज॥दो॥ उतप्रचारदसकंधभटइतअंगदहनुमान॥ लरतनिसाचरभालुकपिकरिनिजनिजप्रभुआन॥ २६॥ चौ॥ सु
रब्रह्मादिसिद्धमुनिनाना॥ देषतरननभचढेविमाना॥ हमहूंउमारहेतेहिसंगा॥ देषतरामचरितरनरंगा॥ सुभटसमररसदुहुदि
सिमाते॥ कपिजैसीलारामवलताके॥ एकएकसनभिरहिप्रचारी॥ लरतभिरतनहिमानहिहारी॥ मारहिकोटहिधरनियछारहि॥
सीसतोरिसीसनपरडारहि॥ उदरविदारहिभुजाउपारहि॥ गहिपदअवनिपटकिभटडारहि॥ निसिचरभटमहिगाडहिभालू॥ उप
रडारिदेहिवहुवालू॥ वीरवलीमुरवजुध्यविरूधे॥ देषियतविपुलकालजनुक्रूधे॥छं॥ क्रोधेकितांतसमानकपितनश्रवत
श्रोनितराजहीं॥ मदरहिनिसाचरकटकभटवलिवंतघनजिमिगाजहीं॥ मारहिचपेटन्हकाटिदातन्हडाटिलातन्हमीजहीं
चीक्करहिमरकटभालुछलवलकरहिजेहिखलछीजहीं॥ धरिगालफारहिउरविदारहिगलेअंतावलिमेलहीं॥ प्रहल्ला
दपतिजनुविविधितनुधरिसमरअंगनषेलहीं॥ धरुमारुकाटुपछारुघोरगिरागगनमहिभरिरहीं॥ जैरामजोतृनतेकुं
लिसकरुकुलिसतेतृनकरुसही॥दो॥ निजदलविकलविलोकितेहिवीसभुजादसचाप॥ चलेउदशाननकोपितव॥ फि

रछुपति रछुकरि दाप ॥३७॥ चौ॥ भौ अति परम क्रोध दशकंधर ॥ सनमुख चले हूह दै बंदर ॥ गहि कर पाद प उपल प्रहारा ॥
डारहिं ता पर एकहि बारा ॥ लागहि सैल वज्र सम तासू ॥ खंड खंड होइ फूटहि आसू ॥ चला न अचल महा रथ रोपी ॥ रणदु
र्मद रावन अति कोपी ॥ इत उत झपटि दपटि कपि जोधा ॥ मर्दै लागभए उ अति क्रोधा ॥ चले उ पराइ भालु कपि नाना ॥ त्रा
हि त्राहि अंगद हनुमाना ॥ पाहि पाहि रघुबीर गोसांई ॥ यह खल षाइ काल की नांई ॥ तेहि देषि कपि सकल पराने ॥ दस
हूं चाप सायक संधाने ॥ छं॥ संधानि धनु सर निकर छाडेउ उरग उरजिमि लागही ॥ रहे पूरि सर धरनी गगन दिसि विदि
सि कह कपि भागही ॥ भए अति कोलाहल विकल दल कपि भालु बोलहि आतुरे ॥ रघुबीर करुणासिंधु आरत बंधु
जन रछ्छा करे ॥ दो॥ निज दल विचलत देषि त्रैं निज कटि निषंग धनु हाथ ॥ लछिमन चले सकोपि तब नाइ राम पद माथ ॥ १
३८॥ चौ॥ रे खल का मारसि कपि भालू ॥ मोहि बिलोकि तोर मै कालू ॥ षोजत रहे उ तोहि सुरघाती ॥ आजु निपाति जुडा
वौ छाती ॥ अस कहि छाडेसि बान प्रचंडा ॥ लछिमन कि ये सकल सत षंडा ॥ कोटिन्ह आयुध रावन डारे ॥ तिल प्रवा
न सो काटि निवारे ॥ पुनि निज बानन्ह कीन्ह प्रहारा ॥ स्यंदन भंजि सारथी मारा ॥ शत शत सर मारे दश भाला ॥ गिरि शृंगन्हि ज
नु प्रविसहि व्याला ॥ पुनि शत सर मारा उर माही ॥ परे उ धरनि तन सुधि कछु नाही ॥ उठा प्रवल पुनि मूर्छा जागी ॥ छाडेसि ब्र

व्रह्मदत्त सो सांगी ॥ छं ॥ सो व्रह्मदत्त प्रचंड शक्ति अनंत उर लागी सही ॥ परो वीर विकल उठाव दशमुख अतुल वल महिमा रही
व्रह्मांड भवन विराज जाके एक सिर जिमि रजकनी ॥ तेहि चह उठावन मूढ रावन जान नहि त्रिभुवन धनी ॥ दो ॥ देषत धायो पवन सुत वो
लत वचन कठोर ॥ आवत तेहि उर महह तेउ मूष्टि प्रहार प्रघोर ॥ १३९ ॥ चौ ॥ जानु टेकि कपि भूमि न परा ॥ उठा संभारि वहुरि रिसि भरा ॥ मु
ठुका एक ताहि कपि मारा ॥ परेउ सयल जिमि वज्र प्रहारा ॥ गए मूर्छा वहोरि सो जागा ॥ कपि वल विपुल सराहन लागा ॥ धिग धिग मम पौरु
ष धिग मोही ॥ जौ तैं जियत उठेसि सुर द्रोही ॥ अस कहि कपिल छिमन कहं ल्यायो ॥ देषि दशानन वीस्मै पायो ॥ कह रघुवीर समुझि
जिय ताता ॥ तुम कृतांत भक्षक सुर त्राता ॥ सुनत वचन उठि वैठु कृपाला ॥ गगन गई सो सक्ति कराला ॥ पुनि कोदंड वान गहि धाए
रिपु समीप अति आतुर आए ॥ छं ॥ आतुर वहोरि विभंजि स्यंदन सूल हति व्याकुल किये ॥ गिरे धरनि दस कंधर विकल तव वान शत
वेधत हिए ॥ सारथी दूसर घालि रथ तेही तुरत लंका लेगयो ॥ रघुवीर वंधु प्रताप पुंज वहोरि प्रभु चरनन्हि नयो ॥ दो ॥ उहां दशानन जागि
करि करै लागु कछु येज्ञ ॥ जै चाहत रघुपति विमुख सठ हठ वस अति अग्य ॥ १४० ॥ चौ ॥ इहां विभीषण सव सुधि पाई ॥ सपदि जा
इ रघुपतिहि सुनाई ॥ नाथ करै रावण एक जागा ॥ सिधि भएं नहि मरिहि अभागा ॥ पठवहु देव वेगि भट वंदर ॥ यज्ञ विधंस आवद
सकंधर ॥ प्रात होत प्रभु सुभट पठाए ॥ हनुमदादि अंगद सव धाए ॥ कौतुक कूदि चढे कपि लंका ॥ पैठे रावन भवन असंका ॥ जव ही ज

लंका· ज्ञकरततेहिदेषा॥सकलकपिनभाक्रोधविशेषा॥रनतेनिलज्जभागिग्रहआवा॥इहांआइवगध्यानलगावा॥असकहिअंगदमा
३२ रेउलाता॥चितवनसठस्वारथमनराता॥छं॥नहिचितवजवकपिकोपितवगहिदसनलातनमारही॥धरिकेसनारिनिकाल्हिवाह
रतेआतिदीनपुकारही॥तवउठेउकोपिकृतांतसमगहिचरनवानरडारही॥एहिभांतिकपिनविधंसीछतमखदेषिमनमहहारही॥
दो॥मखविधंसिकुसलसवआएरघुपतिपास॥चलेलंकापतिक्रोधहोइतजिजीवनकेआस॥४१॥चौ॥चलतहोहिअतिअसु
भभयंकर॥वैठहिगीधउडिसीसनपर॥भएकालवसकाहुनमाना॥कहेसिवजावहुजुधनिसाना॥चलेतमीचरऔनिअपा
रा॥वहुगजरथपदातिअसवारा॥प्रभुसनमुखधाएखलकैसे॥सलभसमूहअनलमहजैसे॥इहादेवतन्हविनतीकीन्हा॥दा
रुणविपतिहमहिएंदीन्हा॥अवजानिरामषेलावहुएही॥अतिसेदुखितहोतिवैदेही॥देववचनसुनिप्रभुमुसुकाना॥उठिरघुवीरसु
धारेवाना॥जटाजूटदृढवांधेमाथे॥सोहहिसुमनवीचिविचगाथे॥अरुणनयनवारिदतनस्यामा॥आखिललोकलोचनअभिरा राम
मा॥कटितटपरिकरकसेनिषंगा॥करकोदंडकठिनसारंगा॥छं॥सारंगकरसुंदरानिषंगसिलीमुषाकरकटिकसे॥भुजदंडपीन ३२
मनोहरायतउरधरासुरपदलसे॥कहदासतुलसीजवहिप्रभुसरचापकरफेरनलगे॥व्रह्मांडदिग्गजकमठअहिमहिसिं
धुभूधरडगमगे॥दो॥हरषेदेवविलोकिछविवरषहिसुमनअपार॥जैजैप्रभुगुनज्ञानवलधामहरनमहिभार॥४२॥चौ

एहिविधिचलीनिसाचरअनी॥कसमसातडोलतिअतिधरनी॥देषिचलेसनमुखकपिभटा॥प्रलैकालकेजनुघनघटा॥बहुकृत
रुआरिकृपानचमकहीं॥जनुदहुदिसिदामिनिदमकहीं॥गजरथतुरंगचीकारकठोरा॥गर्जतमनहुंहुंबलाहकघोरा॥कपिलंगूरबिपुलनभछाए॥मनहुंइंद्रधनुउएसोहाए॥उठीधू
रिमानहुंजलधारा॥बानबुंदभैवृष्टिअपारा॥दुहुंदिसिपर्वतकरहिंप्रहारा॥वज्रपातजनुवारहिवारा॥रघुपतिकोपिबानझरि
लाइ॥घाएलभएनिसिचरसमुदाई॥लागतवानवीरचिक्करहीं॥घूर्मिघूर्मिघाएलमहिपरहीं॥श्रवहिसयलजनुनिर्झरवारी॥
भयानितसरकादरभैकारी॥छं॥कादरभयंकररुधिरसरिताबढीपरमअपावनी॥दोउकूलदलरथरेतचक्राअवर्तवहतभ
यावनी॥जलजंतुगजपदचरतुरंगषरविविधवाहनकोगनै॥सरशक्तितोमरसर्पचापतुरंगचर्मकमठघने॥दो॥वीरपरे
हिजनुतीरतरुमज्जावहवहुफेन॥कादरदेषतडरहितेसुभटकेमनचैन॥१४३॥चौ॥मज्जहिभूतपिशाचवेताला॥प्रथ
ममहाझुटनिकरहिकराला॥काककंकलैभुजाउडाहीं॥एकतेछीनएकलेइषाहीं॥एककहहिऐसीकुसमुदाइ॥सठकु
तुम्हारदरिद्रनजाई॥कहरतभटघायलतटगिरे॥जहंतहंमनहुंअर्धजलविरे॥षैचहिआंतगीधतटभए॥जनुवनसीषेल
हिचितदए॥वहुभटवहहिचढेषगषांही॥जनुनावरिषेलहिसरिमाहीं॥जोगिनिभरिभरिखपरसंचहीं॥भूतपिशाचवधूनन
भनचहीं॥भटकपालकरतालवजावहिं॥चामुंडानानाविधिगावहिं॥जंबुकनिकरनिकटकटकटहीं॥षाहिंहुहाहि

लंका अघाहि दपदकी ॥ कोटिन्ह रुंड मुंड विनु डोल्लहि ॥ सीस परे महि जै जै वोलहि ॥ छं ॥ वोल्लहि सो जै जै मुंड धरनी रुंड सिर विनु धाव
३३ ही ॥ खपर निषंग अलुझि जुझहि सुभट सुरपुर पावही ॥ निसिचर वरूथ विमर्दि गर्जहि भालु कपि दर्पित भए ॥ संग्राम अंग
न सुभट सोवहि राम सर निकर हए ॥ दो ॥ हृदय विचारेउ दसवदन भा निसिचर संघार ॥ मै अकेल कपि भालु वहु माया करौ अ
पार ॥ २४ ॥ चौ ॥ देवन्ह प्रभुहि पियादे देषा ॥ उपजा उर अति छोभ विसेषा ॥ सुरपति निज रथ तुरत पठावा ॥ हरष सहित मातलि ले आ
वा ॥ तेजपुंज रथ दिव्य अनूपा ॥ विहसि चले कोसलपुर भूपा ॥ चंचल तुरग मनोहर चारी ॥ अजर अमर मन गति अधिकारी ॥ र
थ आरूढ रघुनाथहि देषी ॥ धाए कपि वल पाइ विसेषी ॥ सहि नहि जाइ कपिन्ह के मारी ॥ तव रावन माया विस्तारी ॥ सो माया र
घुवीरहि वाची ॥ सव काहु मानी करि सांची ॥ देषा कपिन्ह निसाचर अनी ॥ वहु अंगद लछिमन कपि धनी ॥ छं ॥ वहु वालि
सुत लछिमन कपीस विलोकि मरकट अपडरे ॥ जनु चित्र लिखित समेत लछिमन जहं सो तहं चितवहि षरे ॥ निज सेन च राम
कृत विलोकि हसि सर चाप सजि कोसलधनी ॥ माया हरी हरि निमिष महं हरषे सकल वानर अनी ॥ दो ॥ वहुरि रा ३२
म सव तन चितै वोले वचन गंभीर ॥ द्वंद जुद्ध देषहु सकल श्रमित भए अति वीर ॥ २५ ॥ चौ ॥ अस कहि रथ रघुनाथ चला
वा ॥ विप्र चरन पंकज सिर नावा ॥ तव लंकेस क्रोध उर छावा ॥ गरजत तरजत सनमुख धावा ॥ जीतेहु जो भट संजुग माही

सुनुतापसमैतीन्हसमनाही॥ रावननामजगतजसजाना॥ लोकपालजाकेवंदीषाना॥ रवरदूखनकवंधतुममारा॥ ब
धेहु व्याधइववालिविचारा॥ निसिचरनिकरसुभटसंघारेउ॥ कुंभकरनघननादोमारेहु॥ आजुवएरसवलेउनीवाही॥ जोरन
भूम्यतेभाजिनजाही॥ आजुकरोषलकालहवाले॥ परेहु कठिनरावनकेपाले॥ सुनिदुर्वचनकालवसजाना॥ कहेउविहसि
तवक्रपानिधाना॥ सत्यसत्यतवसवप्रभुताइ॥ जलपसिजनिदेषौमनुसाई॥ छं॥ जोनिजल्पनाकरिसुजसनासहिनेतिसु
नहिकरिछमा॥ संसारमैहपुरुषात्रविधिपाटलरसालपनससमा॥ एकसुमनप्रदएकसुमनफलएकफलेकेवललाग
ही॥ एककहहिकरहिनकहिकरहिएककरहिकहहिनआगही॥ दो॥ रामवचनसुनिविहसिकहमोहिसिषावतज्ञान॥ वैरकरतत
वनहिउरेहु अवलागेप्रयप्रान॥ ९४ पा॥ चौ॥ कहिदुर्वचनक्रोधदशकंधर॥ कुलिससमानलागुछाडैसर॥ नानाकारसिलीमुख
धाए॥ दिसिअरुविदिसिगगनमहिछाए॥ अनलवानछाडेरघुवीरा॥ छनमहंजरेनिसाचरतीरा॥ छाडेसितिव्रिपशक्तिषिसिआ
इ॥ वानसंगप्रभुफेरिपठाइ॥ कोटिन्हचक्रत्रिशूलपवारा॥ विनुप्रयासप्रभुकाटिनिवारा॥ निहफलहोहिरावनसरकैसे॥ खव
लकेसकलमनोरथजैसे॥ तवशतवानसारथीमारेसि॥ परेउभूमिजैरामपुकारेसि॥ रामक्रपाकरिसूतउठावा॥ तव
प्रभुपरमक्रोधकेधावा॥ छं॥ भएक्रोधजुध्यविरुध्यरघुपतित्रोनसायककसमसे॥ कोदंडधुनिअतिचंडसुनिमनुजादसवमा

लं०का०
३४

ततत्रसे॥ मंदोदरीउरकंपकंपितकमठभूधरसवत्रसे॥ चीक्करहिदीग्गजदसनगहिमहिदेषिकौतुकसुरहसे॥ दो॥ तानि
सरासनश्रवनलगिछाडेउविसिषकराल॥ रामवानगगनचलेलहलहातजनुव्याल॥ १४७॥ चौ॥ चलेवानसपक्षजनु
उरगा॥ प्रथहिहतेसारथीतुरगा॥ रथविभंजहतिकेतुपताका॥ गर्जाअतिअंतरवलथाका॥ तुरतआनरथचढिषियाना॥
छाडेसिअस्त्रशस्त्रविधिनाना॥ निहफलहोहिसवउद्यमताके॥ जिमिपरद्रोहनिरतमनसाके॥ तवरावनदसशूलचलाए॥ वा
जिचारिमहिमारिगिराए॥ तुरगउठाइकोपिरघुनायक॥ षैचिसरासनछाडेसायक॥ रावनसिरसरोजवचारी॥ चलेरघुवीर
सिलीमुखधारी॥ दशदशवानभालसवमारे॥ निसरिगएजनुरुधिरपनारे॥ श्रवतरुधिरधायोवलवाना॥ प्रभुपुनिकृतधनु
सरसंधाना॥ तीसतीररघुवीरपठारे॥ भुजनसमेतसीसमहिपारे॥ काटतहीपुनिभएनवीने॥ रामवहोरिभुजासिरछीने॥ पु
निपुनिप्रभुकाटतभुजसीसा॥ अतिकौतुकीकोशलाधीसा॥ रहेछाइनभसिरअरुवाहू॥ मानहुअमितकेतअरुराहू॥ राम
छं॥ जनुराहुकेतुअनेकनभपथश्रवतश्रोनितधावही॥ रघुवीरतीरप्रचंडलागहिभूमिगिरेननपावही॥ एकएकसरसिरनिक ३४
रछेदेनभउडतइमिसोहही॥ जनुकोपिदिनकरकरनिकरजहंतहंसोविधुंतुदजोहही॥ दो॥ जिमिजिमिप्रभुहतुतासुसि
रतिमितिमिहोहिअपार॥ सेवतविषैहृद्धिजिमिनितिनूतनतनमार॥ १४८॥ चौ॥ दशमुखदेषिसिरन्हकेवाढी॥ विसरीम

रनभइरिसिगाढी॥गर्जेउ मूढ महा अभिमानी॥धायो दसौ सरासन तानी॥समरभूमि दसकंधर कोपेउ॥वरषि वान रघुपति रथ तोपे
उ॥दंड एक रथ देषि न परेउ॥जनु निहार महुँ दिनकर दुरेउ॥हाहाकार सुरन्ह जव कीन्हा॥तव प्रभु कोपि कार्मुक लीन्हा॥सर निवा
रि रिपु के सिर काटे॥ते दिसि विदिसि गगन महि पाटे॥काटे सिर नभ मारग धावहि॥जै जै धुनि करि भै उपजावहि॥कह लछिम
न हनुमान कपीसा॥कह रघुवीर कोशलाधीसा॥छं॥कहँ राम कहि सिर निकर धावहि देषि मरकट भजि चले॥संधान धनु
रघुवंशमनि पुनि सरन्ह सिर वेधत भले॥सिरमालिका गहि कालिका कर वृंद वृंदन वहु मिली॥करि रुधिर सरि मज्जन मनहुँ
संग्राम वट पूजन चली॥दो॥पुनि रावन अति कोप करि छाडेसि शक्ति प्रचंड॥सनमुख चली विभीषनहि मनहु काल को दंड
॥९४॥चौ॥आवत देषि शक्ति परधारा॥प्रनतारत हरि विरद सभारा॥तुरत विभीषन पाछे मेला॥सनमुख राम सहेसो सेला
लगि शक्ति मुरुछा कछु भई॥प्रभु कृत षेल सुरन्ह विकलई॥देषि विभीषण प्रभु श्रम पाए॥गहि कर गदा क्रोध होइ धाए॥रे कुभाग
गि सठ मंद कुवुद्धे॥ते सुर नर मुनि नाग विरुद्धे॥सादर शिव कहँ सीस चढाए॥एक एक के कोटिन्ह पाए॥तेहि कारन षल अव
लगि वाचा॥अव तव काल सीस पर नाचा॥राम विमुख सठ चाहसि संपदा॥अस कहि हनेसि माझ उर गदा॥छं॥उर माझ गदा प्रहार
घोर कठोर लागत महि परयो॥दशवदन श्रोनित श्रवत पुनि संभारि धायो रिसि भरयो॥दोउ भिरे अति वल मालजुध्य हि विरुध

लंका॰ एकएतहीहने॥रघुवीरवलदर्पितविभीषण घालि नहिताकहगने॥दो॥उमाविभीषणरावनहिसनमुखचितवनकाउ॥भि
३५ रतसोकालसमानतेश्रीरघुवीरप्रभाउ॥९५॥चौ॥देषाश्रमितविभीषणभारी॥धायोहनेमानगिरिधारी॥रथतुरंगसारथी
निपाता॥हृदैमारुतेहिमारेउलाता॥ठाढरहाअतिकंपितगाता॥गएउविभीषनजहजनत्राता॥पुनिरावनतेहिहतेउप्रचारी
चलेउगगनकपिपूंछिपसारी॥गहेसिपूंछकपिसहितउडाना॥पुनिफिरिभिरेउप्रवलहनुमाना॥लरतअकासजुगल
समजोधा॥हनतएकएकहिकरिक्रोधा॥सोहहिनभछलवलवहुकरही॥कज्जलगिरिसुमेरुजनुलरही॥वुधिवलनि
सिचररपरेनपारा॥तवमारुतसुतप्रभुहिसंभारा॥छं॥संभारिश्रीरघुवीरधीरप्रचारिकपिरावनहन्यो॥महियरतपुनिउठिल
रतदेवन्हजुगलकहिजैजैभन्यो॥हनुमंतसंकटदेषिमरकटभालुक्रोधातुरचले॥रणमत्तरावणसकलसुभटप्रचंडर
भुजवलदलमले॥दो॥रामप्रचारेवीरतवधाएकीसप्रचंड॥कपिदलप्रवलविलोकितेहिकीन्हप्रगटपाषंड॥९६॥चौ॥ राम
अंतरध्यानभएछनएका॥पुनिप्रगटेषलरूपअनेका॥रघुपतिकटकभालुकपिजेते॥जहंतहंप्रगटदशाननतेते॥दे ३५
षाकपिन्हअमितदशसीसा॥भागेभालुविकटभटकीसा॥चलेवलीमुखधरहिनधीरा॥त्राहित्राहिलछिमनरघुवीरा॥
दहुदिसिकोटिन्हधावहिरावन॥गर्जहिघोरकठोरभयावन॥डरेसकलसुरचलेपराई॥जियकेआसतजहुअवभाई॥स

वसुरजीतेएकदशकंधर॥ अवभएवङ्कृनतकङ्कुगिरिकंदर॥ रहेविरंचिसंभुमुनिज्ञानी॥ जिन्हजिनप्रभुमहिमाकछुजा
नी॥ छं॥ जानाप्रतापतेरहेनिर्भयकपिन्हरिपुमानेफुरे॥ चलेविचलिमर्कटभालुसकलक्षपालपहभयआतुरे॥ हनुमं
तअंगदनीलनलअतिवललरनरनवाकुरे॥ मर्दहिदशाननकोटिकोटिन्हकभटभूभटआकुरे॥ दो॥ सुरवानर
देषेविकलसेउकोशलाधीस॥ साजिविसिषनएकसरहतेसकलदशसीस॥ ९४॥ चौ॥ प्रभुछिनमैमायासवकाटी॥
जिमिरविउदैजाहितमफाटी॥ रावनएकदेषिसुरहरषे॥ फिरेसुमनवङ्कुप्रभुपरवरषे॥ भुजउठाइरघुपतिकपिफेरे॥
फिरेएककुएकन्नतवटेरे॥ प्रभुवलपाइभालुकपिधाए॥ तरलतमकिसंजुगहिआए॥ करतप्रसंसासुरजेदेषे॥ भएउएकमै
इन्हकेलेषे॥ सठङ्कुसदातुममोरमराएल॥ कहअसकोपिगगनपथधाएल॥ हाहाकारकरतसुरभागे॥ खलहुजाङ्कुकहमोरेआगे॥ दे
षिविकलसुरअंगदधाए॥ कूदिचरणगाहिभमिगिराए॥ छं॥ गहिभमिपारोलातमारोवालिसुतप्रभुपहगयो॥ संभारिउठिदशक
ंठघोरकठोररवगर्जतभयो॥ कूरिदापचापचढाइदससंधानिसरवङ्कुवर्षही॥ कियेसकलभटघायलभयाकुलदेषिनिजव
लहर्षही॥ दो॥ तवरघुपतिलंकेसकेसीसभुजासरचाप॥ काटेभएवहोरिजिमिकरमभूढकेपाप॥ ९५॥ चौ॥ सिरभुजवा
ढिदेषिरिपुकेरी॥ भालुकपिन्हरिसिभइघनेरी॥ मरतनमूढकाटेभुजसीसा॥ धाएकोपिभालुभटकीसा॥ वालितनैमारुतन

लंका· नलनीला॥ दुविदपनसकपीसवल्लसीला॥ विटपमहीधरकरहिप्रहारा॥ सोइगिरितरुगहिकपिनसोमारा॥ एकनषन्हरि
३६ पुवपुषविदारी॥ भाजिचलहिएकलातनमारी॥ तवनलनीलसिरनचढिगएऊ॥ नषन्हलिलारविदारतभएऊ॥ रुधिरविलोकि
सकोपसुरारी॥ तिन्हहिधरनकहंभुजापसारी॥ गहिनहिजाहिकरनपराफिरहीं॥ जनुजुगमधपकमलवनचरहीं॥ कोपिकूदि
दोउधरेसिवहोरी॥ महिपटकतभाजिभुजामरोरी॥ पुनिसकोपिदसधनुकरलीन्हे॥ सरन्हमारिघायलकपिकीन्हे॥ हनुमदादिमू
र्छितकरिवंदर॥ पाएप्रदोषहरषदशकंधर॥ मूर्छितदेषिसकलकपिवीरा॥ जामवंतधाएमतिधीरा॥ संगभालुभूधरतरुधारी॥
मारनलगेप्रचारिप्रचारी॥ भएउक्रोधरावनवलवाना॥ गहिपदमहिपटकैभटनाना॥ देषिभालुपतिनिजदलघाता॥ कोपि
माझउरमारेउलाता॥ छं॥ उरलातघातप्रचंडलागतविकलरथतेमहिपरा॥ गहेभालुवीसहुकरमनहुकमलनवसेनि
सिमधुकरा॥ मूर्छितविलोकिवहोरिपदहतभालुपतिप्रभुपहगयो॥ निसिजानिसंदनघालितेहितवतुरितलंकालेगयो॥ राम
दो॥ गोमुरुछातवभालुकपिसवआएप्रभुपास॥ सकलनिसाचररावनहिघेरिरहेअतित्रास॥ ९५॥ चौ॥ तेहिनिसिसी ३६
तापहंसोइजाई॥ त्रिजटाकहिसवकथासुनाई॥ सिरभुजवाढिसुनतरिपुकेरी॥ सीताउरभोत्रासघनेरी॥ मुखमलीनउपजी
मनचिंता॥ त्रिजटासनवोलीतवसीता॥ होइहिकहाकहसिकिनमाता॥ केहिविधिमरिहिविस्वदुखदाता॥ रघुपतिसरसिर

कटेनमरई॥ विधिविपरीतचरितसवकरई॥ मोरअभागजिआवतवोही॥ जैंइहौंहरिपदकमलविछोही॥ जोक्रुतकपटकनकम्रग
झूठा॥ अजहुंसोदइवमोहिपररूठा॥ जेइविधिमोहिदुखदुसहसहावा॥ लछिमनकहकटुवचनकहावा॥ रघुपतिविरहसविषसरभारी
तकितकिमोहिवारवहुमारी॥ ऐसेहुदुखजोराखुममप्राना॥ सोइविधिताहिजिआवनआना॥ वहुविधिकरुविलापजानकी॥ क
रिकरिसुरतिक्रुपानिधानकी॥ कहत्रिजटासुनुराजकुमारी॥ उरसरलागतमिरिहिसुरारी॥ तातेप्रभुउरहतेनतेही॥ एहिकेहृ
दयवसतिवैदेही॥ छं॥ एहिकेहृदयवसजानकीजानकीउरममवासहे॥ ममउदरभुवनअनेकलागतवानसवकरनाशहे॥ सु
निवचनहरषविषादमनअतिदेषिपुनित्रिजटैकहा॥ अवमरिहिरिपुएहिभांतिसुंदरितजियजियसंसेमहा॥ दो॥ काटतसिर
होइहिविकलछुटिजाइहितवध्यान॥ तवरावनकेहृदयमहमरिहैरामसुजान॥ ९५॥ चौ॥ असकहिवहुतभांतिसमुझाई॥ पुर
नित्रजटानिजभवनसिधाई॥ रामसुभावसुमिरिवैदेही॥ उपजीविरहव्यथाअतितेही॥ निसिहिससिहिनिंदतवहुभांति॥ जुगसम
भइसिरातनराती॥ करतिविलापमनहिमनभारी॥ रामविरहजानकीदुखारी॥ जवअतिभएउविरहअरुदाहू॥ फरकेउवा
मनयनअरुवाहू॥ सगुणविचारिधरामनधीरा॥ अविमिलिहहिक्रपालरघुवीरा॥ उहाअर्द्धनिसिरावनजागा॥ निजसार
थिसनषीझनलागा॥ सठरनभूमिछडाएहुमोही॥ धृगधृगअधममंदमतितोही॥ तेपदगहिवहुविधिसमुझावा॥ भोरभएरथचढ ए

ढिपुनि धावा ॥ पुनि आगमन दशानन केरा ॥ कपिदल खरभर भए उ घनेरा ॥ जहं तहं भूधर विटप उपारी ॥ धाए कटकटाइ भ
टभारी ॥ छं ॥ धाए जो मरकट विकट भालु कराल कर भूधर धरा ॥ अति कोपि करहि प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा ॥ विच
लाइ दल वलिवंत कीसन्ह घेरि पुनि रावन लियो ॥ चहुं दिस चपेटन मारि नषन्ह विदारि तन व्याकुल कियो ॥ दो ॥ देषि महा
मरकट प्रवल रावन कीन्ह विचार ॥ अंतरहित होइ निमिष महं कृत माया विस्तार ॥ तोमर छंद ॥ जव कीन्ह ते पाषंड ॥ भए
प्रगट जंतु प्रचंड ॥ वेताल भूत पिशाच ॥ कर करे धनु नाराच ॥ जोगिनि गहे करव्याल ॥ एक हाथ मनुज कपाल ॥ करि सद्य
श्रोनित पान ॥ नाचहि करहि वहु गान ॥ धरु मारु वोलहि घोर ॥ रहि श्रेरि धुनी चहु वोर ॥ मुख वाइ धावहि षान ॥ तव लगे कीस
परान ॥ जहं जाहि मरकट भागि ॥ तहं वरत देषहि आगि ॥ भए विकल वानर भालु ॥ पुनि लागु वरषै वालु ॥ जहं तहं थकित करि की
स ॥ गर्जेउ वहुरि दशसीस ॥ लछिमन कपीस समेत ॥ भए सकल वीर अचेत ॥ हा राम हा रघुनाथ ॥ कहि सुभट मीजहि हाथ ॥
एहि विधि सकल वल तोरि ॥ तेंइ कीन्ह कीन्ह कपट वहोरि ॥ प्रगटेवि पुल हनुमान ॥ धाए गहे पाषान ॥ तिन्ह राम घेरे जाइ ॥ द
हु दिस लंवूरुथ वनाई ॥ मारहु धरहु जनि जाए ॥ कटकटहि स्तृछ उठाइ ॥ दहादिस लंगूर विराज ॥ तेहि मध्य कोशलराज ॥ छं ॥
तेहि मध्य कोशलराज सुंदर स्याम तन सोभा लही ॥ जनु इंद्र धनुष अनेक की वर वारि तुंग तमाल ही ॥ प्रभु देषि हरष विषाद उर

सुरवदतिजयजयजयकरी॥ रघुवीरएकहितीरकोपिनिमेषमहमायाहरी॥मायाविगतकपिभालुहरषेविटपगिरिगहिसवफि
रे॥सरनिकरछाडेरामरावणवाहुसिरपुनिमहिगिरे॥श्रीरामरावनसमरचरितअनेककल्पजेगावही॥सतसेषसारदनिगमक
वितेउतदपिपारनपावही॥दो॥कहेतासुगुणगणकछुकजडमतितुलसीदास॥निजपौरुषअनुसारजिमिमसकतेउडहिअकासू
दो॥काटेसिरभुजवारवहुमरतनभटलंकेश॥प्रभुक्रीडतसुरसिधमुनिव्याकुलदेषिकलेश॥१५॥चौ॥काटेसिरपुनिभयेअपारा॥भो
गाकरतजिमिवाढैमारा॥मरैनरिपुश्रमभएउविशेषा॥रामविभीषननतनतवदेषा॥उमाकालमरजाकीईछा॥सोप्रभुकरजनुप्रीतिपरीछा॥
सुनुसरवज्ञचराचरनायक॥प्रनतपालसुरनरसुखदायक॥नाभीकुंडसुधावसवाके॥नाथजियतरावनवलताके॥सुनतविभीषण
वचनकृपाला॥हरषिगहेकरवाणकराला॥असगुणहोनलगेतवनाना॥रोवहिवहुसृगालखरस्वाना॥वोलहिखगजगआर
तहेतू॥प्रगटभएनभजहंतहंकेतू॥दहदिसिदाहहोनअतिलागा॥भएउपर्वविनुरविउपरागा॥मदोदरीउरकंपितभारी॥प्रतिमाश्र
वैनयनसगवारी॥छं॥प्रतिमाश्रवहिपविपातनभअतिवातवहुडोलतमही॥वरषहिवलाहककरुधिरकचरजअसुभअतिसककोक
ही॥उतपातअधिकविलोकिसुरमुनिविकलवोलहीजयजए॥सुरसभयजानिकृपालरघुपतिचापसरजोरतभए॥दो॥आकर्षेउ
धनुकानलगिछाडेसरएकतीस॥रघुनायकसायकचलेमानहुंकालफनीस॥१५८॥चौ॥सायकएकनाभिसरसोषा॥अ

लंका परलगेसिरभुजकरिरोषा॥लैसिरवाहुंचलेनाराचा॥सिरभुजहीनरुंडमहि नाचा॥धरणीधसैधरधावप्रचंडा॥तवप्रभु
३८ सरहतिकृतजुगखंडा॥गरजेउमरतघोररवभारी॥कहांरामरनहतोप्रचारी॥डोलीभूमिगिरतदसकंधर॥छुभितसिंधसरिता
डिग्गभूधर॥परेउवीरदोउखंडवढाई॥चापिभालुमरकटसमुदाइ॥मंदोदरीआगेंभुजसीसा॥धरिसरचलेजहांजगदीसा
प्रविसेपुनिनिषंगमहेंआई॥देषिसुरन्हदुंदुभीवजाई॥तासुतेजसमानप्रभुआनन॥हरषेदेषिसंभुचतुरानन॥जयजयधुनि
पूरीब्रह्मंडा॥जयरघुवीरप्रवलभुजदंडा॥वरषहिसुमनदेवमुनिवृंदा॥जयकृपालजैजयतिमुकुंदा॥छं॥जैयकृपाकंदमकु
दद्वंदहरणसुरनरसुखप्रदप्रभो॥खलदलविदारणपरमकारणकारुणीकसदाविभो॥सुरसिद्धिमुनिगंधर्वहरषेवाजुदुंदुभी
गहगही॥संग्रामअंगनरामअंगअनंगवहुसोभालही॥सिरजटामुकुटप्रसूनविचविच अतिमनोहरराजही॥जनुनीलगिरिप
रतडितपटलसमेतउडगनभ्राजही॥भुजदंडसरकोदंडफेरतरुचिरकनतनअतिवने॥जनुरायमुनितमालपरवैठीविपुलसु राम
खआसने॥दो॥कृपादृष्टिकरिवृष्टिप्रभुअभयकिएसुरवृंद॥हरषेवानरभालुकपिजयसुखधाममुकुंद॥१५९॥चौ॥पति ३८
सिरदेषतजवहिमंदोदरी॥मूर्छितविकलधरणीषसिपरी॥जुवतीवृंदरोवतउठिधाई॥तेहिउठाइरावणपहिल्याई॥पतिगतिदेषि
तेकरहिपुकारा॥छूटेकेसनदेहसंभारा॥उरताडनाकरहिंविधिनाना॥रोवहिकरहिप्रतापवषाना॥तवबलनाथडोलनितिध

रणी॥तेजहीनपावकससितरणी॥सेसकमठसहिसकहिनभारा॥सोतनुभूमिपरेउभरिछारा॥वरुणकुवेरसुरेससभीता।र
णसनमुखकरिकाहुनजीता॥भुजवलजीतेहुकालजमसाई॥आजुपरेहुअनाथकीनाई॥जगतविदिततुम्हारप्रभुताई॥सुत
परिजनवलवरनिनजाई॥रामविमुखअसहालतुम्हारा॥रहानकुलकोउरोवणहारा॥तववसिविधिपरिपंचसवनाथा॥सव
दिसिपतितववनावहिमाथा॥अवतवसिरभुजजंवुकषाही॥रामविमुखयहअनुचितनाही॥कालविवसपतिकहानमाना॥अ
गजगनाथमनुजकरिजाना॥छं॥जान्यामनुजकरिदनुजकाननदहनअनलहरीस्वयं॥जेहिनमतशिवव्रह्मादिसुरपति
भजहुनहिकरुणामयं॥आजन्मतेपरद्रोहरतपापोघमयतवतनुअयं॥तुमहिदिवोनिजधामरामनमामिव्रह्मनिरामयं॥दो
अहहनाथरघुनाथसमकृपासिंधुनहिआन॥मुनिदुर्लभजोपरमगतितोहिदीन्हभगवान॥१६०॥चौ॥मदोदरीवचनसु
निकाना॥सुरमुनिसिद्धसवनसुखमाना॥अजमहेसनारदसनकादी॥जेमुनिनायकआतमवादी॥भरिलोचनरघुप
तिहिनिहारी॥प्रेममगनसवभएसुखारी॥रोदनकरतविलोकिसवनारी॥गएउविभीषनमनदुखभारी॥वंधदसादेषत
दुखकीन्हा॥रामअनुजकहआयसुदीन्हा॥लछिमनजाइताहिसमुझाएउ॥वहुरिविभीषनप्रभुपहिआएउ॥कृपादृष्टिप्रभुता
हिविलोका॥करहुकृपासवपरिहरिसोका॥कीन्हिकृयाप्रभुआयसुमानी॥विधिवतदेसकालगतिजानी॥दो॥मैतनयादिकना

रिसवदेहितिलांजुलिताहि॥ भवनगए रघुवीरगुणगणवरनतमनमाहि॥१६१॥ चौ॥ आइविभीषण पुनिसिरनाए॥ कृपासिंधतव
अनुजवुलाए॥ तुमकपीस अंगदनल नीला॥ जामवंतमारुतनयसीला॥ सवमिलिजाहु विभीषणसाथा॥ सारेहुतिलककहेउर
घुनाथा॥ पितावचनमैनगरनजाउं॥ आपुसरिसकपि अनुजपठाउं॥ तुरितचलेकपिसुनिप्रभुवचना॥ कीन्हीजाइतिलककैरच
ना॥ सादरसिंहासनवैठारी॥ तिलककीन्ह अस्तुति अनुसारी॥ जोरिपानिसवहीसिरनाए॥ सहितविभीषनप्रभुपहि आए॥ तवरघु
वीरवोलिकपिलीन्हे॥ कहिप्रियवचनसुखीसवकीन्हे॥ छं॥ कियेसुखीकहिवाणीसुधासमवलतुम्हारेरिपुहए॥ पाएविभीषण
राजतिहुपुरजसतुम्हारेनितिनए॥ मोहिसहितसुभकीरतितुम्हारीपरमप्रीतिजोगाइहै॥ संसारसिंधअपारपारप्रयासविनुन
तरिजाइहै॥ दो॥ सुनतरामकेवचनमृदुनहिअघाहिकपिपुंज॥ वारहिवारविलोकिमुखगहहिसकलपदकंज॥१६२॥ चौ॥ पुनि
प्रभुवोलिलिएहनुमाना॥ लंकाजाहुकहेउभगवाना॥ समाचारजानकीहिसुनावहु॥ तासुकुशललेतुमचलिआवहु॥ त
वहनिवंतनगरमहआएउ॥ सुनिनिस्चरीनिसाचरधाएउ॥ पूजावहुप्रकारतिन्हकीन्हा॥ जनकसुतादेषाइतिन्हदीन्हा॥ दूरिहि
तेप्रनामकपिकीन्हा॥ रघुपतिदूतजानकीचीन्हा॥ कहहुतातप्रभुकृपानिकेता॥ कुशलअनुजकपिसेनसमेता॥ सवविधि
कुशलकोशलाधीसा॥ मातुसमरजीतादशसीसा॥ अविचलराजविभीषणपावा॥ सुनिकपिवचनहरषउरछावा॥ छं॥ अ

तिहरषमनतनपुलकलोचनसजलकहपुनिपुनिरमा॥कादेउंतोहित्रिलोकमहंकपिकिमपिनहिवानीसमा॥सुनुमा
तुमैपायोअखिलजगराजआजुनसंसयं॥रणजीतिरिपुदलवंधजुतपस्यामिरामनमामियं॥दो॥सुनुसुतसदगुणसकल
तवहृदयवसङ्कहनवंत॥सानकूलरघुवंशमनिरहङ्कसमेतअनंत॥१०३॥चौ॥अवसोईजतनकरङ्कतुमताता॥देषियनै
नस्याममृदुगाता॥तवहनुमानरामपहजाई॥जनकसुताकयकुशलसुनाई॥सुनिवाणीयतंगकुलभूषण॥वोलिलिएजुवरा
जविभीषण॥मारुतसुतकेसंगसिधावङ्क॥सादरजनकसुतहिलैआवङ्क॥तुरितहिसकलगएजहंसीता॥सेवहिसवनिस्चरीवि
नीता॥वेगिविभीषणतिन्हहिसिषा॥वा॥सादरतिन्हसीतहिअन्हवावा॥दिव्यवसनभूषनपहराए॥सिविकारुचिरसाजिपुनिल्याए
तापरहरषिचढीवैदेही॥सुमिरिरामसुखधामसनेही॥वेतपानिरछकचङ्कपासा॥चलेसकलमणपरमङ्कलासा॥देषनभालुकी
ससवआए॥रछककोपिनिवारनधाए॥कहरघुवीरकहाममानङ्क॥सीतहिसषापयादेआनङ्क॥देषहिकपिजननीकीनाई
विहसिकहारघुवीरगुंसाई॥सुनिप्रभुवचनभालुकपिहरषे॥नभतेसुरनसुमनवङ्कवरषे॥सीताप्रथमअनलमहराषी॥प्रगटकी
न्हचहअंतरसाषी॥दो॥तेहिकारणकरुणायतनकहेकछुकदुर्वाद॥सुनतजातुधानीसकललागेकरणविषाद॥१०४॥चौ॥
प्रभुकेवचनसीसधरिसीता॥वोलीमनक्रमवचनपुनीता॥लछिमनहोङ्कधर्मकैनेगी॥पावकप्रगटकरङ्कतुमवेगी॥सुनिल

लं॰का॰ छिमनसीताकेवाणी॥ विनयविवेकधर्मनुतिसानी॥ लोचनसजलजोरिकरदोऊ॥ प्रभुसनमुखकहिसकतनकोऊ॥ देषि
८० रामरुषलछिमनधाए॥ प्रगटकृसानुकाठवहुल्याए॥ प्रवलअनलविलोकिवैदेही॥ हृदयहरषकछुभयनहिंतेही॥ जौमनक्र
मवचममउरमांही॥ तजिरघुवीरआनगतिनाही॥ जौकृसानुसवकेगतिजाना॥ मोकहहोहुश्रीखंडसमाना॥ छं॥ श्रीखं
डसमपावकप्रवेशाकियोसुमिरिप्रभुमैथली॥ जैकोशलेशमहेशवंदितचरणजोअतिनिर्मली॥ प्रतिविंबुअरुलोकिककलं
कप्रचंडपावकमहंजरे॥ प्रभुचरितकाहुनलषेनभसुरसिद्धमुनिदेषहिषरे॥ तवअनलभूसुररूपकरगहिसत्यश्रीश्रुतिविदि
तजो॥ जिमिछीरसागरइंदिरारामहिसमर्पीआनिसो॥ सोइरामवामविभागराजितरुचिरअतिसोभाभली॥ नवनीलनी
रजनिकटमानहुकनकपंकजकीकली॥ दो॥ हरषिसुमनवरषहिविवुधवाजहिगगननिसान॥ गावहिंकिन्नरअपसरा॥१
नाचहिचढीविमान॥ दो॥ श्रीजानकीसमेतप्रभुसोभाअमितअपार॥ देषतहरषेभालुकपिजैरघुपतिसुषसार॥१९५॥ चौ॥ राम
तवरघुपतिअनुसासनपाइ॥ मातलिचलेउप्रभुहिसिरनाई॥ आएदेवजोसदास्वारथी॥ वचनकहहिसोजनुपरमारथी॥१ ८०
दीनवंधदयालरघुराया॥ देवकीन्हदेवन्हपरदाया॥ विश्वद्रोहरतयषलकामी॥ निजअघगएउकुमारगगामी॥ तुम्हसमरव
जव्रह्मअविनासी॥ सदाएकरससहजउदासी॥ अकुलअगुणअजअनघअनामय॥ अजितअमोघसत्यकरुणामय॥ मी

नकमठसूकरनरहरी ।। वावनपरसरामवपुधरी ।। जवजवनाथसुरन्हदुखपावा ।। नानातनुधरितुमहिनसावा ।। रावणपापमू
लसुरद्रोही ।। काममलोभमदरतअतिकोही ।। सोकृपालतवधामसिधावा ।। यहहमरेमनविसमैआवा ।। हमदेवतापरमअधिकारी ।। स्वारथरतत
वभक्तिविसारी ।। भवप्रभावसंततहमपरे ।। अवप्रभुपाहिसरणअनुसरे ।। दो ।। करविनतीसुरसिद्धसवरहेजहंतहंकरजोरि ।। अतिसय
प्रेमसरोजभवअस्तुतिकरतवहोरि ।।।६६।। अस्तुति ।। जयरामसदासुखधामहरे ।। रघुनायकसायकचापधरे ।। भवदारुणवार
णसिंहप्रभो ।। गुणसागरनागरनाथविभो ।। तनकामअनेकअनूपछवी ।। गुणगावतसिद्धमुनींद्रकवी ।। जसपावनरावनना
गमहा ।। खगनाथयथाकरिकोपगहा ।। जनरंजनभंजनसोकमयं ।। गतक्रोधसदाप्रभुवोधमयं ।। अवतारउदारअपारगुणं ।। म
हिभारविभंजनज्ञानधनं ।। अजव्यापकमेकमनादिसदा ।। करुणाकररामनमामिमुदा ।। रघुवंशविभूषणदूषणहा ।। कृतभू
पविभीषणदीनरहा ।। गुणज्ञाननिधानअमानअयं ।। नितिरामनमामिविभंविरयं ।। भुदंडप्रचंडप्रतापवलं ।। खलवृंदविकंदमहा
कुशलं ।। विनुकारणदीनदयालहितं ।। छविधामनमामिरमासहितं ।। भवतारणकारणकारपरे ।। मनसंभवदारुनदोषह
रे ।। सरचापमनोहरत्रोणधरं ।। जलजारुणलोचनभूपवरं ।। सुखमंदिरसुंदरश्रीरमणं ।। मदमारमहाममतासमनं ।। अ
नवद्यअखंडअगोचरगो ।। सवरूपसदासवहोएनसो ।। इतिवेदवदंतिनदंतिकथा ।। रविआतपभिन्ननभिन्नयथा ।। कृतक

लंका० ४१ कृत्यविभोसववानरए॥निरषंततवाननसादरए॥धृगजीवनदेवसरीरहरे॥तवभक्तिविनाभवभूलिपरे॥अवदीनदयाल
कृपाकरिए॥दुखसोसुखमानिसुखीकरिए॥मतिमोरविभेदकरिअैहरिजै॥सवकारनधारनमोरहियै॥खलखंडनमंडन
रामछमा॥पदपंकजसेवतशंभुउमा॥नृपनायकदेवकदानमिदं॥चरनांवुजप्रेमसदाशुभदं॥दो॥विनयकीन्हवहुभांति
सोप्रेमपुलकिअतिगात॥वदनविलोकतरामकेलोचननाहिअघात॥६६॥चौ॥तेहिओसरदशरथतहंआए॥तनय
विलोकिनयनजलछाए॥सहितअनुजप्रनामप्रभुकीन्हा॥आसीर्वादपितातवदीन्हा॥तातसकलतवपुन्यप्रभाऊ॥
जीतेंउअजैनिशाचरराऊ॥सुनिसुतवचप्रीतिअतिवाढी॥सजलनयनरोमावलिठाढी॥रघुपतिप्रथमप्रेमअनुमाना॥चि
तैपितैतेहिदीन्हेहृढज्ञाना॥तातेउमामछ्छनहिपावा॥दशरथभेदभक्तिमनलावा॥सगुणउपासिकमोछ्छनलेही॥तिन्हक
हरामभक्तिनिजदेही॥वारवारकरिप्रभुहिप्रनामा॥दशरथहरषिचलेसुरधामा॥दो॥अनुजजानकीसहितप्रभुकुशलको राम ४१
शलाधीस॥छविविलोकिमनहरषअतिअस्तुतिकरसुरईश॥६७॥तोमरछंद॥जैरामसोभाधाम॥दायकप्रनतविश्राम॥धृ
तत्रोनवरसरचाप॥भुजदंडप्रवलप्रताप॥जैदूषणारिषरारि॥मर्द्दीनिशाचरझारि॥यहदुष्टमारेनाथ॥भैदेवसकलसनाथ॥जै
हरनधरनीभार॥महिमाउदारअपार॥जैरावनारिकृपाल॥कियेजातुधानविहाल॥लंकेसअतिवलगर्व॥कियेवस्यसुरगंधर्व

मुनि सिद्धि सुर नर नाग ॥ हठि पंथ सव के लाग ॥ परद्रोहरत अति दुष्ट ॥ पायो सो फल पापिष्ट ॥ अव सुनहुं दीन दयाल ॥ राजीव
नयन विशाल ॥ मोहि रहा अति अभिमान ॥ नहि कोउ हमहि समान ॥ अव देषि प्रभु पद कंज ॥ गत मान प्रद दुख पुंज ॥ कोइ ब्रह्म निर्गु
न ध्याव ॥ अव्यक्त जेहि श्रुति गाव ॥ मोहि भाव कोशल भूप ॥ श्रीराम सगुण सरूप ॥ वैदेहि अनुज समेत ॥ मम हृदय करहु निकेत ॥ मो
हि जानिये निज दास ॥ दे भक्ति रमानिवास ॥ छं ॥ दे भक्ति रमानिवास त्रास हरन सरन सुखदायकं ॥ सुखधाम राम नमामि का
म अनेक छवि रघुनायकं ॥ सुर वृंद रंजन द्वंद भंजन मनुजतन अतुलित वलं ॥ ब्रह्मादि शंकर सेव्य राम नमामि करुणा कोमलं ॥
दो ॥ अव करि ये कृपा विलोकि मोहि आयसु देहु कृपाल ॥ कहा कहो एय वचन सुनि वोले दीन दयाल ॥ १६८ ॥ चौ ॥ सुनु सुरपति क
पि भालु हमारे ॥ परे भूमि निसिचर के मारे ॥ मम हित लागि तजे इन्ह प्राना ॥ सकल जिआउ सुरेस सुजाना ॥ प्रभु सकत्रिभुवन मा
रि जिआई ॥ केवल शक्रहि दीन्ह वडाई ॥ सुधा वरषि कपि भालु जियाए ॥ हरषि उठे सव प्रभु पहि आए ॥ सुधा वृष्टि भइ दुहु दल ऊपर
जिए भालु कपि नहि रजनीचर ॥ रामाकार भए तिन के मन ॥ गए ब्रह्म पद तजि सरीर तन ॥ सुर अंसिक सव कपि अरु रीछा ॥ जिए स
कल रघुपति के इछा ॥ राम सरिस को दीन हितकारी ॥ कीन्हेउ मुक्ति निसाचर भारी ॥ खल मल धाम काम रत रावण ॥ गति पाइ सो मु
निवर भावन ॥ दो ॥ सुमन वरषि सव सुर चले चढि चढि रुचिर विमान ॥ देषि सुऔसर राम पहि आए शंभु सुजान ॥ १६९ ॥ चौ ॥

लंका ममभीररछयरघुनायक॥धृतकरचापरुचिरवरसायक॥मोहमहाघनपटलप्रभंजन॥संसैविपिनिअनलसुररंजन॥
४२ सगुनअगुनसुरमंदिरसुंदर॥भ्रमतमप्रवलप्रतापदिवाकर॥कामक्रोधमदगजपंचानन॥वसहुनिरंतरजनमनकानन॥विष(
यमनोरथकंजपुंजवन॥प्रवलतुषारउदारपारमन॥भववारिदमंदरपरमंदर॥वोरैतारैसंस्त्रितदुस्तर॥स्यामगातराजीववि
लोचन॥दीनवंधप्रनतारतिमोचन॥अनुजजानकीसहितनिरंतर॥वसहुरामन्त्रपममउरअंतर॥मुनिरंजनमहिमंडल
मंडन॥तुलसीदासप्रभुत्रासविहंडन॥दो॥नाथजवहिकोशलपुरहोइहितिलकतुम्हार॥तवहमआश्रविसुनहुप्रभुदेषनचरितअ
पार॥१७०॥चौ॥करविनतीजवसंभुसिधाए॥तवप्रभुनिकटविभीषणआए॥नाएचरणसिरकहम्रदुवानी॥विनैसुनहुप्रभुसं
रांगपानी॥सकुलसदलप्रभुरावनमारा॥पावनजसत्रभुवनविस्तारा॥दीनमलीनहीनमतिजाती॥मोपरक्रपाकीन्हवहुभांती
अवजनग्रहपुनीतप्रभुकीजै॥मज्जनकरियसमरश्रमछीजै॥देसकोसमंदिरसंपतिसव॥देहुक्रपालकपिन्कहहुमअव॥ राम
सवविधिनाथमोहिअपनाई॥पुनिमोहिसहितअवधपुरजाइ॥सुनतवचनप्रभुदीनदयाला॥सजलभएदोउनैनविसाला॥दो ४२
तोरकोसग्रहमोरसवसत्यवचनसुनुतात॥दसाभरतकेसमुझिमोहिनिमिषकल्पसमजात॥दो॥तापसवेषसरीरक्रसजपत
निरंतरमोह॥देषोवेगिसोजतनकरुसरवानिहोरोतोहि॥दो॥जेजैहोवीतेअवधिजियतनपावोवीर॥प्रीतिभरतकेसमुझिमो

हिपुनिपुनिपुलकसरीर॥दो॥करहुकलपभरिराजतुममोपहिसुमिरहुमनमाहि॥पुनिममधामसिधाइअहुजहासंतसबजाहि

॥११९॥चौ॥सुनतविभीषनबचनरामके॥हरषिगहेपदकृपाधामके॥बांदरभालुसकलहरषाने॥गहिपदप्रभुगुनविमलबषाने॥बहु

रिविभीषणभवनसिधाए॥मनिगनवसनविमानभराए॥लेपकप्रभुआगेराषा॥हसिकरिकृपासिंधअसभाषा॥चढिविमानतुमसखा

विभीषण॥गगनजाइबरषहुपटभूषन॥नभपरजाइविभीषनजवही॥बरषिदिएमनिअंबरतवही॥जोजेहिमनभावैसोलेही॥मनि

मुखमेलिडारितबदेही॥हसेरामसीयअनुजसमेता॥परमकौतुकीकृपानिकेता॥दो॥ध्याननआवहिजासुमुनिनेतिनेतिकहवेद

कृपासिंधसोइकपिनसनकरतअनेकविभेद॥दो॥उमजोगजपदानतपनानाव्रतमषनेम॥रामकृपानहिताहिकरजसनी

केवलप्रेम॥१२०॥चौ॥भालुकपिन्हपटभूषनपाए॥पहिरिपहिरिरघुपतिपहिआए॥नानावरनदेषिप्रभुकीसा॥पुनिपुनिकहत

कोशलाधीसा॥चितैसबनपरकीन्हीदाया॥बोलेमधुरबचनरघुराया॥तुम्हरेवलमैरावनमारा॥तिलकविभीषनकहअनुसारा

निजनिजगृहअबतुमसबजाहू॥सुमिरेहुमोहिडरेहुजनिकाहू॥बचनसुनतप्रेमाकुलवानर॥जोरिपानिवोलेसबसादर

प्रभुजोकहहुतुमहिसोसोहा॥हमरेहोतवचनसुनिमोहा॥दीनजानिकपिकिएसनाथा॥तुम्हत्रैलोकईसरघुनाथा॥सुनिप्र

भुवचनलाजहममरही॥मसककवहुंषगपतिहितकरही॥देषिरामरुषवानररीछा॥प्रेममगननहिगृहकैइछा॥दो॥प्रभुप्रेरितक

लंका० पिभालुसव राम नृपउर राषि ॥ हरषविषाद समेत तन वचले विनै व क्कु भाषि ॥१७३॥ दो॥ जामवंत कपिराज नल अंगद ओ हनुमान ॥ सहि
४२ त विभीषन जे अपर जूथप कपि वलवान ॥१७४॥ दो॥ कहि न सकहि कछु प्रेम वस भरि भरि लोचन वारि ॥ सनमुख चितवहि राम
तन नयन निमेष निवारि ॥१७५॥ चौ॥ अतिसै प्रीति देषि रघुराई ॥ लीन्हे सकल विमान चढाई ॥ मन मह विप्र चरन सिर नावा ॥ उ
तर दिसा विमान चलावा ॥ चला विमान कोलाहल होइ ॥ जय रघुवीर कहै सव कोई ॥ सिंहासन अति वोघ मनोहर ॥ सिय समेत
त प्रभु वैठे ता पर ॥ राजत राम सहित भामिनि ॥ मेरु स्रिंग जिमि घन दामिनि ॥ रुचिर विमान चला अति आतुर ॥ कीन्हे सुमन वृष्टि ह
रषे सुर ॥ परम सुखद वह त्रिविधि वयारी ॥ सागर सरि सर निर्मल वारी ॥ सगुण होहि सुंदर चहु पासा ॥ मन प्रसन्न निर्मल नभ आ ॥ कहे सा
रघुवीर देषु रण सीता ॥ लछिमन इहा हतेइ इंद्रजीता ॥ हनुमान अंगद के मारे ॥ रन मह परे निशाचर भारे ॥ कुंभकरण रावण दो उ भा
ई ॥ इहा हते सुर मुनि दुखदाई ॥ दो॥ यह देषु सुंदर सेतु जहं थापेउं शिव कोधाम ॥ सीता सहित कृपायतन शंभुहि कीन्ह प्रणाम ॥१७६ राम
दो॥ प्रभु आगमन सिंधु सुनि विनय कीन्ह कर जोरि ॥ मोहि जानि निज दास करि वंधन दीजै छोरि ॥१७७॥ दो॥ मानो विनय समु ४२
द्र की अनुज सहित श्रीराम सिंधु वंध छोरे तवहि आपु चले निज धाम ॥१७८॥ दो॥ जहं जहं कृपासिंधु वन कीन्ह वास विश्रा
म सकल देषायउ जानकिहि कहेउ सवन के नाम ॥१७९॥ चौ॥ सपदि विमान तहा चलि आवा ॥ दंडकवन जहं परम सोहावा ॥ कुं

भाजादि मुनि नायक नाना ॥ गये राम सब के अस्थाना ॥ सकल मुनिन सन पाइ असीसा ॥ चित्रकूट आए जगदीसा ॥ तहं करि मुनिन्ह केर संतोषा ॥ चला बिमान तहां ते चोषा ॥ बहुरि राम जानकिहि देषाई ॥ यमुना कलि मल हरणि सुहाई ॥ पुनि देषि सुरसरी पुनीता ॥ राम कहा प्रणाम करु सीता ॥ तीरथपति पुनि देषु प्रयागा ॥ निरषत जन्म कोटि अघ भागा ॥ देषी परम पुनीत तव वेनी ॥ हरणि सोक परलोक निसेनी ॥ पुनि दिषु अवधपुरी अति पावन ॥ त्रिविधि ताप भव रोग नसावनि ॥ दो० ॥ तव रघुनायक सिय सहित अवधहि कीन्ह प्रनाम ॥ सजल विलोचन पुलक तन पुनि पुनि हरषत राम ॥ ११० ॥ दो० ॥ बहुरि त्रिवेणी आइ प्रभु हरषित मज्जन कीन्ह ॥ कपिन सहित विनोद बहु दान विविध विधि दीन्ह ॥ १११ ॥ चौ० ॥ प्रभु हनुमहि कहा बुझाई ॥ धरि वटरूप अवधिपुर जाई ॥ भरथहि कुशल हमारि सुनावहु ॥ समाचार ले तुम चलि आवहु ॥ तुरित पवन सुत गवनत भएउ ॥ तव प्रभु भारद्वाज पहि गएउ ॥ नाना विधि प्रभु पूजा कीन्हा ॥ अस्तुति करि मुनि आयसु दीन्हा ॥ मुनि पद वंदि जुगल कर जोरी ॥ चढि विमान प्रभु चले वहोरी ॥ इहां निषाद सुना प्रभु आए ॥ नाव नाव करि लोग बुलाए ॥ सुरसरि नाघि जान जव आवा ॥ उतरे तट प्रभु आयसु पावा ॥ तव सीता पूजी सुरसरी ॥ बहु प्रकार तव चरनन्ह परी ॥ दीन्ह असीस हरषि मन गंगा ॥ सीता तव अहिवात अभंगा ॥ सुनत गुहा धायो प्रेमाकुल ॥ आयउ निकट परम सुख संकुल ॥ प्रभुहि विलोकि सहित वैदेही ॥ परेउ अवनि तन सुधि नहि तेही ॥ परम प्रीति विलोकि रघुराई ॥ हरषि उठाइ लिए उर लाई ॥ छं० ॥ लिए उठाइ हृदय

लगाइकृपानिधानरायरमापती॥ वैठारिपरमसप्रीतिवूझिकुशलसोकछमापती॥ अवकुशलपदपंकजविलोकिविरंचिसंकर

लं.का. सेव्यते॥ सुखधामसरणकामरामनमामिस्वामिनमामिते॥ सवभातिअधमनिषादसोहरिभरतज्योउरलाइऔ॥ मतिमंदतुलसीदा

९४ ससोप्रभुमोहवसविसराइऔ॥ यहरामरावणसमरपावनरामपदरतिप्रदसदा॥ व्रह्मादिआदिप्रसंसिसुरसवसिद्धमुनिगावं

हिमुदा॥ दो॥ समरविजयरघुपतिचरित्रसुनहिजोसदासुजान॥ विजयविवेकविभूतितिनितितिन्हहिदेहिभगवान॥१८२॥ दो॥ यह

कलिकालमलायतनमनकरिदेखुविचारि॥ श्रीरघुनायकनामतजिनहिकछुआनअधार॥१८३॥ इतिश्रीरामचरित्रेमानसेसक

लकलिकलुषविध्वंसनेविमलविज्ञानसंपादिनोनामषष्ठमसोपानः॥६॥ ॥लंकाकांडसमाप्त॥ ॥श्रीराम॥ ॥

संवत१८३५आश्विनसुक्ल२लिं० रामरत्नद्विजेनहंसदासवैस्मपठनार्थं॥ ॥श्रीराम॥ ॥श्रीराम॥ ॥श्रीराम राम ४